महाकवि अकबर

और

उनका उर्दू काव्य

लेखक

स्व० उमरावसिंह कारुणिक बी० ए०

सम्पादक

चौधरी शिवनाथसिंह शाण्डिल्य

ज्ञान-प्रकाश-मन्दिर, माछरा ज़िला-मेरठ

प्रकाशक—गोकुलदास धूत
नवयुग साहित्य-सदन इन्दौर
ने ज्ञान-प्रकाश-मन्दिर
के लिए प्रकाशित की।

चतुर्थ संस्करण
मूल्य ढाई रुपया
सन् १९४६ ई०

मुद्रक
अमरचंद
राजहंस प्रेस,
दिल्ली।

दो शब्द

प्रयाग निवासी 'अकबर', सैयद अकबर हुसैन, उर्दू कविता की जान थे। आप गम्भीर-से-गम्भीर बात को भी बहुत ही थोड़े शब्दों में बड़ी खूबसूरती के साथ कह देते थे। आपके शेरों के विषय में भी हिन्दी के महाकवि बिहारी को दोहों के समान यह कहा जा सकता है:—

'देखन में छोटे लगें घाव करें गम्भीर'

उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान् महाकवि हाली कह गये थे—"शाइरी मर गई ज़िन्दा न अब होगी यारो," किन्तु अकबर ने हाली साहब के इस कथन को असत्य प्रमाणित कर दिया था। उर्दू शायरी में एक नया ही जीवन फूंक दिया था। गुले-बुलबुल तथा ज़ुल्फ़े इश्क़ को बीसवीं-सदी की 'अपटूडेट' (Up-to-date) पौशाक पहिना दी थी।

उर्दू साहित्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले इस महाकवि से हिन्दी पाठकों का परिचय कराने के लिये ही यह पुस्तक लिखी गई है। अकबर की कविताओं का संग्रह उर्दू में 'कुल्लियाते-अकबर इलाहाबादी' के नाम से तीन भागों में प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक में तीनों भागों में से चुनकर भिन्न भिन्न विषयों से सम्बन्ध रखने वाले शेर दिये गये हैं। इन शेरों को देखने से पाठकों को 'अकबर' के कल्पना-चातुर्य का बहुत कुछ ज्ञान हो जायगा। किन्तु 'अकबर' का पूरा महत्त्व तो उनके सारे शेरों को देखने से ही मालूम हो सकता है, क्योंकि उनका प्रत्येक शेर एक नई अदा लिये हुए है। लेखक को इस संग्रह के लिये शेर चुनने में बड़ी कठिनता हुई है; क्योंकि प्रत्येक शेर को देखकर

दिले-शैदा मचलता था कि हम तो ये ही लेवेंगे।

अकबर का कहने का ढंग बहुत साफ़ था। उनके कलाम में ऐसे

शब्द बहुत कम आये हैं, जिन को हिन्दी पाठक न समझ सकें। इसके अतिरिक्त इस संग्रह में ऐसे शेर जान बूझ कर नहीं लिये हैं जिन में विशेष कठिन शब्दों का प्रयोग हुआ है। फिर भी पाठकों की सुगमता के लिये प्रत्येक शब्द के नीचे कठिन शब्दों का अर्थ दे दिया गया है।

यदि पाठकों ने इस पुस्तक को अपनाया तो शीघ्र ही हिन्दी प्रेमियों की सेवा में अकबर का सचित्र तथा विस्तृत जीवन-चरित्र उपस्थित करने का विचार है।

लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध प्रेमी चौधरी शिवनाथसिंह जी शाण्डिल्य का बहुत ही कृतज्ञ है, जिनकी उदारता के कारण इस पुस्तक को हिन्दी पाठकों के सन्मुख उपस्थित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मेरठ
१-१-२२

उमरावसिंह कारुणिक,
सम्पादक—'ललिता'।

भूमिका

लेखक

देश भक्त राजा महेन्द्रप्रताप जी

अकबर उर्दू के महाकवि थे। वह हिन्दुस्तान के रत्न थे। उनकी कविता मोहक और निराली है। उनके शब्दों में विशेष आकर्षण-शक्ति है। उनकी कविता का अधिक प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। जो उनकी कविता को पढ़ेंगे वे आप ही उनके कलाम के कमाल पर आशिक़ हो जायँगे। मैं यहां अधिक लम्बी चौड़ी भूमिका न बांध कर प्रिय पाठकों से 'अकबर' की काव्य-वाटिका में भ्रमण करने के लिये आग्रह करता हूं। आइये हम और आप बुलबुल बनें और कविता के पुष्पों पर जान दें और जान दे दे कर आनन्दित हों।

पर हां, एक बात कहे बिना नहीं रह सकता। सर्व साधारण के विचारानुसार अकबर मुसलमान थे और इसलिए उनकी कविता को हिन्दी में छाप कर विशेषतः हिन्दू भाइयों के कर कमलों में भेंट करना न केवल सुन्दर, मोहिनी कविता की क़द्र करना है; वरन् देश की जटिल राजनैतिक समस्या को सुलझाने में भी योग देना है। इसलिये हम सभी को, जो तैंतीस करोड़ हिन्दुस्तानियों का भला चाहते हैं, इस कार्य के लिये इस पुस्तक के प्रकाशक श्रीमान् चौधरी शिवनाथसिंह जी शांडिल्य का अनुगृहीत होना चाहिये कि उन्होंने इस पुस्तक को छपाने का यत्न किया।

लगे हाथों इस विषय पर मैं यह कह भी देना चाहता हूं कि मेरे विचारानुसर एक पूर्ण कवि अथवा एक ज्ञानी पुरुष साधारण जाति या धर्म इत्यादि के बन्धनों से परे होता है। तब ही तो कवि लोग बहुत

सी ऐसी बातें कह जाते हैं जो साधारण विचारों के विरुद्ध होती हैं। वे इस प्रकार—किसी हद तक डरते-डरते—सर्व साधारण के विचारों को उदार कर देते हैं—उनकी आँखें खोल देते हैं। इसका उदाहरण 'ग़ालिब' का यह शेर हैः—

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीकत लेकिन
दिल के ख़ुश रखने को 'ग़ालिब' ये ख़याल अच्छा है ॥

हम अच्छे कवियों के दिलदादा हैं। परन्तु यह बता देना आवश्यक है कि प्रत्येक अच्छा कवि भी ज्ञानी नहीं होता। उसे कभी-कभी ज्ञान का प्रकाश दीखता है। साधारणतः कविगण अपनी इच्छाओं के प्रभाव में बहने को आनन्द मान बैठते हैं। इसलिए कवि आदर्श पुरुष बहुत कम होते हैं। वे प्राकृतिक बाटिका का दृश्य दिखाते हैं विद्वान् को चाहिये कि फूलों से लाभ उठाये और कांटों से बचे। जो मनुष्य अथवा जन समूह इस बात का विचार नहीं रखता। वह कविता से लाभ के बजाय हानि उठाता है। बस, इतना ध्यान रखिये और फिर कविता के कुञ्जों में रासलीला कीजिये।

बाग बाबर,
काबुल।
१८-६-१९२४।

—महेन्द्रप्रताप

महाकवि अकबर

उर्दू कविता

प्रत्येक देश की कविता उस देश के भूगोल तथा इतिहास का चित्र तथा वहां के रस्मों रिवाज तथा निवासियों के स्वभाव का प्रतिबिम्ब होती है। अतएव किसी भाषा की कविता को भली भांति समझने के लिए उस देश का इतिहास तथा वहां के रिवाजों को जानना अत्यन्त आवश्यक है। महाकवि ग़ालिब का एक शेर है :—

क्या रहूं ग़ुरबत में ख़ुश, जब हो हवादिस का ये हाल।
नामा लाता है वतन से नामाबर अक्सर खुला॥

शेर साफ़ है, किन्तु अर्थ समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि फ़ारिस में यह दस्तूर है कि बुरी ख़बर का ख़त खुला भेजा जाता है।

यद्यपि उर्दू ब्रज-भाषा से निकली है तथा भारतवर्ष ही की गोद में पली है, किन्तु फिर भी उर्दू के कवियों ने फ़ारस तथा तुरकिस्तान के कवियों का अनुसरण किया है। उपरोक्त देशों के विचारों तथा उपमाओं ने उर्दू कविता में इतना ज़ोर पकड़ा है कि उनसे समता रखनेवाली भारतीय उपमाओं को बिल्कुल भुला दिया गया है। हां, 'सौदा' तथा 'इन्शा' ने कहीं-कहीं भारतीय उपमाओं का प्रयोग अवश्य किया है। यद्यपि भारतवर्ष में बुलबुल नहीं होती है, किन्तु उर्दू कवि के कान में बुलबुल ही का राग गूञ्जता है। कोयल की कू-कू तथा पपीहे की पी-पी उसे मस्त नहीं कर सकती। उर्दू कविता में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो ख़ास फ़ारिस तथा तुरकिस्तान से सम्बन्ध रखती हैं। इसके अतिरिक्त बहुत से विचारों में इन देशों में प्रचलित कथाओं के संकेत भी आ गये हैं। उदाहरणतः शमशाद, नरगिस, सम्बुल, बनफ़शा तथा सरू की उपमायें; लैला, शीरीं तथा शमअ का सौन्दर्य; मजनूं, फ़रहाद, बुलबुल

तथा परवाने का प्रेम; मानी तथा बहज़ाद की चित्रकारी तथा रुस्तम की बहादुरी। अस्तु, उर्दू कविता का पूर्ण रूप से रसास्वादन करने के लिये इस प्रकार की बातों का जानना अत्यावश्यक है। इन सब बातों की व्याख्या यहां नहीं की जा सकती। ऐसा करने से एक छोटी-सी पुस्तक अलग ही तय्यार हो जाय। अतएव इस लेख में हम हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिये उर्दू कविता में प्रयुक्त कतिपय विशेष शब्दों ही पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

शराब।

प्रायः प्रत्येक फ़ारसी के कवि ने शराब की प्रशंसा की है। उर्दू कविता भी शराब की प्रशंसा में फ़ारसी से पीछे नहीं है।* किन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि ये सब कवि शराबी थे या शराब को बहुत अच्छा समझते थे। इनमें बहुत से कवि बड़े सदाचारी तथा ईश्वर-भक्त हुए हैं। उदाहरणतः फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि 'हाफ़िज़', जिनकी कविता आदि से अन्त तक शराब की प्रशंसा से भरी पड़ी है, बड़े महात्मा थे। सुलतान टीपू के पुस्तकालय के सूचीपत्र के सम्पादक चार्ल्स स्टुअर्ट ने लिखा है—"हाफ़िज़ परहेज़गारी में मशहूर है। उसका सारा समय ईश्वर-पूजन में जाता था। ईश्वर-भक्त इसके काव्य को बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। इसके काव्य को क़ुरान के अतिरिक्त शेष सब पुस्तकों से ऊंचा स्थान दिया जाता है।"

---

*मस्ती वो बेखुदी में आसूदगी बहुत थी।
पाया न चैन हमने तरके-शराब करके॥
—मीर

लुत्फ़े-मय क्या कहूं तुझसे ज़ाहिद।
हाय कम्बख्त तूने पी ही नहीं॥
—दाग़

बात यह है कि फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू के कवियों ने शराब की प्रेम से उपमा दी है। शराब पीने पर आदमी के होश हवास ठीक नहीं रहते। प्रेम में भी ऐसा ही होता है। प्रत्येक समय प्रेम-पात्र का चित्र आंखों के सम्मुख रहता है। उसके अतिरिक्त और किसी बात का ध्यान ही नहीं आता। कोई उपदेशक या मित्र कितना ही क्यों न समझाय, कुछ समझ ही में नहीं आता। उपदेशक के उत्तर में प्रेमोन्मत्त यह ही कहता है:—

इतना तो बतादे मुझे ए नासहे-मुशफ़िक़।
देखा है कि उस माहे-लक़ा को नहीं देखा॥

प्रेम तथा शराब के प्रभाव में इतनी अधिक समता होने के कारण शराब प्रेम का ऐसा उपमान हो गया है कि जहां कहीं शराब की प्रशंसा है वहां शराब से प्रेम का मतलब है। केवल इतना ही नहीं वरन् शराब-सम्बन्धी अन्य पदार्थ भी प्रेम ही के द्योतक हैं। उदाहरणतः साक़ी (शराब पिलाने वाला) से माशूक़ का मतलब होता है। महाकवि ग़ालिब ने एक स्थान पर साफ़ तौर से लिखा है:—

हरचन्द हो मुशाहदये-हक़ की गुफ्तगू।
बनती नहीं है बादओ-सागिर कहे बग़ैर॥

अर्थात् चाहे ईश्वर-दर्शन ही का विषय क्यों न हो, किन्तु फिर भी कविता में इस विषय पर लिखने के लिये शराब और प्याले का वर्णन करना ही पड़ता है।

आकाश।

उर्दू कवियों का विचार है कि आकाश सदैव घूमता रहता है। यह किसी मनुष्य को सुखी नहीं देख सकता। हमारे सारे दुःखों का कारण आकाश ही है। इस कारण प्रत्येक उर्दू कवि ने आसमान को दो चार खली कटी अवश्य सनाई हैं:—

ये दो दिल को यकजा बिठाता नहीं।
किसी का वस्ल इसको भाता नहीं॥

महाकवि ज़ौक़ मार्ग न मिल सकने के कारण ही आकाश की सीमा से बाहर निकल जाने की इच्छा पूर्ण न कर सके थे।

अहाते से फ़लक के हम तो कब के।
निकल जाते मगर रस्ता न पाया॥

महशर या अन्तिम न्याय का दिन।

मुसलमानों का विश्वास है कि एक दिन ऐसा आने वाला है कि संसार का अंत हो जायगा। उस दिन सूर्य पूर्व के स्थान में पश्चिम से निकलेगा। संसार के आरम्भ से जितने मनुष्य मरे हैं सब ईश्वर के सम्मुख उपस्थित होंगे। फ़रिश्ते (देवदूत) सब मनुष्यों के अच्छे-बुरे कामों की सूची ईश्वर के सामने रक्खेंगे। ईश्वर सब मनुष्यों का न्याय करेगा। जिसके काम अच्छे होंगे उनको बहिश्त (स्वर्ग) भेजेगा जहां पर शराब की नदियें तथा अप्सरायें उनको मिलगी। जिन मनुष्यों के कर्म अच्छे न होंगे उनको दोज़ख़ (नर्क) में डाला जायगा जहां बड़ी तेज़ आग जलती है। इस दिन को मुसलमान लोग रोज़े-कयामत या रोज़े-महशर अर्थात् अन्तिम न्याय का दिन कहते हैं। मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर बड़ा दयालु है। वह बहुत से पापियों को क्षमा भी कर देगा। इसके अतिरिक्त उन लोगों के विचारानुसार जो मनुष्य तोबा (पश्चात्ताप) कर लेते हैं उनके अपराध भी क्षमा हो जाते हैं। उर्दू कविता में इन विचारों का बहुत उल्लेख है। प्रायः कवियों ने रोज़े-क़यामत की दुहाई दी है:—

क़रीब है यार रोज़े-महशर छिपेगा कुश्तों का ख़ून क्योंकर।
जो चुप रहेगी ज़बाने-ख़न्जर लहू पुकारेगा आस्तीं का॥

—दाग़

है ये ज़ुल्म चन्द रोज़ा है एक दिन इन्तक़ाम का भी।
अमीर हम्माम गर्म करलें ग़रीब का झोंपड़ा बलाकर॥
—अमीर

उर्दू कवियों को यह आशा रहती है कि महशर के दिन तो अवश्य ही उनका और उनके माशूक़ का इन्साफ़ हो जायगा। यही सोच कर अपने मन को समझाते रहते हैं। महाकवि ग़ालिब को सन्देह हो गया था कि स्यात् ऐसा न हो। देखिये कैसा खेद प्रकट किया है :—

वाये गर मेरा तेरा इन्साफ़ महशर में न हो।
अब तलक तो ये तवक्के है कि वां हो जायगा॥

शम्स लखनवी का भी इस विषय का एक बहुत अच्छा शेर है जिसकी शोख़ी तथा सादगी की प्रशंसा नहीं हो सकती :—

बरोजे-हश्र शहीदों को है बड़ा दावा।
मज़ा तो है जो न साबित हो जुर्म क़ातिल पर॥

बहुत से कवियो ने ईश्वर की दयालुता तथा क्षमा पर भरोसा करके परलोक-चिन्ता को पास नहीं फटकने दिया है :—

वो करीम क्या नहीं है वो रहीम क्या नहीं है।
कभी 'दाग़' भूलकर भी न ग़मे-निजात करना॥

महाकवि आतश तो क्षमा की आशा न रखने वालों को काफ़िर ही बतला गये हैं :—

बख्शे जायँगे गुनहगारे--मौहब्बत अय ज़ाहिद।
रहमते-अल्लाह से काफ़िर है जो मायूस है॥

इश्क़

इश्क़ अर्थात् प्रेम दो प्रकार का होता है—मजाज़ी और हक़ीक़ी। इश्क़े-मजाज़ी का अर्थ है सांसारिक वस्तुओं या माशूक़ से प्रेम। इश्क़े-हक़ीक़ी ईश्वर-प्रेम को कहते हैं। इश्क़े-हक़ीक़ी को इश्क़े-कामिल

भी कहा गया है। सांसारिक माशूक को माशूके-मजाज़ी कहते हैं तथा ईश्वर को माशूक़े-हक़ीक़ी। बहुत से उर्दू कवियों का यह भी विचार है कि इश्क़े-मजाज़ी, इश्क़े-हक़ीक़ी की सीढ़ी है।

बुत

बुत का अर्थ है प्रतिमा। अकबर ने निम्न लिखित पद्य में बुत शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है:—

काबे से जो बुत निकले तो क्या,
काबा ही गया जब दिल से निकल।
अफ़सोस कि बुत भी हमसे छुटे,
कब्जे से खुदा का घर भी गया॥

किंतु उर्दू काव्य में यह शब्द तथा इसका पर्यायवाची अरबी शब्द 'सनम' अधिकतर माशूक के लिये आता है। माशूक के निवास-स्थान को 'बुतखाना' या 'दैर' कहते हैं। आशिक 'सनम परस्त' या 'बुत परस्त' कहा जाता है। राज-कवि दाग़ के निम्न लिखित पद देखिये:—

कुछ और भी तुझे अय दाग़ बात आती है।
वही बुतों की शिकायत वही गिला दिल का॥
जब 'दाग़' को ढूंढा किसी बुतखाने में पाया।
घर में कभी उस मरदे-खुदा को नहीं पाया॥

काफ़िर

कुरान के अनुसार वे लोग काफिर हैं जो ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे की प्रार्थना इस आशा से करते हैं कि उससे वह प्राप्त हो जो केवल ईश्वर के अधिकार में है। किंतु उर्दू-कवियों ने इस शब्द का प्रयोग अधिकतर अपने माशूक के लिये किया है:—

मौहब्बत में नहीं है फर्क जीने और मरने का।
उसी को देखकर जीते हैं जिस काफिर पै दम निकले॥

किसी २ स्थान पर कवियों ने अपने आपको भी 'इश्क़ का काफ़िर' कहा हैः—

काफ़िरे-इश्कम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त।
हर रगे-मन तार गश्ता हाजते-जुन्नार नेस्त॥

अर्थात् मैं तो प्रेम का काफ़िर हूं। मुझे मुसलमान होने की आवश्यकता नहीं है। मेरी तो नस नस मे तार गया हुआ है, मुझे जनेऊ पहनने की आवश्यकता नहीं है।

वाइज़ या नासह

वाइज़ या नासह का अर्थ है धर्मोपदेशक, किंतु उर्दू कविता में यह शब्द उन मनुष्यों के लिये आता है जो ज़ाहिरी ढोंग ही को धर्म समझते हैं तथा ज़ाहिरी ढोंग को न मानने वाले ईश्वर भक्तों को पथ-भ्रष्ट समझ कर उनको उपदेश देते हैं। प्रायः प्रत्येक उर्दू-कवि ने वाइज़ या नासह की ख़ुश्की उड़ाई हैः—

कहां मयख़ाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहां वाइज़।
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले॥

—ग़ालिब

शेख़ तथा ज़ाहिद

शेख बुजुर्ग को कहते हैं। ज़ाहिद का वास्तविक अर्थ है परहेज़गार। किंतु उर्दू-कवियों ने अधिकतर पाखंडी मनुष्यों के लिये इन शब्दों का प्रयोग किया है। इसी कारण उर्दू-कविता में स्थान २ पर शेख़ तथा ज़ाहिद की हंसी उड़ाई गई हैः—

हुआ है चार सिजदों पर ये दावा, ज़ाहिदो, तुमको।
खुदा ने क्या तुम्हारे हाथ जन्नत बेच डाली है॥
किसी की तो जाहिद को होती मौहब्बत।
बुतों की न होती, खुदा की तो होती॥

ये शेखजी जो मुसल्ला बिछाये बैठे हैं।
बुतों की याद में आसन जमाये बैठे हैं॥
किसी पर मर मिटे होंगे मये-गुलगूं भी पी होगी।
जवानी में जनाबे शेख ने क्या कुछ न की होगी॥
शेख इस रेशे-मुक़त्ता पै ये झूठी बातें।
शर्म भी तुझको कुछ, अय मरदे-खुदा नहीं आती॥
अकबर ने 'शेख' शब्द का दोनों अर्थों में प्रयोग किया है।

सूफ़ी

सूफी शब्द स्यात् अरबी शब्द 'सूफ' से निकला है। 'सूफ' के अर्थ ऊन और पश्मीने के हैं। ईरान में साधु बहुधा ऊनी वस्त्र पहना करते हैं। यह भी सम्भव है कि यह शब्द फ़ारसी शब्द 'सूफ' (साफ तथा दुष्प्राप्य) या यूनानी शब्द 'सूफिया' (बुद्धिमत्ता) से निकला हो। सूफियों का मत (तसव्वुफ) वेदान्त से बहुत कुछ मिलता है। सूफियों का कहना है कि सब आत्मायें ईश्वर से निकली हैं और अन्त में उसी की ओर फिर लौट जायेंगी। जो कुछ उसने बनाया है सब में उसी की आत्मा है और वही उसमें है। ईश्वर-प्रेम के अतिरिक्त सब बातें व्यर्थ हैं। संसारिक जीवन माशूक (ईश्वर) की जुदाई का जमाना है। कट्टर मुसलमान सूफियों को रिन्द—मजहबी बातों का न मानने वाला—कहते हैं। किंतु फ़ारसी तथा उर्दू के प्रायः सभी कवियों ने सूफियों का अनुकरण करने ही में अपना गौरव समझा है और अपने लिये निर्भीक अर्थ में रिन्द शब्द का प्रयोग किया है।

बिरहमन

बिरहमन शब्द का भी उर्दू कवियों ने बहुत प्रयोग किया है। उर्दू कविता में यह शब्द सौन्दर्योपासक या सूफ़ी के अर्थ में प्रयुक्त हुवा है।

शीरीं और फ़रहाद

शीरीं अपने समय की ईरान की बहुत ही रूपवती महिला थी। फ़रहाद एक चीनी चित्रकार था। दोनों एक दूसरे पर मोहित थे। ईरान का बादशाह खुसरू भी शीरीं पर मोहित हो गया और जिस प्रकार बना उसको महल में ले आया। किंतु शीरीं सदैव फरहाद की याद में रोती रहती थी। एक दिन खुसरू ने शीरीं से कहा, "यदि फरहाद को तुझसे सच्चा प्रेम है तो मुझे उसकी परीक्षा करा दे।" शीरीं ने कहा, "किस प्रकार?" बादशाह ने कहा, "फरहाद से कह कि पहाड़ से महल तक एक नहर निकाल दे।" शीरीं ने कहा, यदि उसने ऐसा कर दिया तो क्या पुरस्कार?" बादशाह ने उत्तर दिया, "मैं तुझे ही पुरस्कार रूप में उसे दे दूंगा। शीरीं के कहने से फरहाद ने नहर खोद दी। अब तो बादशाह बहुत घबराया। उसने फरहाद के पास कहला भेजा कि शीरीं मर गई। यह सुनते ही फरहाद ने आत्म-हत्या कर ली। जब शीरीं को इस बात का पता चला तो उसने भी आत्म-हत्या कर ली।

क़ैस (मजनूं) और लैला

क़ैस, जो मजनूं के नाम से प्रसिद्ध है, अरब के नज्द नामक प्रांत का रहनेवाला था। वह लैला नामक एक अरब रमणी के प्रेम में इतना उन्मत्त था कि तन बदन की भी कुछ सुध न रखता था। उर्दू के अधिकांश कवियों ने फरहाद और मजनूं की बराबरी की है या इनसे भी बढ़कर होने का दावा किया है:—

कैसो-फरहाद के किस्से तो सुना करते हो लेकिन।
दाद दो इसकी हमने तुम्हें चाहा कैसा ॥

यूसुफ़ और ज़ुलैखा

यूसुफ़ मुसलमानों के एक पैग़म्बर थे। आप किनान देश के रहने वाले थे। कहा जाता है कि संसार का तीन चौथाई सौन्दर्य आपके हिस्से

में आया था। आपके भाइयों ने ईर्षा के कारण आपको एक मिश्र के सौदागर के हाथ बेच दिया था। उस सौदागर ने मिश्र पहुंच कर आपको वहां के राजा के हाथ बेच दिया। उसकी स्त्री आपके सौन्दर्य पर आसक्त हो गई। उसने आपको वशीभूत करने का बहुत कुछ प्रयत्न किया किंतु आप उसकी बातों में क्यों आने वाले थे। चिढ़ कर उसने आपको बन्दी-गृह में डलवा दिया और अनेक कष्ट दिये। अंत में राजा को सच-सच हाल मालूम हो गया। उसने आपको अपना युवराज बना लिया। कुछ दिनों बाद आप मिश्र के राजा हो गये। आपके विरह में रोते २ आपके पिता याकूब की आंखों की ज्योति जाती रही थी। यह समाचार सुनकर उनकी आंखों में फिर से ज्योति आ गई। उर्दू कवियों ने अपनी कविता में मिश्र के बन्दीगृह, हज़रते-याकूब की आंखों की ज्योति तथा यूसुफ के सौन्दर्य का बहुत वर्णन किया है और अपने माशूक को यूसुफ के नाम से पुकारा है:—

तुम वो यूसुफ हो कि अच्छा भी तमाशाई हो।
दीदये-हज़रते—याकूब की बीनाई हो॥

ख़िज़्र

हजरते-ख़िज़्र मुसलमानों के एक पैग़म्बर थे। मुसलमानों का विश्वास है कि आप अब तक जीवित हैं और भूले-भटकों को रास्ता बताते हैं। महाकवि दाग़ का शेर है:—

हम एक रस्ता गली का उसकी दिखाके दिल को हुवे पशेमा।
ये हजरते-ख़िज़्र को जिता दो किसी की तुम रहबरी न करना॥

मन्सूर

मन्सूर ईरान देश का एक सूफ़ी था। उसको "अहं ब्रह्म" का ज्ञान होगया था, और वह 'अनल हक़' अर्थात् 'मैं खुदा हूं' 'या खुदा से मिल गया हूं' कहा करता था। उस समय के मौलवी इस तत्त्व

को कहां समझ सकते थे। उस पर नास्तिकता का अभियोग लगाया गया और उसको फांसी दे दी।

शैतान

जब खुदा ने आदम को पैदा किया तो फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि इसको सिजदा करो। शैतान के अतिरिक्त सब फ़रिश्तों ने सिजदा किया। शैतान बोला, 'तूने मुझे आग से पैदा किया है। आदम को मिट्टी से बनाया है। मैं आदम को सिजदा क्यों करूं?' खुदा को शैतान का यह गर्व बुरा मालूम दिया। उसने शैतान को बहिश्त से निकल जाने की आज्ञा दी। शैतान ने अपनी पूजा का पुरस्कार मांगा। ईश्वर ने कहा, 'मांग क्या मांगता है?' शैतान ने जवाब दिया, 'मुझे क़यामत के दिन तक का जीवन मिल जाय।' खुदा ने यह बात स्वीकार कर ली। अब शैतान खुशी से उछला और बोला, 'अब मैं तेरे बन्दों को बहकाया करूंगा।', खुदा ने कहा, 'जो मेरे भक्त हैं कदापि तेरे बहकाये में नहीं आयंगे।'

आदम और हौवा

मुसलमानों के अनुसार आदम वह सबसे पहले मनुष्य हैं जिनको खुदा ने बिना मां बाप के पैदा किया था। हौवा उनकी स्त्री का नाम था। दुनिया में आने से पहले ये दोनों बहिश्त में रहते थे। ईश्वर ने इनको गेहूं के पेड़ का फल खाने के लिये मना कर दिया था। शैतान ने अवसर पाकर हौवा को गेहूं के वृक्ष का फल स्वयं खाने तथा अपने पति को खिलाने के लिये बहकाया। हौवा उसके बहकाये में आ गई। इस पर खुदा ने क्रुद्ध होकर उन्हें बहिश्त से निकाल दिया। महा कवि गालिब ने निम्न लिखित शेर में इसी घटना की ओर इशारा किया है:—

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे लेकिन।
बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले॥

ईसा या मसीह

ईसाई धर्म के संचालक ईसा को मुसलमान भी एक पैग़म्बर मानते हैं। ईसा के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह प्रत्येक प्रकार के रोगी को अच्छा कर देते थे, यहां तक कि मुर्दों को भी जिला देते थे। माशूक़ की कृपा दृष्टि से आशिक़ का सारा रोग दूर हो जाता है। इस कारण उर्दू कवियों ने अपने माशूक़ को ईसा या मसीह के नाम से पुकारा है।

वादा है मेरे मसीहा से यहां आने का।
एक दम और न आये जो अजल आई हो॥

महाकवि अकबर

हैं और भी दुनिया में सखुनवर बहुत अच्छे।
कहते हैं कि ग़ालिब का है अन्दाजे-बयां और ॥

—ग़ालिब।

यों तो उर्दू में ग़ालिब आदि अनेक एक से एक बढ़कर कवि हुवे हैं, किन्तु प्रयाग-निवासी स्वर्गीय अकबर भी अपने ढंग के अद्वितीय तथा अनुपम कवि थे। आपने उर्दू-कविता को गुलोबुलबुल तथा जुल्फ़ों के फन्दे से निकालकर समय के अनुसार उसमें एक प्रकार का नया जीवन डाल दिया था। अकबर केवल कवि ही नहीं थे वरन् बड़े तत्त्ववेत्ता तथा धार्मिक पुरुष भी थे। आपके प्रत्येक शेर से सजीवता के साथ साथ सुधार तथा धार्मिक विचार टपकता है। जिस रङ्ग में आपने कविता की है, उस रङ्ग में उर्दू तो क्या अन्य किसी भी देशीय भाषा के किसी कवि ने नहीं की। आपने एक नई ही शैली की कविता की और स्यात् उस शैली को अपने ही साथ ले भी गये हैं।

तेरे बाद 'अकबर' कहां ऐसी नज्में।
वो दिल ही न होंगे कि ये आह निकले ॥

जो काम अच्छे २ वक्ताओं की लम्बी चौड़ी वक्तृताएं नहीं कर सकतीं, वह काम आपका शेर कर सकता है। सच तो यह है कि आपने गागर में सागर बन्द कर दिया है। आपको अपने समय का उर्दू का सबसे बड़ा कवि कहना अत्युक्ति न होगी।

आपका जन्म सन् १८४६ ई० में प्रयाग से दस बारह कोस की दूरी पर बारा नामक क़स्बे में हुआ था। आप सय्यद रिज़वी बन्श में से थे।

आपके पिता सय्यद तफ़ज़्ज़ुल हुसैन बड़े ही धार्मिक पुरुष थे। आप पर भी अपने पिता के धार्मिक जीवन का बड़ा प्रभाव पड़ा था।

आपकी आरम्भिक शिक्षा बहुत ही साधारण हुई थी। आपके पिता का विचार था कि दो बातों की शिक्षा ही आवश्यक है; एक तो व्याकरण की तथा दूसरे गणित-शास्त्र की। इस कारण आरम्भ में आपको साधारण गणित सिखाया गया था तथा कुछ अरबी, फ़ारसी की पुस्तकें तथा व्याकरण पढ़ाया गया था। उस समय किसी को ध्यान भी नहीं हो सकता था कि यह लड़का एक दिन उर्दू का महाकवि हो जायगा। किन्तु कविता पुस्तकों के अध्ययन से नहीं आती। अंग्रेज़ी की कहावत ठीक ही है :—

Poets are born not made.

अर्थात् कवि उत्पन्न होते हैं, बनाये नहीं जाते।

चौदह वर्ष की अवस्था में आपको अंग्रेज़ी का भी शौक़ हुआ। घर पर ही आपने अंग्रेज़ी की अच्छी योग्यता प्राप्त करली। यह वह समय था जब अरबी, फ़ारसी जाननेवाले राह चलते मिलते थे, किन्तु अंग्रेज़ी जानने वाला कठिनता से कहीं दिखाई पड़ता था। सन् १८६७ ई० में आपने वकालत की परीक्षा पास करली। उन दिनों वकालत की परीक्षा में बैठने के लिये एन्ट्रैंस आदि किसी अन्य परीक्षा पास करने की क़ैद नहीं थी। परीक्षा पास करने के दो वर्ष बाद आप नायब तहसीलदार हो गये। इसके एक वर्ष पश्चात् ही आप हाईकोर्ट के मिस्ल पढ़ने वाले नियत कर दिये गये। सन् १८८१ ई० में आपको मुन्सफ़ी का पद मिल गया। आप अपने कार्य को बड़ी योग्यता तथा ईमान्दारी से करते थे। इस कारण आपकी ख्याति सरकार तक पहुंच गई थी। आप सन् १८८८ ई० में सदर उल् सदूर हो गये। इसके पश्चात् शीघ्र ही सन् १८६२ ई० में आप अदालत ख़फ़ीफ़ा के जज नियत कर दिये गये। सन् १८६४ ई० में आपने डिस्ट्रिक्ट सैशन जज का भी काम किया। सन् १८६८ ई० में सरकार ने आपको 'ख़ान बहादुर' की पदवी देकर अपनी गुण-ग्राहकता

का परिचय दिया। किन्तु सरकार से सम्मान पाने से आपको कुछ प्रसन्नता नहीं होती थी। एक स्थान पर आपने लिखा है :—

नेशनल वक़ग्रत के गुम होने का है 'अकबर' को ग़म।
आफ़िशल इज्ज़त का उसको कुछ मज़ा मिलता नहीं॥

आप हाईकोर्ट के जज भी होने वाले थे। किन्तु सन् १९०२ ई० में आप 'रिटायर' होगये और पेन्शन ले ली। आपका कहना था :—

जज बनाकर अच्छे अच्छों का लुभा लेते हैं दिल।
हैं निहायत खुशनुमा दो 'जीम' उनके हाथ में॥

किन्तु आप पहले ही से सचेत थे और इस जाल में नहीं फंसे। पेन्शन लेने के बाद आप प्रयाग में अपनी 'इशरत मञ्जिल'[1] नामक कोठी में रहने लगे। परन्तु सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करना आपके भाग्य में नहीं बदा था। आपको मोतियाबिन्द का रोग हो गया।

सात वर्ष तक आप इस रोग से पीड़ित रहे। सन् १९०९ ई० में आपने कलकत्ते जाकर 'नश्तर' लगवाया जिसके कारण आपकी आंखों में फिर ज्योति आगई। किन्तु काल-चक्र ने फिर भी चैन न लेने दिया। कोई दस ही महीने बाद २४ अक्तूबर सन् १९१० ई० को आपकी धर्म-पत्नी का स्वर्गवास हो गया। थोड़े ही दिनों बाद आपका जवान बेटा हाशिम, जिसे आप बड़ा प्यार करते थे, काल का ग्रास होगया।

आग़ोश से सिधारा मुझ से ये कहने वाला।
अब्बा सुनाइये तो क्या आपने कहा है॥
अशआरे हसरत-आगीं कहने की ताब किसको।
अब हर नज़र है नौहा हर सांस मरसिया है॥

१ आपने अपने बड़े लड़के सय्यद इशरत हुसैन बी० ए० (कैण्टब) के नाम पर अपनी कोठी का नाम 'इशरत मञ्जिल' रखा था।

आपने इन सब आपदाओं को अत्यन्त धैर्य-पूर्वक सहा और मृत्यु-पर्यन्त ईश्वराधना तथा कविता देवी की उपासना में लगे रहे। ९ सितम्बर सन् १९२१ ई० को ७५ वर्ष की अवस्था में उर्दू-साहित्य का यह सूर्य सदैव के लिये अस्त होगया।

हक़ मग़फ़रत करे अजब आज़ाद मर्द था।

कविता

आरम्भ में अकबर प्राचीन शैली के अनुसार 'ग़ज़ल' ही लिखा करते थे। प्रयाग के एक उर्दू-कवि 'वहीद' आपके काव्य-गुरु थे। सबसे पहले २१ वर्ष की अवस्था में आपने मशायरे में ग़ज़ल पढकर अपनी कवित्व-शक्ति का परिचय दिया। पाठकों के विनोदार्थ हम उस ग़ज़ल के पांच चार शेर नीचे देते है :—

समझे वही उसको जो हो दीवाना किसी का।
अकबर ये ग़ज़ल मेरी है अफ़साना किसी का॥
गर शेख़ो-बिरहमन सुनें अफ़साना किसी का।
माबिद न रहे काबओं बुतख़ाना किसी का॥
अल्लाह ने दी है जो तुम्हे चांद सी सूरत।
रोशन भी करो जाके सियहख़ाना किसी का॥
अश्क आंखों में आजायें एवज़ नींद के साहब।
ऐसा भी किसी शब सुनो अफ़साना किसी का॥
हम जान से बेज़ार रहा करते हैं 'अकबर'।
जब से दिले बेताब है दीवाना किसी का॥

आठ दस वर्ष तक आप इसी रंग में कविता करते रहे। किन्तु आपकी प्रतिभा ग़ज़ल की चारदीवारी में कबतक बन्द रह सकती थी। महाकवि 'ग़ालिब' के कथनानुसार :—

बक़द्र शौक़ नहीं ज़र्फ़े-तंगनाये-ग़ज़ल।
कुछ और चाहिये वसअत मेरे बयां के लिये॥

अर्थात् जो कुछ मुझको लिखना है वह ग़ज़ल में नहीं लिख सकता। अतएव अब कोई और शैली ग्रहण करनी चाहिये।

सन् १८७६ ई० में लखनऊ से 'अवध-पंच' नामक पत्र प्रकाशित होना आरम्भ हुवा। इस पत्र में उस समय के प्रायः सभी विख्यात लेखक समाज, दर्शन, राजनीति आदि गूढ़ विषयों पर हास्य-रस-पूर्ण लेख लिखा करते थे। आपने भी अपना रंग बदला और अवध-पंच के लिये गद्यात्मक तथा पद्यात्मक लेख लिखने लगे। आपने अपनी एक नई शैली निकाली और उसमें प्रशंसनीय सफलता भी प्राप्त की। यद्यपि आपकी पुरानी शैली की ग़ज़लें भो खूब हैं, किन्तु फिर भी आपका पुरानी शैली का काव्य आपके नई शैली के काव्य के सामने बिलकुल फीका है।

अकबर ने प्रेम, धर्म, समाज-सुधार, राजनीति आदि सब ही विषयों पर कविता की है, स्यात् ही कोई ऐसी राजनैतिक या सामाजिक समस्या हो जिस पर आपने अपनी चित्ताकर्षक तथा अनुपम युक्तियों द्वारा यथोचित प्रकाश न डाला हो।

१—हास्य तथा ज़िन्दा दिली।

अकबर बड़े ही ज़िन्दा दिल मनुष्य थे। रोतों को हंसा देना और मुर्झाये हुवे दिलों को खिला देना इनके बांयें हाथ का काम था। आप इस बात के मानने वाले थे :—

ज़िन्दगी ज़िन्दा दिली का है नाम।
मुरदा दिल ख़ाक जिया करते हैं॥

एक बार आप अपने लड़के इशरत अली से, जो सीतापुर में डिप्टी कलक्टर थे, मिलने गये थे। अकबर सादा कपड़े पहना करते थे। इस कारण डिप्टी साहब के मित्र आपको कोई साधारण मनुष्य समझ कर

आपकी ओर से उदासीन से रहे। उन मित्रों में एक अकबर को पहचानने वाले भी थे। उन्होंने चुपके से अपने साथियों को संकेत किया कि आप डिप्टी साहब के पिता हैं। यह बात मालूम होने पर तो डिप्टी साहब के मित्र आपके साथ बड़े आदर-सत्कार के साथ बातें करने लगे। अकबर सब बातें ताड़ गये थे, किन्तु चुप रहे और कुछ न बोले। थोड़ी देर बाद बातों २ में आपने कहा—"मियां! और भी कुछ मालूम है? सुना है योरप में अल्लाह मियां आये हैं। सब लोग अकबर की ओर अवाक् दृष्टि से देखने लगे। आपने फिर कहा—"हां! मुझे बहुत ही विश्वासनीय सूत्र से पता चला है। और एक बात और मज़े की हुई। योरप में किसी ने अल्लाह मियां की बात तक न पूछी। इतने में किसी आदमी ने बतलाया कि अल्ला मियां खुदावन्द यसू मसीह के पिता हैं। यह बात मालूम होने पर अल्लाह मियां की बड़ी आवभगत हुई।"

अकबर ने उपरोक्त बातें बड़े गम्भीर भाव से इस प्रकार कहीं मानों किसी विश्वसनीय समाचार-पत्र का समाचार-कालम पढ़ रहे हों। किन्तु डिप्टी साहब के मित्र समझ गये कि संकेत हमारी ही ओर है और लज्जा के कारण सब की नीची निगाहें हो गईं।

एक और घटना सुनिये। प्रयाग की प्रदर्शनी में भारतवर्ष में पहले पहल वायुयान आये थे। जिस समय आकाश में वायुयान उड़ने का शब्द हुआ तो अकबर अपने मित्र श्रीयुत ख्वाजा हसन निजामी को साथ लेकर छत पर गये और वायुयान को उड़ता देखकर बोले—"तुम समझे भी अंग्रेज लोग क्या कहते हैं?" ख्वाजा साहब ने जवाब दिया कि मैं कुछ नहीं समझा। आपने कहा—'अंग्रेज लोग कहते हैं अब हम उड़ते हैं।' "भाई हम कब मना करते हैं। खुशी से उड़ो।"

इस प्रकार अकबर का सारा जीवन लतीफों से भरा पड़ा है। यदि सब लतीफों का वर्णन किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक अलग तैयार हो जाय। अकबर की कविता की सर्वप्रियता का रहस्य ही यह है कि आपकी कविता के शब्द २ से रस निकलता है।

सन् १६२०की बात है। देश में असहयोग आन्दोलन जोरों पर था। भारत-सरकार इस आन्दोलन को दबाने के लिए तरह-तरह की युक्तियों काम ले रही थी। हजारों भारतीयों को जेलखानों में डाल दिया गया था। 'अमन सभाओं' के नाम से सरकार-परस्तों की सभायें कायम की गईं थीं, जिनका उद्देश्य इस आन्दोलन के विरुद्ध काम करना था। संयुक्त प्रान्त में मिस्टर जे० ई० गौज, आई० सी० एस० नामक सज्जन पब्लिसिटी आफ़िसर थे।

असहयोग आन्दोलन के विरुद्ध प्रचार करना इस महकमे का खास काम था। मिस्टर गौज महाकवि अकबर और उनकी भावपूर्ण कविताओं से अच्छी तरह परिचित थे। देशों के उत्थान और पतन में कवियों का बहुत बड़ा भाग रहा है। इस बात को भी वे अच्छी तरह जानते थे। अतः मिस्टर गौज ने सोचा कि कवि अकबर से कुछ ऐसी कवितायें लिखाई जाय, जिनसे असहयोग आन्दोलन के विरुद्ध प्रचार करने में सहायता मिल सके।

अकबर राजनीति पर जो कुछ लिखते उसे प्रकाशित न कराते, बल्कि बहुत छिपाकर रखते थे। मिस्टर गौज को मालूम न था कि हजरत अक़बर दिल से असहयोग के समर्थक बन चुके हैं।

कवि अकबर को सरकार से पेन्शन भी मिलती थी, इसलिये मिस्टर गौज को पूरी आशा थी कि वे (अकबर) उनकी बात न टाल सकेंगे। अतः उन्होंने अपना एक मुख्य कर्मचारी हजरत अकबर के पास भेजा। इन दिनों बुढ़ापे की कमजोरी के कारण अकबर का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था। जिस वक्त सरकारी कर्मचारी उनके पास पहुंचा, वह चारपाई पर लेटे हुए थे। मिस्टर गौज की फरमायश का हाल सुनकर इन्होंने उस कर्मचारी की ओर आश्चर्य से देखा और कहा—

कहां के गौज कहां के गांधी।
आगई अब तो मौत की आंधी॥

महाकवि अकबर का यह शेर सुन कर पास बैठे हुए लोग हंसने लगे,

और वह सज्जन वहां से झेंपकर चले गये। इस घटना की उसी दिन काफी चरचा होगई और मिस्टर गौज को बहुत लज्जित होना पड़ा।

एक और लतीफा सुनिये। महाकवि अकबर के साहबजादे मौलवी इशरत हुसेन साहब (रिटायर्ड कलक्टर) मुझसे फरमाते थे कि एकबार प्रयाग में कृषि प्रदर्शनी हुई थी। खान बहादुर मिस्टर मोहम्मद हादी डिप्टी कमिश्नर उक्त प्रदर्शिनी के मुख्य प्रबन्धकों में से थे। वे वालिद साहब के वाकिफकार थे। जब एक दिन शाम को मैं नुमायश देखने जाने लगा और वालिद से इजाजत चाही, तो कुछ सोचकर वे मुस्कराये और कहा—"अच्छा, वहां तुम्हें हादी साहब मिलेंगे, मैंने एक शेर कहा है उन्हें सुना देना।

हादिये दीं' तो नुमायश में कोई था ही नहीं,
हादिये-दुनिया थे वह हल जोतना सिखला गये।

जब मैंने हादी साहब को यह शेर सुनाया तो वह बहुत हंसे और इसे पढ़ कर बहुत देर तक लुत्फ लेते रहे।

अकबर वास्तव में आशुकवि थे। मौके २ पर हस्ब हाल शेर कहने और चमत्कार पूर्ण उत्तर देने में उन्होंने कमाल हासिल किया था। उर्दू भाषा के धुरन्धर लेखक और हजरत अकबर के घनिष्ट मित्र ख्वाजाहसन निजामी साहब मुझसे कहते थे कि एक बार हजरत अकबर मेरे मकान पर बैठे हुए थे। मेरी बच्ची हूरबानू आलुओं से खेल रही थी। हजरत अकबर ने पूछा—"हूर, यह आलू कौन लाया था?" हूरबानू ने जवाब दिया—"मेरे खालू लाये थे।" हजरत अकबर ने कहा :—

लाये हैं खरीद कर बाजार से आलू अच्छे,
इसमें शक नहीं है कि हैं हूर के खालू हैं अच्छे।

ख्वाजा साहब ने हजरत अकबर की हाजिर जवाबी का एक और मजेदार किस्सा सुनाया। ख्वाजा साहब एक मशहूर पीर हैं। उनके मुरीदों में सेठ साहूकार अमीर गरीब स्त्री पुरुष सभी तरह के लोग हैं।

एक दिन कुछ वेश्यायें उनकी जियारत के लिए आई हुई थी। इत्तिफाक से हजरत अकबर भी उस समय ख्वाजा साहब के पास बैठे थे। जब वे वेश्यायें चली गईं, तो हजरत अकबर ने व्यंग करते हुये फरमाया—"ख्वाजा साहब! मेरा तो अब तक यही ख्याल था कि जनाब के पास सिर्फ 'जिन' ही आते हैं, लेकिन आज मालूम हुआ कि हूरें भी हाजिरी देती हैं।

सन् १९११ की प्रयाग की नुमायश में कलकत्ते की प्रसिद्ध नर्तकी गौहरजान को भी बुलाया गया था। उन दिनों बोलते फिल्म और रेडियो नहीं थे, लेकिन गौहरजान की शोहरत सारे हिन्दोस्तान में फैली हुई थी। जब हजरत अकबर के एक दोस्त ने उनसे गौहरजान की नृत्य-कला और गायन-विद्या की तारीफ की, तो हजरत अकबर ने फरमाया :—

खुश नसीब आज यहां, कौन है गौहर के सिवा,
सब कुछ अल्लाह ने दे रक्खा है शौहर के सिवा।

ज़रा शौहर (पति) शब्द पर गौर कीजिए। कितना हास्य, व्यंग और चमत्कार भरा हुआ है!

लार्ड कर्जन ने अपनी एक स्पीच में हिन्दोस्तानियों को झूठा बतलाया था। अकबर उस समय लखनऊ में थे। जब उन्होंने यह स्पीच सुनी, तो बोले—"भाई क्या बात है। तुम भी लार्ड करज़न से जाकर कह दो :—

झूठे हैं हम तो आप हैं झूठों के बादशाह।"

महाकवि अकबर ने अपनी कविता में उर्दू लफ्जों के साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग इस खूबसूरती से किया है कि कविता में अपूर्व माधुर्य पैदा हो गया है। इस काम में उन्हें ऐसा कमाल हासिल था कि आज तक दूसरे कवि को नसीब नहीं हुआ। इस तरह के उनके अनेक शेर हैं। एक बड़ी मनोरञ्जक घटना है। अवध के एक मशहूर मुसलमान शिया अकीदा रखते थे, उसके बाद वे सुन्नी हो गये और फिर थोड़े दिनों बाद

अपने को शिया कहने लगे। इन हजरत के सम्बन्ध में अकबर ने कहा था :—

मुजक्कर के लिए ही (he) है,
मुअन्नस के लिए शी (she) है।
मगर हजरत, मुखन्नस है,
न हीओं में, न शीओं में।

अकबर साहब कहते हैं कि मुजक्कर (पुलिङ्ग, पुरुष) के लिए 'ही' (he) शब्द का प्रयोग होता है और मुअन्नस (स्त्रीलिंग, स्त्री) के लिये शी, (she) लफ्ज इस्तेमाल होता है। लेकिन ये हजरत स्त्री या पुरुष किसी भी श्रेणी में नहीं आते, बल्कि मुखन्नस (नपुंसक) हैं।

हजरत अकबर के रिश्तेदार मौलाना शौकत हुसैन साहब तहसीलदार कहते थे कि जिस समय मैं इलाहाबाद में था, हजरत अकबर कभी २ मेरे यहां आया करते थे। एक रोज इतवार की छुट्टी थी। मैं घर पर कुछ सरकारी कागजात देख रहा था। अकबर आये और कहने लगे—भाई तुम्हें छुट्टी के दिन भी फुरसत नहीं मिलती। मैंने जवाब दिया जी हां, एक जरूरी मिसल देखनी है।" यह सुनकर हजरत अकबर ने फरमाया—

संडे को भी जाता हूं तो फरमाती है वह मिस।
क्या क़हर है संडे को भी संडा नहीं टलता ॥

अलीगढ़ में मुसलमानों में सबसे पहले अब्दुल गफूर खां नामक एक रईस ने करजन फैशन रक्खा था। अब तो करजन फैशन साधारण सी बात ही होगई है, किन्तु उस समय नई बात होने के कारण लोगों की उङ्गलियां उठती थीं। फिर अकबर तो धार्मिक मुसलमान थे। इन्हें डाढ़ी का मुंडवाना किस प्रकार पसन्द आता? कहने से चूकने वाले न थे। महाकवि गालिब के अनुसार 'सर जाये या रहे, न रहे पर कहे बगैर'। एक दिन जब अब्दुल गफूरखां अपने मित्रों में बैठे थे तो आप बोले—

देख अब्दुल गफूर खां की तरफ। मर्दे खुश-हाल इसको कहते है ॥
चार अबरू का यां सफाया है। फ़ारिग-उल्-बाल इसको कहते हैं ॥

'फ़ारग़- उल्-बाल' शब्द विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। उर्दू महावरे में फ़ारिग़-उल्-बाल उस मनुष्य को कहते हैं जिसे किसी प्रकार का फ़िक्र न हो। किन्तु 'फ़ारिग़-उल्-बाल'का लफ्ज़ी तर्जुमा यह होता है कि जिसके बाल न हों।

बनारस कालिज से ओल्ड बाय मेगज़ीन निकलने पर आपने लिखा था :—

निकला ब-आबोताब बनारस से ओल्ड बाय।
अल्लाह उसको गोल्ड भी दे और पर्ल भी॥
ख्वाहिश है अब ये बाज़ मुहिब्बाने-क़ौम की।
निकले किसी तरफ़ से यूंही ओल्ड गर्ल भी॥

लार्ड मिन्टो के समय में अमीर काबुल के आने पर आपने लिखा था :—

जो सच्ची बात है कह दूंगा बे ख्रौफ़ो खतर उसको।
नहीं रुकने का मैं हरगिज़ परी टोके कि जिन टोके॥
अनार आते जो काबुल से तो पड़ते सब के हिस्से में।
अमीर आये तो हमको क्या मजे हैं लार्ड मिन्टो के॥

देखिये क़ाफ़िये ने उपरोक्त पद्य में कैसी जान डालदी है।

एक बार संयोगवश 'अंजुमन तरक्किये-उर्दू' का ज़िक्र आपके मित्रों ने छेड़ दिया। आप बोले—"ले देके एक ज़बान रह गई थी जिसे हम अपनी कह सकते थे। अब यह भी हमारे संभाले नहीं संभलती। इसके लिये भी एक अंजुमन (सभा) खड़ी की है। यह सब बनावट और दिखावे की बातें है।" इसके बाद आपने यह शेर पढ़ा :—

हम से छिन कर होगई बज्मे-तरक्क़ी के सपुर्द।
सच कहा मिरज़ा ये अब उर्दू भी 'कोरट' हो गई॥

'कोरट' का शब्द कैसा विनोद-पूर्ण है। जब कोई अपनी रियासत का प्रबन्ध करने में असमर्थ होता है या कम उम्र होता है तो उसकी रियासत

का प्रबन्ध सरकार अपने हाथ में ले लेती है। इसी को रियासत का 'कोरट' हो जाना कहते हैं। इस अवसर पर 'कोरट' शब्द का प्रयोग कैसा उपयुक्त तथा शेर में जान डालने वाला है।

सन् १६२० ई० के प्रारम्भ में खिलाफत का एक डेपूटेशन विलायत गया था। इस डेपूटेशन में मौलाना मौहम्मद अली तथा इन्डिपैन्डैन्ट के भूतपूर्व सम्पादक सैयद हुसैन के साथ २ 'मआरिफ' नामक मासिक पत्र के सम्पादक मौलाना सैयद सुलेमान नदवी भी थे। अकबर को मुसलमानी धर्म शास्त्र के एक विद्वान का राजनैतिक डेपुटेशन में जाना कुछ पसन्द न आया। देखिये निम्न लिखित पद्य में अकबर ने अपना भाव किस अनोखे ढङ्ग से व्यक्त किया है :—

सुलेमान की बात कैसी बनी।
कि नदवी से अब हो गये लंदनी॥
रहे बादे-नोशों[1] से बेशक खिंचे।
मगर चाय वालों से गाढ़ी छनी॥
मुहम्मद अली की रिफाक़त[2] में हैं।
खुदा ग़ैर से उनको करदे ग़नी[3]॥

आज कल लोगों ने धर्म को अपने स्वार्थ साधन का ज़रिया बना लिया है। यह बात सब लोग जानते हैं। किन्तु एक स्थान पर इस ख़्याल में अकबर ने जो हास्य भर दिया है वह उन्हीं का हिस्सा था। आप कहते हैं :—

फ़रमा गये हैं ये खूब भाई घूरन।
दुनिया रोटी है और मज़हब चूरन॥

जब खाना अधिक खा लिया जाता है और हज़्म नहीं होता तो चूर्ण की सहायता लीजाती है। इस ही प्रकार स्वार्थ-परायण लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए धर्म की आड़ ले लेते हैं जिससे कोई उनके मार्ग में रुकावट न डाले।

१. शराब पीने वालों। २. साथ। ३. कृत कार्य।

यूरुप की व्यवसायिक उन्नति का चित्र भी देखिये अकबर ने कैसी विनोद-पूर्ण भाषा में खैंचा है :—

यूरुप में गो है जंग की कुव्वत[1] बढ़ी हुई।
लेकिन फिजूं[2] है उस से तिजारत बढ़ी हुई॥
मुमकिन नहीं लगा वो सकें तोप हर जगह।
देखो मगर 'पियर्स' का है सोप हर जगह॥

सब पाठक जानते होंगे कि खिताब और सरकारी नौकरियों के उम्मेद-वार अफ़सरों के पास जाकर कैसे २ घृणित कार्य करते हैं। अपने आत्म-सम्मान को तिलांजलि दे देते हैं और अपने भाइयों की झूठी सच्ची बुराइयां करते हैं। ऐसे मनुष्यों को देश-घातक कहना बिलकुल सत्य है कटु सत्य है। नीतिकार कह गये हैं "सत्य वद प्रियं वद मा ब्रयताम् सत्यम प्रियम्।" स्वयं आपका भी कहना था :—

क़लई भी रियाकार की खुलती रहे 'अकबर'।
तानों में मगर तर्जे-मुहज़्ज़ब भी न छूटे॥

इसी ही कारण देखिये आपने हंसी २ खुशामदी लोगों पर कैसी चोट की है :—

अक्कल ने अच्छी कही कल लाला मजलिस राय से।
झुक के मिलना चाहिये हम सबको वायसराय से॥
शेर कैसी ही हो लेकिन क़ाफ़िये इसके हैं खूब।
कौन ऐसा है जो हो मुख़ालिफ इस राय से॥

आधुनिक सभ्यता से प्रभावान्वित होकर बहुत से युवक भोग-विलास में डूबे जा रहे हैं, और मद्यपान सीखते जा रहे हैं। ऐसे लोगों की ओर संकेत करके अकबर कहते हैं:—

फ़िक्र साढ़ी की है न कंगन की।
अब तो धुन है उन्हें फिरंगन की॥

---

१. शक्ति। २. अधिक।

निम्न लिखित पद्य में अकबर ने आधुनिक जमींदारों के जीवन का सच्चा तथा सजीव चित्र जिस विनोद-पूर्ण भाषा में खैंचा है वह अकबर ही का हिस्सा हैः—

मोहताजे दरे-वकीलों-मुख्तार हैं आप।
सारे अमलों के नाज बरदार हैं आप॥
आवारा वो मुन्तशिर[1] हैं मानिन्दे-गुबार।
मालूम हुआ मुझे जमींदार हैं आप॥

जो पाठक जमींदार हैं या जमींदारों के जीवन से भली भांति परिचित हैं उपरोक्त उक्ति की यथार्थता तथा व्यङ्ग को भली भांति अनुभव कर सकेंगे। वास्तव में आजकल के जमींदारों की ऐसी ही शोचनीय दशा है। महीने में बीस दिन कचहरी की खाक छाननी पड़ती है और चपरासियों तक को सलाम झुकानी पड़ती है।

आज कल बेचारे लेखकों की दशा भी बड़ी हृदय-विदारक है। मौखिक प्रशंसा ही यथेष्ट पुरस्कार समझा जाता है। विशेषतया प्रकाशक तथा साधारणतया जन साधारण यह समझते हैं कि लेखक एक प्रकार के विशेष प्राणी हैं जो बिना खाये पिये ही जी सकते हैं तथा साहित्य-सेवा कर सकते हैं। देखिये अकबर इस दशा का चित्र किन शब्दों में खेंचते हैंः—

खुला दीवां मेरा तो शोरे तहसीं[2] बज्म[3] में उठा।
मगर सब होगये खामोश जब मतबे[4] का बिल आया॥

अकबर को भी समाचार-पत्रों के सम्पादक साधारण कवि समझ कर भिन्न २ विषयों पर फ़रमायशी ग़ज़लें लिखने की प्रार्थना करते रहते थे। अकबर ऐसी प्रार्थनाओं से तंग आकर कहते हैंः—

उश्शाक़ को भी माले तिजारत समझ लिया।
इस क़दर को मुलाहज़ा लिल्लाह कीजिये॥

१ विकल चित्त। २ प्रशंसा। ३ सभा। ४ प्रेस।

भरते हैं मेरी आह को फ़ोनोग्राफ़ में।
कहते हैं फ़ीस लीजिये और आह कीजिये॥

कहीं २ अकबर ने शब्दों का विशेष रूप से प्रयोग करके कविता में हास्य पैदा कर दिया है। इस विषय के भी आपके दो चार शेर सुन लीजियेः—

१. पाकर ख़िताब नाच का भी शौक़ होगया।
सर[1] होगये तो बाल[2] का भी शौक होगया॥
२. खाई मिज़गां[3] वो नजर की जो क़सम बोला वो शोख़।
आप अब क़समें भी खाते हैं छुरी कांटे से॥
३. शेख़ जी घर से न निकले और मुझसे कह दिया।
आप बी० ए० पास हैं और बन्दा बी०बी० पास है॥
४. बोले चपराशी जो मैं पहुंचा ब-उम्मीदे-सलाम।
फांकिये खाक आप भी साहब हवा खाने गये॥
५. शैता ने किया हज़रते आदम को न सिजदा[4]।
और उज्र किया पेश कि मैं आग वो मिट्टी॥
हरज़त को भी तक़लीदे[5]-नमाज़ी में है ये उज्र।
मसजिद का वो मुल्ला है मैं साहब का हूं मुन्शी॥

अधिक कहां तक उल्लेख किया जाय, अकबर की कविता आदि से अन्त तक हास्य रस से भरी हुई है। कठिनता से १० प्रतिशत ऐसे शेर होंगे जिनसे हास्यरस न टपकता होगा। कैसा ही शुष्क विषय क्यों न हो अकबर ने हास्य को हाथ से नहीं जाने दिया है। यही कारण है कि जो अकबर की कविता एक बार पढ़ लेता है, अकबर पर लट्टू हो जाता है। दो चार शुष्क हृदयों की और बात है।

१ एक अंग्रेज़ी ख़िताब। २ अंग्रेज़ी नाच। ३ भृकुटी। ४ सर झुकाना। ५ अनुगमन, पीछे चलना।

है बदगुमाँ जो वो बुत परवा नहीं कुछ इसकी।
हर बिरहमन है शैदा[1] अकबर की काफ़िरी का॥

प्रेम— ।

यद्यपि अकबर ने प्रेम-विषयक कविता अधिकतर प्राचीन शैली ही पर की है, किन्तु पूर्ववर्ती कवियों के समान ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाकर अपनी आह से 'उन्क़ा' के वालों को नहीं जलाया है[2]। अकबर की प्रेम-विषयक कविता एक प्रेम के हार्दिक उद्‌गारों का सीधी सादी भाषा में जीता जागता चित्र है। इस बात की पुष्टि के लिए हम यहां पर अकबर के कुछ शेर उद्‌धृत करते हैं:—

जज़बये-दिल ने मेरे तासीर दिखलाई तो है।
घुंघरुओंकी जानिबे-दर कुछ सदा आई तो है॥
इश्क़ के इज़हार में हरचन्द रुसवाई तो है।
परकरूं क्या अब तबीयत आप पर आई तो है॥
आपके सर की कसम मेरे सिवा कोई नहीं।
बे तक़ल्लुफ़ आइये कमरे में तन्हाई तो है॥
जब कहा मैंने तड़पता है बहुत अब दिल मेरा।
हंसके फ़रमाया तड़पता होगा सौदाई तो है॥
यों मुरव्वत से तुम्हारे सामने चुप हो रहे।
कल के जलसा की ख़बर हमने मगर पाई तो है॥
देखिये कब तक नहीं आती गुले-आरिज[3] की याद।
सैरे-गुलशन से तबीयत हमने बहलाई तो है॥
मैं बला में क्यों फसूं दीवाना बनकर उसके साथ।

१—आसक्त।
२—मैं अदम से भी परे हूं वरना जालिम बारहा।
आहे आतशीं से मेरी वाले उनक़ा जल गया॥ —ग़ालिब
३. फूल के समान कपोल।

दिल को वहशत हो तो कमबख्त सौदाई तो है ॥
जिसकी उल्फ़त पर बड़ा दावा था अकबर कल तुम्हें।
आज हम जाकर उसे देख आये हरजाई तो है ॥

(२)

उन्हें पसन्द नहीं और इससे मैं बेज़ार।
इलाही फिर ये दिले बेकरार क्या होगा ॥
अज़ीज़ो सादा ही रहने दो लौहे तुरबत[1] को।
हमी मिटे तो ये नक़शो निगार क्या होगा ॥

(३)

अगरचे आशिक बुतों का हूं मैं नजर खुदा से फिरी नहीं है।
जो आँख रखते हैं जानते हैं कि आशिकी काफिरी[2] नहीं है ॥
जमाले-दिलकश[3] का महव्[4] होना नहीं है हरगिज खिलाफे-ताअत[5]।
खुदा की कुदरत की कद्र करना सवाब[6] है काफिरी नहीं है ॥

(४)

क्या मौत है तबियत आगई उस आफते जां पर।
जिसे इतना नहीं मालूम उल्फत क्या वफा क्या है॥
उन्हें भी जोशे-उल्फ़त हो तो लुत्फ उट्ठे मोहब्बत का।
हमी दिन रात अगर तड़पे तो फिर इसमें मजा क्या है॥
मुशीबत ऐन राहत है अगर हो आशिके सादिक[7]।
कोई परवाने से पूछे कि जलने में मज़ा क्या है ॥
तबीबों से मैं क्या पूछूं इलाजे दर्दे-दिल अपना।
मर्ज जब जिन्दगी खुद हो तो फिर उसकी दवा क्या है ॥

(५)

इन बुतों के बाब में इतनी ही मेरी अर्ज़ है।
कुफ़्र है इनकी परस्तिश प्यार करना फर्ज़ है ॥

१. क़ब्र का पत्थर। २. नास्तिकता। ३. चित्ताकर्षक सौन्दर्य
४. लीन। ५. आज्ञा-पालन के विरुद्ध। ६. पुण्य ७ सच्चा प्रेमी।

३. धर्म ।

अकबर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि चाहे कैसा ही शुष्क विषय क्यों न हो उसे भी मनोरञ्जक तथा चित्ताकर्षक बना दिया है। दार्शनिक तथा धार्मिक तत्त्वों का समावेश अकबर ने अपनी कविता में कुछ इस प्रकार किया है कि देखते ही बनता है। देखिये ईश्वर का अस्तित्व आप किस प्रकार प्रमाणित करते हैं:—

ग़ौर से देखो ज़मीनों-आस्मां को मुन्किरों[१]।
चल भी सकता बे खुदा के इन्तज़ाम इतना ॥

संसार से मनुष्य को कितना सबन्ध रखना चाहिये इस बात को देखिये अकबर ने निम्न लिखित पद्य में किस ढङ्ग से बताया है:—

'अकबर' से मैंने पूछा, "अय वाइज़े-तरीक़त
दुनियाये-दूं से रक्खूं मैं किस क़दर ताल्लुक़।"
उसने दिया बलाग़त से ये जवाब मुझको,
"अंग्रेज़ को है नेटिव से जिस क़दर ताल्लुक़" ॥

मज़हब तथा साइन्स की तुलना भी देखने लायक़ है---

सदाक़त[२] के निशां इस मिसरये-अकबर में मिलते हैं।
कलें साइन्स से चलती हैं दिल मज़हब से हिलते हैं ॥

ईश्वर की प्रार्थना से सबन्ध रखने वाली एक ग़ज़ल के भी शेर सुनाने लायक़ हैं।

खुदा का नाम रोशन है खुदा का नाम प्यारा है;
दिलों को इससे कुवव्त है ज़बानों को सहारा है ॥
उसी के हुक्म से है रात दिन कि ये कमी-बेशी ।
उसीके हुक्म का ताबे फ़लक पर हर सितारा है ॥
उसी के इन्तज़ामों-हुक्म से मौसम बदलते हैं।
वही है वक़्त पर जिसने हवाओं को उभारा है ॥

---

१. नास्तिकों। २. सच्चाई।

उसी के हुक्म से फल और ग़ल्ले की है पैदायश।
ज़मीं पर बदलियों से उसने पानी को उतारा है॥
ये जब तक साँस चलती है समझते हो हमीं हम हैं।
अजल[1] जब सर पै आ पहुंची तो फिर क्या बस हमारा है॥
अगर आमाल[2] अच्छे हैं तो पावोगे बड़े दर्जे।
समझ लो इम्तहां इस 'दारे-फानी'[3] में तुम्हारा है॥
बुज़ुर्गों का अदब अल्लाह का डर शर्म आंखों में।
इन्हीं औसाफ़[4] की निस्बत मज़ाहिब में इशारा है॥

उपनिषदों में ईश्वर को 'अज्ञेय' कहा गया है। हर्बर्ट स्पेन्सर और उसके अनुयायी 'अज्ञेय वादियों' के अनुसार भी ईश्वर अज्ञेय है अर्थात् नहीं जाना जा सकता। आपका भी यही विचार था। आपके विचार में सर्वव्यापक ईश्वर का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य की परिमित बुद्धि से बाहर था:—

किया है जिसने आलम को पैदा उसको क्या कहिये।
ख़िर्द[5] ख़ामोश है और दिल ये कहता है खुदा कहिये॥

ईश्वर के विषय में तर्क से भी काम नहीं लिया जा सकता क्योंकि:—

क्यों कर दलील[6] देख सके उस जमाल[7] को।
जिसका ख़याल बर्क़[8] गिराता है होश पर॥

इस कारण आप धार्मिक शास्त्राथों को व्यर्थ समझते थे। देखिये निम्न लिखित पद्य में आपने यह भाव किस सुन्दरता से प्रगट किया है:—

फ़लसफी तजरुबा करता था हुवा मैं रुख़सत।
मुझ से वो कहने लगा आप किधर जाते हैं॥
कह दिया मैंने हुवा तजरुबा मुझको तो यही।
तजरुबा हो नहीं चुकता है कि मर जाते हैं॥

---

१. मृत्यु। २. कर्म। ३. नश्वर संसार। ४. बुद्धि। ५. गुणों
६. युक्ति। ७. ज्योति। ८. बिजली।

इसके अतिरिक्तः—

महजब के ये मुबाहिस[1] निकले हैं हिस्ट्री से।
उनको है क्या तअ्ल्लुक वहदत की मिस्ट्री[2] से॥

अकबर अद्वैतवादी थे। किसी मजहब से तास्सुब नहीं रखते थे। आप कहते थेः—

आता है वज्द[3] मुझको हर दीन की अदा पर।
मसजिद में नाचता हूं नाकूस[4] की सदा पर॥

किन्तु आप उन लोगों के विरुद्ध थे जो धर्म की आड़ में शिकार खेलते हैं। सुनिये क्या कहते हैं:—

किसी को भी किसी से कुछ नहीं इस बाब में झगड़ा।
करो तुम ध्यान परमेशर का दिल को उसका दर्शन हो॥
मगर मुश्किल तो ये है नाम सब लेते हैं मज़हब का।
ग़रज़ लेकिन ये होती है जथा हो और भोजन हो॥

इस प्रकार का दिखावे का ढोंग आपको पसन्द नहीं ऐसे था मनुष्यों को आप दूर ही से प्रणाम करते थे:—

पंडित को भी सलाम है और मौलवी को भी।
मज़हब न चाहिये मुझे ईमान चाहिये॥

मज़हब और ईश्वर की ओर से लापरवाह रहने के कारण देखिये आपने कालिज के लड़कों के कैसी मीठी चुटकी ली है:—

मज़हब का हो क्योंकर इल्मो-अमल,
दिल ही नहीं भाई एक तरफ़।
किरकिट की खिलाई एक तरफ,
कालिज की पढ़ाई एक तरफ़॥
क्या ज़ौक़े-इबादत हो उनको,
जो मिस के लबों के शैदा हों।

१ शास्त्रार्थ। २ रहस्य। ३ ईश्वर-प्रेम में निमग्न हो जाना। ४ शंख।

हलवे-बहिश्ती एक तरफ़
होटल की मिठाई एक तरफ़ ॥

ईश्वर को भूले हुवे आज कल के नौकरी के उम्मीदवारों के विषय में भी एक शेर सुन लीजियेः—

मुसीबत में भी अब यादे-खुदा आती नहीं उनको।
दुआ मुंह से न निकली पाठकों से अर्ज़ियां निकलीं ॥

यूरुप में वैज्ञानिक उन्नति के साथ २ नास्तिकता के भाव भी बढ़ते जाते हैं। अपने देशवासियों को नास्तिकता के फन्दे से बचने की चेतावनी आपने बड़े ही अनुपम ढङ्ग से दी हैः—

भूलता जाता है यूरुप आसमानी बाप को।
बस खुदा समझा है उसने बर्क़[1] को और भाप को ॥
बर्क़ गिर जायगी एक दिन और उड़ जायगी भाप
देखा 'अकबर' बचाये रखना अपने आप को ॥

आप खुदा को खुश करना ही अपना सर्वोपरि कर्तव्य समझते थे। आपका कहना था कि यदि हम ईश्वर को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करेंगे तो आस्तिक अफ़सर स्वयं ही प्रसन्न हो जायेंगे।

तुम खुदा को खुश करो 'अकबर' खुशामद छोड़ कर।
बाखुदा हाकिम जो होगा खुद ही खुश हो जायगा ॥

आपके काव्य में नीति-विषयक शेर भी बहुत से हैं। यहां भी आपने 'हास्य' को हाथ से नहीं जाने दिया है। शराब की निन्दा में आप लिखते हैंः—

नफ्स[2] के ताबे हुवे ईमाव रुखसत हो गया।
वो ज़नाने में घुसे महमान रुख़सत हो गया ॥
मय[3] उन्होंने पी अब उनके पास क्योंकर दिल लगे।
जानवर इक रह गया इन्सान रुख़सत हो गया ॥

१. बिजली। २. वासना। ३. शराब

ठीक है। मनुष्य और जानवर में यही भेद होता है कि मनुष्य को भले बुरे का ज्ञान होता है और जानवर को नहीं। नशे की हालत में मनुष्य को भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता। इस कारण जानवर के समान ही हो जाता है।

देखिये आपने स्वार्थी वाक्-चतुर उपदेशकों के फन्दे से बचने की चेतावनी किन शब्दों में दी है:—

वो रोये बहुत स्पीचों में हिक्मत इसको कहते हैं।
मैं समझा खैरख्वाह उनको हिमाक़त इसको कहते हैं॥

कभी २ शान्त मनुष्यों को भी क्रोध आ जाता है। क्रोध आना तो प्राकृतिक है। दिल में मैल नहीं रखना चाहियेः—

गुस्सा आना तो है नेचरल[1] 'अकबर'।
लेकिन है शदीद[2] ऐब कीना[3] रखना॥

आजकल मैत्री दिखावे की रह गई है। अवसर आने पर मैत्री का लम्बा चौड़ा दम भरने वाले आंखें फेर लेते हैं। इस साधारण बात को अकबर ने निम्न लिखित शेर में प्रकट किया है, किन्तु फोनोग्राफ की उपमा देकर शेर में एक अजीब लुत्फ पैदा कर दिया है :—

क्या अजब हो गये मुझ से मेरे दमसाज[4] जुदा।
दौरे-फौनो में गले से हुई आवाज जुदा॥

देखिये अकबर का निम्न लिखित शेर कैसा सारगर्भित है:—

सवाब[5] कहता है मिल जाऊंगा कर उनकी मदद
छिपा हुआ मैं गरीबों की भूख प्यास में हूं॥

उपरोक्त शेर में अकबर ने धर्म का सार रख दिया है साधारण शब्दों में ऐसी गूढ़ बात कह जाना अकबर ही का हिस्सा थाः—

१. प्राकृतिक, २. सख्त, ३. द्वेष, ४. मित्र, ५. पुण्य

तेरे बाद 'अकबर' कहां ऐसी नज्में।
वो दिल ही न होंगे कि ये आह निकले ॥

४. समाज-सुधार।

यद्यपि अकबर पश्चिमी शिक्षा के विरोधी नहीं थे और अपने लड़के को भी विलायत पढ़ने के लिये भेजा था, किन्तु योरप की नास्तिकता तथा 'मैटीरियलिज्म' (Materialism) के बिलकुल विरुद्ध थे। आप इस बात के भी पक्ष में नहीं थे कि भारतीय अपनी चाल ढाल तथा रीति रस्म भूल जायें और सोलहों आने अंग्रेज़ी चाल ढाल पर चलने लगें। आपने अपनी कविता में योरोपीय सभ्यता की उन बातों की, जिन्हें वे दूषित समझते थे, खूब खुश्की उड़ाई है। योरोपीय सभ्यता पर लट्टू नये ढङ्ग के बाबू लोगों की भी आपने खूब ख़बर ली है। कहीं २ तो अकबर ने एक २ शेर में पूरे लेक्चर का मज़मून बन्द कर दिया है।

परदा

अकबर परदे के रिवाज के पक्ष में थे। देखिये आपने नीचे के दो शेरों में अपने पक्ष का किस निराले ढङ्ग से समर्थन किया है तथा विपक्षियों के कैसी चुटकी ली है:—

बेपरदा नज़र आईं जो कल चन्द बीबियां,
'अकबर' ज़मी में गैरते-कौमी से गढ़ गया॥
पूछा जब उनसे आपका परदा वो क्या हुआ,
कहने लगीं कि अक्ल पै मरदों की पड़ गया॥

स्त्री-शिक्षा

अकबर स्त्री-शिक्षा के विरोधी नहीं थे, किन्तु आप अंग्रेजी ढङ्ग की शिक्षा लड़कियों के लिए उचित नहीं समझते थे। आपका विचार था कि अंग्रेजी ढङ्ग की शिक्षा लड़कियों के आचार पर बुरा प्रभाव डालती है और उनको घरेलू काम काज तथा पति की ओर से उदासीन

बना देती है। निम्न लिखित पद्य में आपने आधुनिक शिक्षा-प्रणाली से शिक्षित लड़कियों का चित्र खींचा है:—

घर से जब पढ़ लिख के निकलेंगीं कुंवारी लड़कियां।
दिलकशो[1]-आजादो-खुशरु[2] साख्ता[3] परदाख्ता[4] ॥
ये तो क्या मालूम क्या मौके अमल[4] के होंगे पेश।
हां निगाहें होंगी मायल[5] उस तरफ़ बेसाख्ता[6] ॥
मग़रबीं तहज़ीब आगे चलके जो हालत दिखाये।
एक मुद्दत तक रहेंगे नौजवां दिल-वाख्ता[7] ॥
औजे[8] कौमी से शराफ़त का हुमा[9] गिर जायगा।
माकियां[10] से पस्ततर[11] दिखाई देगी फ़ाख्ता ॥
डाल देगा सीनये-ग़ैरत[12] सिपर[13] मैदान में।
तेरी[14] अबरु[15] ही नज़र आयगी हरसू आख्ता[16] ॥

एक और स्थान पर आपने लिखा है:—

१. तहज़ीबे-मग़रिबी में है बोसा तलक मुआफ़।
इससे अगर बढ़ो तो शरारत की बात है ॥

२. रुकिये अगर तो हंस के कहे एक मिसे-हसीं।
वैल मौलवी ये बात नहीं है गुनाह की ॥

अब ज़रा घरेलू काम-काज से उदासीनता के विषय में भी दो एक शेर सुन लीजिए:—

१. उनसे बीबी ने फ़क़त स्कूल ही की बात की।
ये न बतलाया कहाँ रक्खी है रोटी रात की ॥

१. चिताकर्षक २. सुन्दर ३. दुरुस्त ४. सुसज्जित ५. आकर्षित ६. आप ही आप ७. जिनका दिल पर से काबू जा चुका है ८. आकाश ९. एक जानवर का नाम है जो केवल हड्डी खाता है। कहा जाता है कि जिस आदमी पर इसका साया पड़ जाता है वह बादशाह हो जाता है। १०. घर की पली हुई मुर्गी ११. ज्यादा नीची १२. लज्जा १३. ढाल १४. तलवार १५. भृकुटी १६. लटकी हुई ॥

२. बीबी में जो तरज़े-मग़रबी हो तो कहो।
अहसान है ये जो मुझको शौहर समझो॥

अकबर के उपरोक्त पद्य पढ़कर स्वर्गीय सर सैयद अहमद का कथन याद आजाता है। एक बार आपने बातों २ में कहा था कि यदि अपनी पत्नी को प्रसन्न रखना चाहो तो दो बातों का ध्यान रक्खो। यदि पत्नी नई रोशनी की है तो उसके आचार पर आक्षेप न करो। वह जो करे करने दो। सदैव सन्तुष्ट रहेगी। और यदि पत्नी पुरानी रोशनी की है तो अपना आचार ठीक रक्खो।

अकबर का विचार था कि स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये जिससे वे अपनी गृहस्थी के काम काज अच्छी तरह कर सकें। उन्होंने लिखा है:—

तालीम लड़कियों की ज़रूरी तो है मगर।
'ख़ातूनेखाना'[1] हों वो सभा की परी न हों॥
ज़ीइल्मो[2] मुत्तक़ी[3] हों वले उनके मुन्तज़िम।
उस्ताद अच्छे हों मगर उस्तादजी न हों॥

देखिये आपने अपनी सम्मति किस अनुपम सुन्दरता के प्रगट की है। "उस्तादजी" का शब्द कैसा "विनोदपूर्ण" है

आधुनिक शिक्षा।

आजकल सरकारी स्कूलों में जिस प्रकार की शिक्षा लड़कों को दी जाती है उससे भी अकबर सन्तुष्ट न थे। असन्तुष्ट होने का सबसे बड़ा कारण यह था कि धार्मिक शिक्षा के सर्वथा अभाव के कारण आधुनिक स्कूलों तथा कालिजों में शिक्षित विद्यार्थी अपने धर्म तथा ईश्वर से विमुख होजाते हैं। विद्यार्थियों को सम्बोधन करके अकबर लिखते हैं:—

नये गमलों में पढ़ कर फूल जाना।
ख़ुदाओ-आख़िरत[4] को भूल जाना॥

१ घर की देवियां, २. विद्वान, ३ परहेज़गार,। ४ परलोक।

बहुत बेजा है ये वल्लाह 'अकबर' ।
ज़रा सुन लो तो फिर स्कूल जाना ॥

आधुनिक शिक्षा से प्रभावान्वित होकर बहुत से लड़के बड़ों का अदब लिहाज बिलकुल छोड़ देते हैं। इस विषय में भी एक शेर सुनिये :—

हम ऐसी सब किताबें क़ाबिले-ज़ब्ती समझते हैं।
जिन्हें पढ़ २ के लड़के बाप को ख़ब्ती समझते हैं ॥

आधुनिक कालिजों में शिक्षा प्राप्त युवकों पर सोलहों आने विदेशी सभ्यता का रङ्ग चढ़ जाता है। और क्यों न चढ़े:—

तिफ्ल में बू आये क्या मां बाप के अतवार की।
दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की ॥

कुछ स्कूलों तथा कालिजों में धार्मिक शिक्षा देने का भी प्रबन्ध होता है। किन्तु अकबर इस प्रबन्ध को यथेष्ट नहीं समझते थे। आपका कहना था :—

नई तहज़ीब में भी मज़हबी तालीम शामिल है।
मगर यूंही कि जैसे आबे[1] ज़मज़म[2] मय में दाखिल है ॥

भारतीय युवकों के जीवन का बड़ा भाग इस ही प्रकार की दूषित शिक्षा प्राप्त करने में नष्ट हो जाता है:—

बहारे-उम्र गुजरी सालहाये-इम्तहानी में।
हमें तो पास ही की फ़िक्र ने पीसा जवानी में ॥

इतना बहुमूल्य समय तथा धन-व्यय किसलिये किया जाता है? यथार्थ ज्ञान या कोई बड़ा ओहदा पाने के लिये नहीं। बड़े ओहदे तो अधिक संख्या में विदेशियों ही के लिये सुरक्षित हैं। हम तो क्लर्की पाना ही अहोभाग्य समझते हैं! साधारण क्लर्की के लिये इतनी मुसीबत!

---

[1]. पानी [2] गङ्गा के समान मुसलमानों की एक पवित्र नदी

मज़हब छोड़ो मिल्लत छोड़ो सूरत बलो उम्र गंवावो।
सिर्फ़ क्लर्की की उम्मीद और इतनी मुसीबत तोबा तोबा॥

खेद की बात तो यह है कि इतनी आराधना करने पर भी क्लर्की रूसी ही रहती है:—

हैं अमल अच्छे मगर दरवाजये-जन्नत[1] है बन्द।
कर चुके हैं पास लेकिन नौकरी मिलती नहीं॥

अतएव—

ख्वाहाने-नौकरी न रहें तालिबाने-इल्म।
क़ायम हुई है राय ये अहले-शऊर की॥
कालिज में धूम लच रही है पास पास की।
ओहदों से सदा आ रही है दूर दूर की॥

किन्तु नौकरी न करें तो क्या करें? आधुनिक शिक्षा तो क्लर्की के सिवाय और किसी काम का बनाती ही नहीं। एकमात्र साहियक शिक्षा से रोटी का प्रश्न हल नहीं हो सकता। संसार शिल्प-वाणिज्य के मैदान में कुलांचें मारता चला जाता है, किन्तु हम अपनी पुरानी ही डगर पर हैं:—

डार्विन के वही मकतब का सबक है अब तक।
वही बन्दर वही लंगूर चला जाता है॥

अबतो हमको समझ आनी चाहिये तथा शिल्प-वाणिज्य की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये। देखिये इस प्रकार की शिक्षा का समर्थन अकबर निम्न लिखित शेर में किस अनुपम सुन्दरता के साथ करते हैं:—

हमारे खेत से ले जाते हैं बन्दर चने क्यों कर।
ये बहस अच्छी है इससे हजरते आदम बने क्योंकर॥

आपका विचार था कि आधुनिक योरोपीय सभ्यता में बाहरी टीप

---

१. स्वर्ग के द्वार॥

टाप ही अधिक है। देखिये आपने इस भाव को निम्न लिखित शेर में किस उत्तमता से प्रकट किया है:—

हमको नईरविश[1] के हलके[2] जड़क रहे हैं।
बातें तो बन रही हैं और घर बिगड़ रहे हैं॥
तर्जे-मग़रिब में नहीं है शर्ते-दिल बहरे-अमल।
चल खड़े होते हैं स्टीमर हवा हो या न हो॥

स्टीमर का उदाहरण कितना उपयुक्त है। एक और स्थान पर आप लिखते हैं:—

कमैटियों से सदा उठी है ज़माना बदला है तुम भी बदलो।
मगर हमारा तो क़ौल ये है खुदा वही है तो हम वही हैं॥

किन्तु उपरोक्त पद्य से अकबर का यह आशय नहीं समझना चाहिये कि समय के साथ २ हम कुछ भी परिवर्तन न करें:—

तुम शौकसे कालिज में फलो पार्क में फूलो,
जायज़ है गुब्बारों पै चढ़ो चर्ख़[3] पै झूलो।
पर एक सनखु बन्दये-आजिज़ का रहे याद,
अल्लाह को और अपनी हक़ीक़त को न भूलो।

अकबर उन आदमियों में नहीं थे जो किसी बात का इस ही कारण विरोध करते हैं कि वह नई है। आपने एक स्थान पर लिखा है:—

शेख़ साहब का तास्सुब[4] है जो कहते हैं।
ऊंट मौजूद है फिर रेल पै क्यों चढ़ते हो॥

आपने अपने लड़के को विलायत पढ़ने के लिये भेजा था। किन्तु इस ही बात से डरा करते थे कि कहीं लड़का बलायत जाकर सरस्वती की आराधना करने के स्थान में कामदेव की आराधना न करने लगे।

कमरे में जो हंसती हुई आई मिसे-रैना,
टीचर ने कहा इल्म की आफ़त है तो ये है।

---

१. चाल। २. घेरे। ३. आकाश। ४. पक्षपात।

पेचीदा मसायल के लिए जाते हैं इंग्लैण्ड,
जुल्फों में उलझ आते हैं शामत है तो ये है ॥

४. राजनिति।

अकबर सरकारी नौकर होने के कारण देश के राजनैतिक कार्यों में भाग नहीं लेते थे। स्पष्ट रूप से विवादग्रस्त समस्याओं पर अपने विचार भी प्रकट नहीं कर सकते थे। किन्तु उन के पास 'जराफ़त' का नुस्खा ऐसा था कि हंसी दिल्लगी के बहाने बाण मार जाते थे। कड़वी से कड़वी दवा दे देते थे और उस पर हास्य-रस का इतना मीठा चढ़ा देते थे कि खाने वाला कड़वी गोलियो को निगल जाने पर भी होंठ चाटता रह जाता था। एक स्थान पर आपने स्पष्ट रूप से लिखा है:—

लग़ज़िशें मद्दे-ज़राफत में जो कुछ आयें नजर।
दोस्तों से इल्तजा ये है करें उनको मुआफ़ ॥
सर्द मौसम था हवाएं चल रहीं थी बर्फ़-बार।
शाहिदे मानी ने ओढ़ा है ज़राफ़त का लिहाफ़ ॥

उपरोक्त पद्य का भावार्थ यह है कि 'ज़राफत' में जो कुछ कमी या अपूर्णतायें रह गई हों उनके लिये मित्रगण क्षमा करें। बात यह है कि मौसम जाड़े का था अर्थात् राजनैतिक समस्याओं ने विकट रूप धारण कर रक्खा था और ठण्डी हवाएं चल रही थीं अर्थात् सरकारी पकड़-धकड़ ज़ोरों पर थी। इस कारण अर्थ रूपी 'माशूक़' या 'नायिका' को 'ज़राफ़त' या 'हास्य' का लिहाफ़ ओढ़ना पड़ा है। आशय यह कि सारी बातें हास्य के परदे में कही गई हैं। यही कारण था कि अकबर सरकारी नौकर होते हुए भी सत्य के पक्ष में तथा सरकार के विपक्ष में ऐसी २ बातें कह गये हैं जिनका कहने के लिये बड़े साहस की आवश्यकता है।

मेरा ये शेर 'अकबर' एक दफ्तर है मआनी का।
कोई समझे न समझे हम तो सब कुछ कह गुजरते हैं ॥

अर्थात् अय अकबर मेरा यह पद गूढ़ रहस्यों की एक पुस्तक है। चाहे कोई समझे या न समझे किन्तु हम तो सब कुछ कह डालते हैं।

अकबर का अधिकांश जीवन सरकारी नौकरी में बीता। साधारण-तया सरकारी नौकरों में—विशेषतया उच्च पदाधिकारियों में—मानसिक गुलामी आ जाती है। किन्तु आप इस रोग से सर्वथा मुक्त थे:—

शागिर्दे-डारविन तो खुदा ही ने कर दिया।
'अकबर' मगर नहीं है मदारी के हाथ में॥

अकबर का विचार था कि भारतवर्ष के लिए अंग्रेजों का राज्य हित-कर नहीं हो सकता। अंग्रेजी राज्य से देश-वासियों का शासन—चाहे हिन्दुओं का हो या मुसलमानों का—कहीं अच्छा है। देखिये आपने इस विचार को किस मजे के साथ व्यक्त किया है:—

धुन देश की थी जिसमें गाता था एक दिहाती।
बिसकुट से है मुलायम पूरी हो या चपाती॥

बिस्कुट, पूरी तथा चपाती से अंग्रेज, हिन्दू तथा मुसलमानों के शासन का अभिप्राय है।

राजनैतिक अधिकार पाने के लिए आप माडरेटों के समान खुशा-मद या शिकायत से काम लेना समय का वृथा नष्ट करना समझते थे। आप एक प्रसिद्ध अंग्रेज राजनीतिज्ञ के निम्नलिखित कथन को यथा-र्थता को पूर्णरूप से अनुभव करते थे—

In politics from a promise it is meant that it will not be fulfilled, unless pressed.

अर्थात् राजनीतिमें वादे का यह मतलब है कि 'वादा उस समय तक पूरा न किया जायगा जब तक पूरा करने के लिए विवश ही न हो जायें।' इस ही कारण आपने लिखा है:—

निहायत काबलियत से मुझे साबित किया मुरदा।
मुनासिब दाद देना है मुझे यारब कि रोना है॥
निदा आई मुनासिब है कि जीना अपना साबित कर।
खुशामद या शिकायत दोनों ही में वक्त खोना है।

राजनैतिक क्षेत्र में केवल जिह्वा बनना व्यर्थ है यहां तो हाथ बनने से काम चलता है—

ज़ोरे-बाज़ू नहीं तो क्या स्पीच।
हाथ भी दे खुदा ज़बां के साथ॥

जब तक हाथ में शक्ति नहीं, व्यर्थ के आलाप से क्या लाभ? रकाबियों की झन्कार उम्र भर सुनते रहिये। किन्तु इससे कहीं भूख मिट सकती है?

रिज़ोल्यूशन की शोरिश[1] है मगर उसका असर ग़ायब।
प्लेटों की सदा सुनता हूं और खाना नहीं आता।

आप नाम-मात्र के सुधारों से—जैसे कौंसिलों में भारतीय सभासदों की संख्या कुछ बढ़ा दी या भारतीयों को दो चार ऊंचे पद और दे दिये—सन्तुष्ट नहीं थे। आपके विचारानुसारः—

हमदर्द हों सब ये लुत्फे आबादी है।
हमसाया भी हो शरीक तब शादी है॥
तसकीन है जब कि खुदा पर हो तकिया?
क़ानून बना सकें तब आज़ादी है॥

अंग्रेजों के बङ्गलों की खाक छानना भी आप जातीय उन्नति की दृष्टि से व्यर्थ समझते थेः—

क़ौम के हक़ में तो उलझन के सिवा कुछ भी नहीं।
सिर्फ़ आनर के मजे उनकी मुलाकात में हैं॥

ठीक भी है। ख़िताब के सिवा और मिलता भी क्या है?

स्वराज्य

स्वराज्य-आन्दोलन की आरम्भिक अवस्था में आपने लिखा थाः—

जब ये समझे थे परहेज जरूरी है इन्हें।
वादा बच्चों से मिठाई का मुनासिब ही न था॥

---

१. आवाज़।

आप ही ने तो किया 'केक' का जिक्रे-शीरीं,
वरना इस चीज का इनमें कोई तालिब ही न था ॥

उपरोक्त पद्यों का अर्थ साफ है। 'परहेज' शब्द से कवि ने प्रकट किया है कि अधिकारीवर्ग नहीं चाहते कि भारतवासियों को 'होमरूल' अर्थात् 'स्वराज्य' मिले। 'बच्चों से मिठाई के वादे' की उक्ति बहुत ही व्यङ्गपूर्ण है। स्वराज्य-आन्दोलन की प्रारम्भिक अवस्था में स्वराज्य के अर्थ में होमरूल शब्द ही का प्रयोग किया जाता था। 'होमरूल' अंग्रेजी शब्द है। इस ही कारण कवि ने 'होमरूल' के लिये 'केक शब्द का प्रयोग किया है। किन्तु साथ ही साथ 'जिक्र' के साथ 'शीरीं' लगाकर इस बात को भी प्रकट कर दिया है कि 'होमरूल' देश के लिये आवश्यक है।

देखिये भारतवर्ष की दशा का आपने कैसा वास्तविक तथा मार्मिक चित्र खींचा है—

ये बात गलत कि दौरे-इस्लाम है हिन्द,
ये झूंठ कि मुल्के-लछमनो-राम है हिन्द।
हम सब हैं मुती वो खैरख्वाहे-इङ्गलिश,
यूरुप के लिये बस एक गोदाम है हिन्द ॥

भावार्थ यह कि न तो अब भारतवर्ष इसलाम का घर है और न राम-लक्ष्मण ही का देश है। अब तो यहां अंग्रेज जाति के आदमी और उनके शुभचिन्तक रहते हैं और भारतवर्ष यूरुप का गोदाम बना हुवा है।

अकबर ऐसे नेताओं को बिलकुल पसन्द न करते थे जो ऊपर से तो क़ौमी ख़िदमत का ढोंग रचते रहते हैं; किन्तु वास्तविक उद्देश्य यह होता है कि कौन्सिलों के मेम्बर हो जायें; ख़िताब हासिल करलें या अपने संबन्धियों को सरकारी नौकरियां दिला दें। ऐसे नेताओं को संबोधन करके आप कहते हैं:—

गुम की थी मैंने राह मुसीबत यही थी सख्त।
इस पर हुआ ये क़हर तुम ऐसे खिज़र मिले।
बातें भी मुझसे कीं मेरी ख़ातिर भी की बहुत।
लेकिन मजाल क्या जो नज़र से नज़र मिले॥
किससे मैं पूछता गुलो-बुलबुल की सरगुज़श्त।
दो चार वर्ग खुश्क तो दो चार तर मिले॥

देखिये निम्न लिखित शेर में आपने एकमात्र नाम के इच्छुक लीडरों के कैसी चुटकी ली है:—

क़ौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
लीडर को ग़म बहुत है मगर आराम के साथ॥

बहुत से वकील वकालत में अकृतकार्य होकर उदर-पूर्ति के लिये लीडरी के मैदान में आ जाते हैं। ऐसे लीडरों के विषय में भी कुछ सुन लीजिये:—

मवक्किल छुटे उनके पञ्जे से जब।
तो बस कौम-मरहूम के सर हुवे॥
पपीहे पुकारा किये 'पी' कहां;
मगर वो तो प्लीडर (Pleader) से (Leader) लीडर हुवे।

पपीहा, पी, प्लीडर तथा लीडरशब्दों ने उपरोक्त शेर में अजब जान डाल दी है। अंग्रेजी शब्द Pleader (वकील) में से जब 'P' निकाल लेते हैं तो Leader (नेता) बाकी रह जाता है।

उस समय की कांग्रेस को लक्ष्य में रख कर, जब वह कामरेडों के हाथ में थी, आप लिखते हैं:—

हो दिसम्बर में मुबारिक ये उछल कूद आपको।
खून मुझ में भी है लेकिन मुझको फागन चाहिये॥

आज कल की कौन्सिलें एक प्रकार से खिलौना-मात्र हैं। गवर्नर या वाइसराय को अधिकार है कि सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुवे महत्त्वपूर्ण से महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव को रद करते:—

एक दिल्गी है वक्त गुज़रने के वास्ते।
देखो तो मेम्बरों के ज़रा हेर फेर को॥
ऐसी कमेटियों से है फल का उमीदवार।
अकबर दरख्त समझा हैं पत्तोंके ढेर को॥

आप कौन्सिलों को व्यर्थ ही नहीं प्रत्युत् गुलामी को जंजीर और शिकारी का फन्दा समझते थे:—

क़ौम के दिल में खोट है पैदा।
अच्छे अच्छे हैं वोट पै 'शैदा॥
भाई भाई में हाथापाई।
सैल्फ गवर्नमैंट आगे आई॥
पांव का होश अब फ़िक्र न सर की।
वोट की धुन में बन गये फिरकी॥

निम्न लिखित शेरों में तो अकबर ने आधुनिक कौंसिलों का खोखलापन बिल्कुल ही स्पष्ट रूप से प्रगट कर दिया है:—

नेटिव है नमूद ही का मौहताज।
कौंसिलतो है उनकी जिनका है राज॥
कहते जाते हैं या इलाही।
सोशल हालत की है तबाही॥
हम लोग जो इसमें फंस रहे हैं।
अग़यार भी दिल से हंस रहे है॥
दरअसल न दीन है न दुनिया।
पिंजरे में फुदक रही है मुनिया॥
स्कीम का झूलना वो झूलें।
लेकिन ये क्यों अपनी राह भूलें॥

सन् १९१४ ई० में योरोपीय महायुद्ध आरम्भ हुवा। आपने समाचार पाते ही एक ग़ज़ल लिखी जिसका एक मिसरा यह था:--

बहम्द अल्लाह! अब खूने शहीदां रंग लाया है।

जिस समय यह ग़ज़ल लिखी गई थी अङ्गरेज़ लोग लड़ाई में सम्मिलित नहीं हुवे थे। इस कारण प्रत्यक्ष है कि कवि का संकेत अङ्गरेज़ों की ओर नहीं हो सकता था। किन्तु 'चोर की डाढ़ी में तिनका' की कहावत के अनुसार अफ़सरों ने यह समझा कि अकबर का इशारा अङ्गरेजों ही की ओर है। इस कारण अकबर पर कड़ी दृष्टि पड़ने लगी। अकबर ने इस बात की घोषणा कर दी कि अब मैं कविता नहीं लिखूंगा। किन्तु शराबी की तोबा के समान प्राकृतिक कवि की तोबा कभी अधिक काल तक नहीं ठहर सकती। महाकवि ग़ालिब के कथनानुसार 'छुटती नहीं है मुंह से यह काफ़िर लगी हुई'। ज़ाहिर में तो अकबर ने शेर कहना छोड़ दिया, किन्तु चुपके २ शेर लिखते रहे और अपने अभिन्न-हृदय मित्रों को सुनाते रहे। इस समय के लिखे हुए दो एक शेर भी सुन लीजियेः—

[१]

हुक्म अकबर को मिला है कि न लिक्खो अशआर।
ख्वाजा हाफ़िज़ भी निकाले गये मयखाने से॥

[२]

सीने इधर ऐसे कि सहें जोरे-रफ़ल भी।
कान उनके वो नाज़ुक कि गरां मेरी ग़ज़ल भी॥

महात्मा गांधी के असहयोग (Non Co-operation) के सिद्धान्त से आप की पूर्ण सहानुभूति थी। आपकी ताड़नेवाली निगाह बहुत पहिले ही ताड़ गई थी कि शिक्षा तथा सभ्यता के नाम पर जितनी सरकारी संस्थायें हैं सब का यही आशय है कि हम में से जातीयता के भाव जाते रहें और उन्हीं के इशारों पर नाचने लगेंः—

उन्हीं के मतलब की कह रहा हूं, ज़बान मेरी है बात उनकी।
उन्हीं की महफ़िल संवारता हूं, चिराग़ मेरा है रात उनकी॥
फ़क़त मेरा हाथ चल रहा है, उन्हीं का मतलब निकल रहा है।

उन्हीं का मज़मून उन्हीं का काग़ज़, क़लम उन्हीं का दवात उन्हीं की ॥

आपका विचार था कि यदि यही दशा रही तो जिनके अन्दर जातीयता के भाव बने हुवे हैं उनके अन्दर से भी शीघ्र ही लुप्त हो जायेंगे:—

वो इसको महवे-कलीसा बनाके छोड़ेंगे।
इस ऊंट को ख़रे-इसा बनाके छोड़ेगे ॥
करेंगे शौक़ रे मुसलिम ग़िज़ा मय दाख़िल।
शराब को भी हरीसा बनाके छोड़ेगे ॥
कहा ये शेख से अकबर ने रोक अपनी ज़बां।
कि तुझको भी वे मुझीसा बनाके छोड़ेंगे

अंग्रेजी शिक्षा के विषय में आपका विचार था:—

सय्याद हुनर दिखलायें अगर सब मुमकिन हैं।
बुलबुल के लिए क्या मुशकिल है उल्लू भी बने और खुश भी रहे ॥

बहुत से लोगों का विचार है कि अंग्रेजी शिक्षा के कारण हिन्दू-मुसल्मानों की पारस्परिक फूट बढ़ती जाती है। आपका भी यही विचार था। देखिये आपने इस विचार को किस अनुपम ढंग से व्यक्त किया है:—

नज्द में भी मग़रिबी तालिम जारी हो गई।
लैलओ-मजनूं में आख़िर फौजदारी हो गई ॥

आपका विश्वास था कि भारतवर्ष की अधोगति का दायित्व सरकार ही पर है—

लेगये घसीट के मुझ को परेड पर।
तैयार हो रहा था मैं जन्नत के वास्ते ॥

आप यह भी जानते थे कि जब तक भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी में रहेगा उन्नति नहीं कर सकता:—

दस्तो-पा-बस्ता[1] हूं मैं जाहिर कोई गुन क्या करूं।
दूसरों के बस में हूं फ़िक्रे-तमद्दुन[2] क्या करूं ॥

१. हाथ पांव बंधा हुआ। २. राज्य-प्रबन्ध पर विचार

एक और स्थान पर आपने लिखा है:—

दाने का है हक़े[1] नश्वोनुमा,[2] इससे तो मुझे इंकार नहीं।
लेकिन ये बताओ मुझको जरा, वो खेत में है या पेट में है ॥

महात्मा गांधी के अनुसार आप कौन्सिलों से बिल्कुल दूर रहने के पक्ष में थे। स्वराज्य-वादियों का यह विचार, कि कौन्सिलों को तोड़ने के लिये कौन्सिलों में जाना चाहिये, आप को पसन्द न था। सुनिये आप क्या कहते हैं:—

माना कि पढ़ोगे वां पहुँच कर लाहौल[3]।
जाना ही ज़रूर क्या है शैतां की तरफ़ ॥

महात्मा गान्धी के समान आप ईश्वर के न्याय तथा दया पर भी पूर्ण विश्वास रखते थे। इस विषय को लेकर आपने एक पूरी ग़ज़ल कह डाली है:—

मसजिद में खुदा खुदा किये जावो।
मायूस न हो दुआ किये जावो ॥
हरगिज़ न 'क़ज़ा करो'[4] नमाज़ें,।
मरते मरते अदा किये जावो ॥
समझो ये वक़्ते-इम्तहां है।
हां भी जो सितम वफ़ा किये जावो ॥
कितना ही हो वक़्ते-बेहिजाबी[5]।
तुम पैरविये[6]-हया[7] किये जायो ॥
उम्मीदे-शफ़ा[8] खुदा से रक्खो।
क्यों तर्क[9] करो दवा किये जायो ॥

१. अधिकार। २. विकास। ३. भाग शैतान। ४. छोड़ो। ५. बेशर्मी का वक़्त। ६. अनुगमन्। ७. शर्म। ८. आराम। ९. छोड़ना।

आपके विचारानुसार तो अंग्रेजों के साथ सहयोग हानिप्रद ही नहीं वरन् एक प्रकार से असंभव था—

क्या हो बिनाये-उल्फ़त आख़िर मुनासबत क्या ।
मैं ख़ाके-बेकसी पर वो तख्ते-सल्तनत पर ॥

किन्तु आप दिखावे का असहयोग पसन्द नहीं करते थे । आपका कहना था कि यदि पब्लिक में आने जाने के लिये गाढ़े के कपड़े बनवा लिये और दिल में पश्चिमीय सभ्यता का दम भरते रहे तो इस से कुछ लाभ न होगाः—

हुस्ने-बुत दैर[1] में लिये जाता है ।
क्या नतीजा है बिरहमन से खिंचे रहने का ॥

इसही प्रकार असहयोग के समर्थन में आपके बहुत से शेर उद्धृत किये जा सकते हैं । मरने से कुछ दिन पहिले आपने एक पूरा रिसाला 'गान्धी नामा' के नाम से कह डाला था । महात्मा गान्धी के विषय में आपकी सम्मति थीः—

गांधी में सब भलाई लेकिन वो महज़ बे बस ।
साहब में सब बुराई लेकिन वो खूब चौकस ॥

महात्मा गान्धी से एक बात में आपका मत-भेद था । महात्मा जी केवल आत्मबल पर भरोसा रखते थे किन्तु आप शारीरिक बल को काम में लाने के भी विरुद्ध नहीं थे । आपके निम्न लिखित शेरों से यही बात झलकती हैः—

खूब ये बात कही उनसे पुकारो उसको ।
बद्दुआ सांप को क्या देते हो मारो उसको ॥

एक और स्थान पर इससे भी साफ़ शब्दों में लिखते हैं:—

क़सीदे से न चलता है न ये दोहे से चलता है ।
समझलो खूब कारे-सल्तनत लोहे से चलता है ॥

---

१. मन्दिर ।

फिर भी आप असहयोग रूपी अस्त्र पर बहुत कुछ भरोसा रखते थेः—

जो पूछा ' क्यों कमर इस मनज़िले तारीक में बाँधी । '
ज़बाने हज़रते-शौकत से बोले हज़रते-गाँधी ॥
'मबाश अय रह-नवरदे-इश्क ग़ाफ़िल अज़ तपीदन हा ।
कि दर आख़िर बजाय मीं रसद अज़ खुद रमीदन हा ॥

अर्थात् यह पूछने पर कि आप इस अन्धकारमय पथ पर चलने के लिये क्यों कटिबद्ध हो गये हैं, महात्मा गांधी जी ने मौलाना शौकतअली के शब्दों में यह उत्तर दिया, 'ए, प्रेम-पथ के पथिक तू तड़पने से मत चूक क्योंकि इस पथ पर अपने आपको बिल्कुल भूल जाने वाला ही अन्त में अपने इष्ट स्थान पर पहुँच जाता है ।

पाठक शायद प्रश्न करेंगे कि जब अकबर सत्याग्रह के सिद्धान्त के इतने अधिक पक्ष में थे तो फिर आपने सत्याग्रह-संग्राम में भाग क्यों नहीं लिया ? रण-क्षेत्र में क्यों नहीं कूदे ? केवल मौखिक सहानुभूति ही क्यों प्रकट करते रहे ? इस प्रश्न का उत्तर हम अकबर ही के शब्दों में देना चाहते हैंः—

उधर है जेल की ज़हमत[1] इधर है क़ौम की लानत ।
उधर आराम जाता है इधर ईमान जाता है ॥
ब मजबूरी वो माज़ूरी[2] शरीके-कैम्प है 'अकबर' ।
मगर जिसको बसीरत[3] है उसे पहचाना जाता है ॥

इन सब बातों पर ध्यान रखते हुवे आपका सत्याग्रह-संग्राम में प्रत्यक्ष रूप से भाग न लेना क्षम्य समझा जा सकता है । किन्तु ऐसा होते हुवे भी आप सत्याग्रह का विरोध करने वाले सरकार के खुशामिमिदियों को चेतावनी दे गये हैंः—

१. कष्ट । २. विवशता । ३. वास्तविक ज्ञान ।

कम्पू का जो साथी हो तो घर उसका मिटेगा ।
बङ्गले में हैं वो और ये मौहल्ले में पिटेगा ॥

अकबर का विचार था कि देश के नेता राजनीति के विद्वान् ही होने चाहियें। ऐरे गैरे नत्थू खैरे का नेता बन जाना आपको नहीं भाता था। इस ही कारण आप यह उचित न समझते थे कि मौलवी लोग राजनैतिक विषयों पर भी 'फ़तवे' देने लगें। मौलवियों को धार्मिक क्षेत्र में काम करना चाहिये और राजनीतिज्ञों को राजनीति के क्षेत्र में। देखिये इस भावको आपने निम्न लिखित पद्य में किस सुन्दरता के साथ प्रगट किया है:—

नई रोशनी का हुवा तेल कम ।
हकूमत ने उससे किया मेल कम ॥
इधर मौलवी 'कस-म-पुरसी में थे'[1] ।
न आफ़िस में थे और न कुरसी में थे ॥
ये ठहरी कि आपस में मिल जाइये ।
सयासी[2] कमैटी में पिल जाइये ॥
इसी रोशनी का है बस ये जहूर ।
खुदाजाने जुल्मत[3] है इसमें कि नूर[4] ॥

भावार्थ यह कि एक ओर तो नई रोशनी वाले अर्थात् अंग्रेजी परीक्षा पाये हुवे नौकरियां न मिलने के कारण रुष्ट थे। दूसरी ओर मौलवी भी नाराज़ थे क्यों कि सरकार में उनकी कोई बात न पूछता था। अन्त में दोनों ने मिल कर यही ठानी कि सरकार के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया जाय। ईश्वर ही जाने इस मेल का क्या परिणाम निकलेगा ?

---

१. कोई पूछने वाला न था। २. राजनैतिक। ३. अन्धकार। ४. प्रकाश।

हिन्दू-मुस्लिम-एकता

अकबर देश के हित के लिये हिन्दू-मुसलमानों की एकता को बहुत आवश्यक समझते थे। हिन्दू तथा मुसलमानों को चाहिये कि आपका निम्न लिखित उपदेश सदैव ध्यान में रक्खें:—

कहता हूँ हिन्दू वो मुसलमां से यही।
अपनी अपनी रविश[1] पै तुम नेक रहो॥
लाठी है हवाये-दहर[2] पानी बन जाओ।
मौजों[3] की तरह लड़ो मगर एक रहो॥

कैसे मार्मिक शब्द हैं। उपमा कैसी अनुपम है। हिन्दू-मुस्लिम एकता का पक्षपाती होने के कारण अकबर कुरबानी तथा हिन्दी-उर्दू का झगड़ा उठाने वालों के विरुद्ध रहते थे। देखिये निम्न लिखित पद्य में अकबर ने इस प्रकार का झगड़ा उठाने वालों के कैसी चुटकी ली है:—

हम उर्दू को अरबी क्यों न करें, वो उर्दू को भाषा क्यों न करें।
झगड़े के लिये अखबारों में, मजमून तराशा क्यों न करें॥
आपस में अदावत[4] कुछभी नहीं, लेकिन एक अखाड़ा कायम है।
जब इससे फलक का दिल बहले, हम लोग तमाशा क्यों न करें॥

अकबर न तो मुसलमान मौलवियों के समान उर्दू में बड़े बड़े अरबी फ़ारसी शब्द ठूंसने के पक्ष में थे और न आर्यसमाजियों के समान उर्दू में कठिन संस्कृत शब्दों का प्रयोग ही उचित समझते थे। आप चाहते थे कि उर्दू उर्दू ही रहे। इसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला एक और पद्य भी सुनने लायक़ है:—

१. चलन। २. संसार की हवा। ३. लहर। ४. दुश्मनी

झगड़ा कभी गाय का जबां की कभी बहस ।
है सख्त मुज़िर ये नुसखये गावज़बां ।।

भावार्थ यह है कि आज कल जहां देखो हिन्दू-मुसलमानों में झगड़े ही दीखते हैं । कहीं क़ुरबानी का झगड़ा है, कहीं हिन्दी-उर्दू का झगड़ा है । किन्तु यह गावज़बां का नुसख़ा अर्थात् गाय तथा भाषा के झगड़े दोनों के लिये हैं बहुत अहितकर । दूसरे मिसरे के 'गावज़बां' शब्द ने शेर में विशेष चमत्कार पैदा कर दिया है । गावज़बां के अर्थ गाय तथा भाषा के हैं, किन्तु साथ ही साथ गावज़बां एक प्रसिद्ध यूनानी औषधि का भी नाम है ।

गतवर्षों में दशहरा और मौहर्रम एक साथ होने पर पण्डित मदन-मोहन मालवीय जी के कहने से आपने जो पद्य लिखे थे वे भी सुनने योग्य हैं:—

मुहर्रम और दशहरा साथ होगा ।
निर्वाह उसका हमारे हाथ होगा ।।
खुदा ही की तरफ़ से है ये संजोग ।
तो बाहम क्यों न रक्खें सुलह हम लोग ।।

संजोग को ईश्वर की ओर से बताकर अकबर ने आस्तिक हिन्दू मुसलमानों को आपस में मेल रखने के लिये कैसा प्रबल कारण दिया है ।

अब तक भारतवर्ष की राजनैतिक समस्याओं पर ही अकबर के विचार प्रगट किये गये हैं, किन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि अकबर की दृष्टि भारतवर्ष की चार दीवारी से बाहर नहीं गई थी । आपने अन्तर्जातीय समस्याओं पर भी बहुत कुछ लिखा है ।

अंग्रेज़ ऐतिहासिक इतिहास लिखते समय बहुधा उन घटनाओं को छिपा जाते हैं या बदल देते हैं जिनसे अंग्रेज़ों की क्रूरता प्रगट होती है और अन्य जातिवालों पर ऐसी घटनाओं का, जिनका अस्तित्व केवल उनके मस्तिष्क ही में होता है, उत्तर-दायित्व डाल देते हैं। काल कोठरी की घटना इसी प्रकार को घटनाओं में है। अस्तु। अंग्रेज़ ऐतिहासिकों का मत है कि इसलाम धर्म तलवार के ज़ोर से फैला है। देखिये इस इलज़ाम का जवाब अकबर ने किस मज़े से दिया हैः—

अपने ऐबों की न कुछ फ़िक्र न परवा है।
ग़लत इलज़ाम बस औरों पै लगा रक्खा है॥
यही फ़रमाते रहे तेग़[1] से फैला इसलाम।
ये न इरशाद हुवा तोप से क्या फैला है॥

अर्थात् अपने अवगुणों पर भी दृष्टि डालिये। या दूसरों ही पर झूंठा अभियोग लगाना आता है। आप यह तो कहते रहे कि इसलाम धर्म तलवार से फैला है किन्तु यह न बताया कि तोप से क्या क्या फैला है। निर्बल जातियों की स्वतन्त्रता हरण करने का भी तो कुछ वर्णन कीजिये।

पश्चिमीय जातियां पहिले तो अस्त्र-शस्त्र द्वारा निर्बल जातियों की स्वतन्त्रता छीन लेती हैं और फिर शिक्षा देने तथा सभ्यता सिखाने के बहाने उनके अन्दर से जातीयता के भाव मिटाने की चेष्टा करती हैं। इस भाव को देखिये अकबर ने किस सुन्दरता से तथा कितने थोड़े शब्दों में व्यक्त कर दिया हैः—

तोप खिसकी प्रोफेसर पहुँचे।
जब बिसोला हटा तो रन्दा है॥

---

१ तलवार।

यदि कोई पूर्वीय जाति अपनी उन्नति करना चाहती है तो वह जाति यूरुप की दृष्टि में कांटे के समान खटकने लगती है। उसके मार्ग में अनेकों रुकावटें डालने का प्रयत्न किया जाता है। पूर्वीय जातियों की इस हृदय-विदारक दशा का अकबर ने ऐसा विनोद-पूर्ण चित्र उतारा है कि हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है सुनिये क्या कहते हैं:—

सर-अफ़-राज़ी[1] हो ऊंटों की तो गरदन काटिये उनकी।
अगर बन्दर की बन आये तो फ़ैजे-[2] इरतफ़ा[3] कहिये॥

अकबर के राजनैतिक विचारों को पाने से मालूम होता है कि आप बड़े ही निर्भीक वक्ता थे। सरकारी नौकर होते हुये भी इस प्रकार के विचार प्रगट कर जाना आपही का काम था:—

जब आंख को खुलने में हो झपक, जब मुंह में ज़बां जम्बिश[4] से डरे।
इस क़ैद में क्यों कर जीना हो, अल्लाह ही अपना फ़ज़्ल करे॥
क्या नाज़ हो ऐसी साअ़त[5] पर, अफ़सोस है ऐसी हालत पर।
या झूठ कहे या कुछ न कहे, या कुफ़्र करे या कुछ न करे॥
क़ातिल को भरोसा कुव्वत का, और हम को खुदा की रहमत[6] का।
होना था जो कुछ हो ही लिया, वो भी न रुका हम भी न डरे॥

अकबर के पत्र

इस छोटी सी जीवनी को समाप्त करने से पहिले अकबर के पत्रों से भी पाठकों का परिचय करा देना उचित प्रतीत होता है। यूं तो स्यात् ही कोई ऐसा मनुष्य हो जिसे कभी पत्र लिखने या लिखवाने का काम न पड़ता हो, किन्तु साधारण मनुष्यों के पत्रों तथा साहित्यज्ञों के पत्रों में आकाश-पाताल का अन्तर होता है। अंग्रेजी आदि उत्तम भाषाओं

---

१. बढ़ती। २. प्रसाद। ३. विकाश। ४. हिलना। ५. समय। ६. क्षमा।

में तो उपन्यास आदि के समान पत्र-लेखन भी साहित्य की एक महत्त्व-पूर्ण शाखा समझी जाती है। खेद का विषय है कि हिन्दी वालों का साहित्य के इस अङ्ग की पूर्त्ति की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं है। एक भी हिन्दी लेखक या कवि ऐसा नहीं है जिसके पत्र साहित्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ठहराये जा सकें। और हो भी कहां से?

हम लोग तो हिन्दी में पत्र लिखना अपमान-सूचक तथा अंग्रेजी से अनभिज्ञ होने का कारण समझते हैं। अस्तु। यद्यपि उर्दू में भी साहित्य की दृष्टि से अच्छे पत्र लिखने वाले बहुत कम साहित्यसेवी हुवे हैं, किन्तु फिर भी ग़ालिब, आज़ाद (शम्सुल उल्मा मौलवी मौहम्मद हुसैन आज़ाद) और अकबर—इन तीन लेखकों—के पत्र ऐसे हैं जो साहित्य-सेवियों में आदर की दृष्टि से देखे जा सकते हैं।

अकबर के पत्रों की भाषा बहुत ही सरल तथा सारगर्भित है। दार्शनिक समस्याओं को भी बहुत ही साधारण शब्दों में हल कर दिया है। बड़े बड़े भावों को दो शब्दों में व्यक्त कर दिया है। यदि किसी के विरुद्ध भी लिखा है तो इस ढङ्ग से कि उसको किंचित् भी बुरा न मालूम हो। आपके पत्र पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो आप सामने खड़े बात कर रहे हैं। पाठकों के मनोरंजन के लिये यहां पर आपके तीन छोटे छोटे पत्र उद्धृत किये जाते हैं। इनमें से पहिले दो पत्र देहली-निवासी ख्वाजा हसन निजामी के नाम हैं और तीसरा पत्र मौलाना अब्दुल माजिद के नाम हैः—

[१]

'मुकर्रमी दाम मजद कुम[१]'।

मुद्दत से आपका ख़त नहीं आया। हूरबानू कैसी हैं? मेरे ख़तूत

१. मान्यवर! आप हमेशा बुजुर्ग होवें।

पहुँचे होंगे ? अपना हाल क्या लिखूं ? मेरी दुनिया हो चुकी है। ज़िन्दगी बाक़ी रह गई है। उसका बसर करना दुशवार हो रहा है।

बहे जाते हैं बेमक़सूद[1] बहरे-जिन्दगानी[2] में।

अमराज से तकलीफ़ एक तरफ़। दुनिया की सर्द महरी का आलम एक तरफ़। याराने-मुवाफ़िक़ का साथ नहीं। खुदायेकरीम नदारद। इशरत मंजिल की वीरानी और अपनी माज़ूरी पेशे-नज़र। माजिद मियां जुलाई में आने वाले हैं। मैं तो खुद ही यहां इशरत मियां का महमान हूं। महमां-नवाज़ी क्या करूंगा।

एक ख़त में एक फ़िक़रा लिख गया हूं। इख्तसार और मानी को देखिये। इशरत मियां चाहते हैं कि आराम से रहूँ, खुश रहूँ। लेकिन आराम की उम्र नहीं, खुशी की अमलदारी नहीं। ग़ालिबन इस फ़िक़रे को आप लिट्ररेरी और पब्लिक माल करार दें।

अकबर-प्रतापगढ़, १६ जून, सन् १६२१ ई०।

(२)

मुकरमी[3] ! फ़तवाये-फितरत यही है कि देहली में रहिये। तकलीफें उठाइये। बा-सलीका नौकर हम लोगों के लिये उनक़ा होते जाते हैं। फ़ारसी भूल जाइये, गुस्सा कम हो जाय। मेरठ का सफ़र भी इस मौसम में ज़हमत[4] से ख़ाली न हुवा होगा। नवाब साहब के मोटर से गिरने का अफसोस हुवा। अपना शेर याद आयाः—

अज्म[5] कर तक़लीदे-मग़रिब[6] का हुनर के ज़ोर से।
लुत्फ़ क्या है लद लिये मोटर पै ज़र के ज़ोर से॥

नवाब साहब को आपने फरिश्ता-सिफत लिखा है। मैं कहता हूँ इससे भी ज्यादा। फरिश्ते सिर्फ नेक और मुक़द्दस[7] होते हैं। आक़िल

---

१ बिना उद्देश्य। २ जीवन रूपी समुद्र। ३ मान्यवर। ४ कष्ट। ५ इरादा। ६ पश्चिम का अनुगमन। ७ पवित्र।

की उनको ज़रूरत नहीं क्यों कि सिर्फ़ हुक्मेखुदा की तामील कर देते हैं। नवाब साहब अक़्लमन्द भी हैं। मेरे क़दीम इनायत-फ़रमा हैं। हूर[1] को फिर बुला लीजियेगा। उर्दू आजाय मजहब से वाकिफ़ हो जाय। बस काफ़ी है। बहुत प्यारी लड़की है और वाजिब-उल्-रहम है।

अकबर---इलाहाबाद, २२ मई, सन् १६६२ ई०

[• ३]

इलाहाबाद—२८ अगस्त सन् १६१७ ई०

अज़ीज मुकर्रम सलमा अल्लाह ताला ! आपने खूब लिखा···की निस्बत। भला देखिये तो जो शख्स हाफ़िज[2] को बद कहे उसको क्या कहूँ ? मगर मजबूरी है।

अफ़सोस है कि आप से मुझ से क़ब्ल-रवानगी हैदराबाद मुलाकात न होगी। ख़ैर, अल्लाह आपको कामयाब करे। मैं क्या ? मेरी ज़िन्दगी क्या ?

फ़लक[3] मश्शाक़ है पैहम[4] नया जलवा दिखाने में।
ज़मी को देर क्या गुज़रेहुओं को भूल जाने में॥

लखनऊ पहुँचा तो आपके वग़ैर सूना नज़र आयगा। ख़तीब भेजता हूं। बाद मुलाहज़ा वापिस फ़रमाइये। हैदराबाद से ख़त लिखियेगा। ख्वाजा गुलाम हुसैन साहब का इन्तक़ाल इबरत-अंगेज़ है। वह मुझ से भी मिले थे। लेकिन भूल जाने में दुनिया को देर न लगेगी। क्या राज़-हस्ती है। खुदा ग़ौर की फ़ुरसत दे। मालूम हुवा कि आपके दोस्त ख्वाजा साहब को चीफ़ कमिश्नर ने अपने सूबे में

१ ख्वाजा साहब की लड़की का नाम है। २ फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि। ३ आकाश। ४ लगातार।

क़ैदे-निशशनी से बरी कर दिया। काश यहां भी ऐसा हो। बर्न साहब लखनऊ कब आयेंगे? कब तक रहेंगे?

—अकबर।

निस्सन्देह अकबर अपने समय के उर्दू के सब से बड़े तथा अनुपम कवि थे। आपकी मृत्यु से उर्दू-साहित्य को जो हानि पहुंची है उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। खेद की बात तो यह है कि शीघ्र ही आपके स्थान की पूर्ति की कोई आशा नहीं दिखाई देती। आपके स्वर्गवास ने बहुत दिनों के लिये उर्दू-समाज को सूना कर दिया है—

कोई बैठ के लुत्फ़ उठायेगा क्या।
कि जो रौनके-बज़्म तुम्हीं न रहे॥

—अकबर।

महाकवि अकबर का उर्दू-काव्य

धर्म, तत्त्वज्ञान तथा उपदेश

१—कमशिन हो अभी तजरुबा दुनिया का नहीं है ।
तुम खुद ही समझ जाओगे खुदा भी है कोई चीज़ ॥ १ ॥
तदबीर सदा रास्त जो आती नहीं अकबर ।
इन्सान की ताक़त के सिवा भी है कोई चीज़ ॥ २ ॥
मैंने कहा क्यों लाश पै आक़ा की है मरता ।
होटल की तरफ़ जा कि ग़िज़ा भी है कोई चीज़ ॥ ३ ॥
कुत्ते ने कहा कि हो ये जहालत की तास्सुब ।
लेकिन मेरे नज़दीक वफ़ा भी है कोई चीज़ ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—कमसिन-कम उम्र रास्त न आना-ठीक न पड़ना, आक़ा-स्वामी जहालत-मूर्खता, तास्सुब-पक्षपात ।

२—जो मिल गया वो खाना दाता का नाम जपना ।
इसके सिवा बताऊं क्या तुम को काम अपना ॥ १ ॥
रोना है तो इसका कोई नहीं किसी का ।
दुनिया है और मतलब मतलब है और अपना ॥ २ ॥
अय बिरहमन हमारा तेरा है एक आलम ।
हम ख़ाब देखते हैं तू देखता है सपना ॥ ३ ॥
बे इश्क़ के जवानो कटनी नहीं मुनासिब ।
क्योंकर कहूँ कि अच्छा है जेठ का न तपना ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—आलम-दशा ।

३—अजल से वो डरें जीने को जो अच्छा समझते हैं ।
यहां हम चार दिन की ज़िन्दगी को क्या समझते हैं ॥ १ ॥
यक़ो कुफ़्फ़ार को आता नहीं रोजे-क़यामत का ।
इसे भी वो तुम्हारा वादये-फ़रदा समझते हैं ॥ २ ॥
मैं अपने नक़्द दिल से जिन्से-उल्फ़त मोल लेता हूँ ।
अतिब्बा को ज़रा देखो इसे सौदा समझते हैं ॥ ३ ॥
इसे हम आख़िरत कहते हैं जो' मशगूले-हक़ रक्खे ।
खुदा से जो करे ग़ाफ़िल उसे दुनिया समझते हैं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—कुफ्फार-नास्तिक, क़यामत-ईश्वरीय न्याय का दिन, फ़रदा-कल, उल्फत-प्रेम, अतिब्बा-वैद्य, सौदा-पागलपन, आख़िरत-परलोक, मशगूले हक़-ठीक मार्ग पर ।

४—मुश्ताक़ नहीं ज़िन्दगी के ।
मरना है तो क्या करेंगे जी के ॥ १ ॥
पाई न किसी में बू वफ़ा की ।
चाहा था कि हो रहें किसी के ॥ २ ॥
तौहीद का मसला है असली ।
बाक़ी हैं शगूफे हिस्ट्री के ॥ ३ ॥
रिन्दी किस काम की ये अकबर ।
मिलते ही नहीं जब किसी से पीके ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—मुश्ताक़-इच्छुक तौहीद-अद्वैत, मसला-सिद्धान्त, शगूफे-समस्यायें, हिस्ट्री-इतिहास, रिन्दी-मस्ती ।

५—हो मुझे पंबुतों की चश्मे—करम दिल को ये तलब असला न रही ।
मुझको भी खुदा ने ग़ैरत दी उनको जो मेरी परवा न रही ॥ १ ॥
दुनिया का तरद्दुद जब तक था जब तक कि हम उसके तालिब थे ।
फेरी जो नज़र ग़म हो गये कम रग़बत न रही दुनिया न रही ॥ २ ॥

सच पूछिये तो राहत ही मिली दुनिया से जुदा हो जाने में।
थोड़ी सी उदासी है भी तो हो आफ़त तो मगर बरपा न रही ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—चश्मे करम-कृपा की दृष्टि, तलब-इच्छा, अस्ला-बिल्कुल गैरत-लज्जा तरद्दुद-दुःख, तालिब-इच्छुक, रग़बत-प्रवृति, राहत-आराम।

६—फ़लसफ़ी को बहस के अन्दर खुदा मिलता नहीं।
डोर को सुलझा रहे हैं और सिरा मिलता नहीं ॥ १ ॥
मारफ़त ख़ालिक़ की आलम में बहुत दुशवार है।
शहरे-तन में जब कि खुद अपना पता मिलता नहीं ॥ २ ॥
ग़ाफ़िलों के लुत्फ़ को काफ़ी है दुनियावी खुशी।
आक़िलों को बे ग़मे-उक़बा मज़ा मिलता नहीं ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—मारफ़त-ज्ञान, ख़ालिक-विधाता, आलम-संसार, उक़बा-परलोक।

७—सब जानते हैं इल्म से है ज़िन्दगी ये-रूह।
बेइल्म है अगर तो वो इन्सां है नातमान ॥ १ ॥
बे इल्म बे हुनर है जो दुनिया में कोई क़ौम।
नेचर का इक्तज़ा है रहे बनके वो गुलाम ॥ २ ॥
तालीम अगर नहीं है ज़माने के हस्ब हाल।
फिर क्या उम्मीदे-दौलतो-आरामो-अहतराम ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—इक्तज़ा-तक़ाज़ा, हस्ब हाल-समय के अनुसार, अहतराम-मान।

८—कुछ ग़र्ज़ और है अहबाब न इस शक में रहें।
बस ये है शौक़ कि पब्लिक की झकझक में रहें ॥ १ ॥
नहीं मंजूर नमाज़ों में गुज़ारें रातें।
हां कमैटी हो तो उलझे हुये झकझक में रहें ॥ २ ॥

नग़मये-मुर्ग़-सहर से नहीं अंजन को ग़रज़ ।
पेट अख़्बारों से भर दीजिये झकझक में रहें ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—अहबाब-मित्रगण, नग़मये, मुर्गे सहर-प्रातःकाल के मुर्ग़ की आवाज ।

९—बस यही काम सबको करना है ।
यानी जीना है और मरना है ॥ १ ॥
अब रही बहस रंजो राहत की ।
ये फ़क़त वक़्त का गुज़रना है ॥ २ ॥
सब से बदतर बुतों से है उम्मीद ।
सब से बेहतर खुदा से डरना है ॥ ३ ॥

१०—ये शेख़ अकबर से इतना क्यों ख़फ़ा है ?
ये क्यों ग़ैज़ो-ग़ज़ब जोरो जफ़ा है ॥ १ ॥
है नहीं झगड़े की इस में कोई बात ।
ये एक क़ौले-हकीमे-बाशफ़ा है ॥ २ ॥
न हो मज़हब में जब ज़ोरे-हकूमत ।
तो वो क्या है फ़क़त एक फ़लसफ़ा है ॥ ३ ॥

११—ऑफ़िशल आमालनामे की न होगी कुछ सनद ।
हश्र में तो नामये-आमाल देखा जायगा ॥ १ ॥
बच रहे ताऊन से तो अहले-ग़फ़लत बोल उठे ।
अब तो मोहलत है फिर अगले साल देखा जायगा ॥ २ ॥
तह करो साहब नसबनामे वो वक़्त आया है अब ।
बे असर होगी शराफ़त माल देखा जायगा ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—नामये आमाल-कर्मों का लेखा । नसबनामा-बंशाबलि ।

१२—क्या है मजहब एक मुल्की और सोशल इन्तज़ाम ।
ये नहीं पहचान हरगिज़ काफ़िरो-दींदार की ॥ १ ॥
सूरतो-अलफ़ाज का अकसर नहीं है ऐतबार ।
हैं फ़कत ये आदतें रफ्तार की गुफ्तार की ॥ २ ॥
हैं हर एक मज़हब में कुछ काफ़िर भी कुछ दींदार भी ।
याद रख तू बात ये एक महरमे-इसरार की ॥ ३ ॥

शब्दार्थ-सोशल-सामाजिक रफ्तार-चलन, गुफ्तार-बातचीत महरमे इसरार-रहस्य जानने वाला ।

१३—फिलसफी तजरुबा करता था हुवा मैं रुख़सत ।
मुझ से वो कहने लगा आप किधर जाते हैं ॥ १ ॥
कह दिया मैंने हुवा तजरुबा मुझको तो यही ।
तजरुबा हो नहीं चुकता है कि मर जाते हैं ॥ २ ॥

१४—हर ख़ाक के पुतले को उभारा है फ़लक ने ।
यकताई के इज़हार में मस्त अहले-ज़मीं हैं ॥ १ ॥
हर एक की ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज़ ।
और हम को ये नाज़ कि हम कुछ भी नहीं हैं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—फ़लक-आकाश, यकताई-अद्वितीयता अहले-ज़मीं-पृथ्वी वाले नाज़-गर्व ।

१५—किसी को भी किसी से कुछ नहीं इस बाब में झगड़ा ।
करो तुम ध्यान परमेशर का दिल को उसका दर्शन हो ॥ १
मगर मुश्किल तो है ये नाम सब लेते हैं मज़हब का ।
ग़रज़ लेकिन ये होती है जथा हो और भोजन हो ॥ २ ॥

१६—मैं तो हमदर्द हूं बस उनकी गिरफ्तारी का ।
क़ैदे-हस्ती से जो मुश्ताक़ है आज़ादी के ॥ १

ढूंढना चाहिये था अकबरे-बेकस को वहां।
एक वीराना भी है मुत्तसिल आबादी के॥ २॥

शब्दार्थ—हस्ती-अस्तित्व, मुश्ताक़-इच्छुक, मुत्तसिल-निकट।

१७—पेच मज़हब का किसी साहब ने ढीला कर दिया।
सादा तबओं को भी रंगीला कर दिया॥ १॥
शौक़ पैदा कर दिया बंगले का और पतलून का।
वो मसल है मुफ़लिसी में आटा गीला कर दिया॥ २॥

शब्दार्थ—सादा तबओं-सीधे स्वभाव वालों।

१८—जनाबे-शेख़ से जाकर ज़रा लिल्लाह कह देना।
कि गुमराही थी मुझ से रिन्द को गुमराह कह देना॥ १॥
बहुत मुश्किल है बचना बादये-गुलगूं से ख़िलवत में।
बहुत आसान है यारों में मआज़-अल्लाह कह देना॥ २॥

शब्दार्थ—लिल्लाह-ईश्वर के लिये, रिन्द-मस्त, ख़िलवत-एकान्त, गुमराह-भ्रष्ट, बादये गुलगूं-सुर्ख़ शराब, मआज़ अल्लाह-ईश्वर की शरण।

१९—मुनकिर हैं रूह के जो ये अहले-ग़रूर।
एक अमर है पूछना हमें उनसे ज़रूर॥ १॥
है फ़हमो-ख़िर्द का तुम को दावा ये कहो।
पैदा हुवा माद्दे में क्यों कर ये शऊर॥ २॥

शब्दार्थ—मुनकिर-इंकार करने वाले, फ़हम-समझ, ख़िर्द-बुद्धि, माद्दा-प्रकृति।

२०—चाल दुनिया की तुम्हें महसूस हो दुशवार है।
ये ज़मीं चलती है तेज़ी से मगर हिलती नहीं॥ १॥

दिल के जो दुश्मन हैं उनके शौक़ में रहती है आँख ।
जान का मालिक जो है उससे नज़र मिलती नहीं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—महसूस-अनुभव दुश्वार-कठिन ।

२१—खाने से अगर जीना होता मरते न कभी जीने वाले ।
खाना भी खुदा के हुक्म से है जीना भी ख़ुदा के हुक्म से है ॥१॥
ईमान से उलफ़त रखता हूँ शैतान को दुश्मन जानता हूँ ।
उल्फ़त भी खुदा के हुक्म से है कीना भी खुदा के हुक्म से है ॥२॥

शब्दार्थ—उल्फ़त-प्रेम, कीना-द्वेष ।

२२—दिल मेरा जिस से बहलता कोई ऐसा न मिला ।
बुत के बन्दे मिले अल्लाह का बन्दा न मिला ॥ १ ॥
सय्यद उठे जो गज़ट लेकर तो लाखों लाये ।
शेख़ कुरआन दिखाते फिरे पैसा न मिला ॥ २ ॥

२३—इनक़लाबे-जहां को देख लिया ।
हुब्बे-दुनिया से क़ल्ब पाक हुवा ॥ १ ॥
कल कली खिल के होगई थी फूल ।
फूल कुम्हला के आज ख़ाक हुवा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—इनक़लाब-परिवर्तन, हुब्बे दुनिया-संसार का प्रेम, कल्ब-दिल ।

२४—है सब्रो-क़नाअ़त एक बड़ी चीज़ ।
लज़्ज़त अभी उसकी तूने चक्खी है कहां ॥ १ ॥
दुनियां-तलबी के वाज़ में मह्व है तू ।
ये तो ज़रा समझ कि रक्खी है कहाँ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—क़नाअ़त-संतोष, वाज़-उपदेश मह्व-निमग्न ।

२५—कहा बुक़रात से दुनिया में क्यों आया तू ए, दाना ।
कहा उसने कि मैं लाया गया मुझको पड़ा आना ॥ १ ॥
कहा क्योंकर बसर की उम्र बोला साथ हैरत के ।
'कहा क्या जाना' ? बोला 'कुछ नहीं जाना यही जाना' ॥ २ ॥

शब्दार्थ-बुक़रात-यूनान का प्रसिद्ध तत्त्वज्ञानी, हैरत-आश्चर्य ।

२६—'अकबर' से मैंने पूछा अय' वाइज़े-तरीक़त ।
दुनियाये-दूं से रक्खूं मैं किस क़दर तअल्लुक़ ॥ १ ॥
उसने दिया बलाग़त से ये जवाब मुझको ।
अंगरेज़ को है नेटिव से जिस क़दर तअल्लुक़ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—वाइजे तरीकत धर्मोपदेशक। दुनियाये दूं-कमीनी दुनीया ।

२७—इल्मो-हिकमत में हो गर ख्वाहिशे-फेम ।
सरकार की नौकरी को हरगिज न कर एम' ॥ १ ॥
शादी न कर अपनी क़ब्ले-तहीसले-अलूम ।
बुत हो कि परी हो ख्वाह वो हो कोई मेम ॥ २ ॥

शब्दार्थ – एम-उद्देश्य, फेम-ख्याति, क़ब्ल-पूर्व, तहसीले अलूम-विद्या प्राप्त करना ।

२८—कुछ सनअतो-हिरफ़त पै भी लाजिम है तवज्जो ।
आख़िर ये गवर्न्मैंन्ट से तनख्वाह कहां तक ॥ १ ॥
मरना भी ज़रूरी है खुदा भी है कोई चीज़ ।
अय हिर्स के बन्दे हविसे-जाह कहां तक ॥ २ ॥

शब्दार्थ—सनअतो हिरफत—शिल्प, जाह—पद, ओहदा ।

२९—ग़फ़लत की हंसी से आह भरना अच्छा।
अफ़आले-मुज़िर से कुछ न करना अच्छा ॥ १ ॥
'अकबर' ने सुना है अहले-गैरत से ये ही।
जीना ज़िल्लत से हो तो मरना अच्छा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—अफ़आल-कार्य, मुजिर-हानिकारक, अहले गैरत- आत्म-सम्मान का ख्याल रखने वालों।

३०—जो अपनी ज़िन्दगानी को हुबाब-आसा समझते हैं।
नफ़स की मौज को मौजे-लबे दरिया समझते हैं ॥१॥
जो हैं अहले-बसीरत इस तमाशागाहे-हस्ती में।
तिलस्मे-जिन्दगी को खेल लड़कों का समझते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—हुबाब आसा-बुलबुले के समान, नफ़स-सांस, अहले-बसीरत-ज्ञानी, तमाशागाहे हस्ती-संसार.

३१—जब लुत्फ़ो-करम से पेश आये महबूब।
अगले रंजों को भूल जाना अच्छा ॥१॥
जब मिस्ले-नसीम वो गले से लग जाये।
मानिन्द कली के फूल जाना अच्छा ॥२॥

शब्दार्थ—लुत्फ़ो करम-मेहरबानी, महबूब-प्यारा, नसीम-प्रातःकाल की वायु।

३२—क्या तुम से कहें जहां को कैसा पाया।
गफ़लत ही में आदमी को डूबा पाया ॥१॥
आँखें तो बेशुमार देखीं लेकिन।
कम थीं बखुदा कि जिनको बीना पाया ॥२॥

शब्दार्थ—बीना-वास्तविकता को देखने वाली।

३३—हर एक को नौकरी नहीं मिलने की।
हर बाग में ये कली नहीं खिलने की ॥१॥

कुछ पढ़के तू सनअ्रतो-ज़राअ्रत को देख।
इज्जतकेलिये काफी है अय दिल नेकी ।।२।।

शब्दार्थ—सनअ्रत-शिल्प. ज़राअ्रत-कृषि ।

३४—आला मकसद चाहिये पेशे-नज़र ।
कोशिश तेरी गो हो लुत्फे-ज़ाती के लिये ।।१।।
फ़रहाद पहाड़ पर अमल करता था ।
शीरीं के लिये कि नाशपाती के लिये ।।२।।

शब्दार्थ—आला-उच्च, मकसद-उद्देश्य, पेशे नजर-आंखों के सामने ।

३५—नफ्स के ताबअ्र हुवे ईमान रुखसत हो गया ।
वो जनाने में घुसे मेहमान रुख़सत हो गया ।।१।।
मय उन्होंने पी अब उनके पास क्योंकर दिल लगे ।
जानवर इक रह गया इन्सान रुख़सत होगया ।। २ ।।

शब्दार्थ-नफ्स-वासना, ताबअ्र-अनुयायी, मय-शराब ।

३६—ऊंचा नीयत का अपनी ज़ीना रखना ।
अहबाब से साफ़ अपना सीना रखना ।। १ ।।
गुस्सा आना तो नेचरल[१] है अकबर ।
लेकिन है शदीद ऐब कीना रखना ।। २ ।।

शब्दार्थ—अहबाब-मित्रगण, नेचरल-प्राकृतिक, सदीद-शख्त, कीना-द्वेष ।

३७—औरों की कही हुई जो दोहराते हैं ।
वो फ़ोनोग्राफ की तरह गाते हैं ।। १ ।।

खुद सोच के हस्ब-हाल मजमूं निकाल ।
इन्सान यूंही तरक्कियां पाते हैं ॥ २ ॥

३८—ग़फलत को छोड़ दीजिये कुछ काम कीजिये ।
इल्मो-हुनर से नाम का अंजाम कीजिये ॥ १ ॥
गर कुछ नहीं तो हजरते-अकबर का क़ौल है ।
मुरदों के साथ क़ब्र में आराम कीजिये ॥ २ ॥

३९—हासिल करो इल्म तबअ़ को तेज करो ।
बातें जो बुरी हैं उनसे परहेज करो ॥ १ ॥
क़ौमी इज्जत है नेकियों से अकबर ।
इसमें क्या है कि नक़ले-अंगरेज करो ॥ २ ॥

४०—रोज़ी मिल जाय मालो-दौलत न सही ।
राहत हो नसीब शानो-शौकत न सही ॥ १ ॥
दरबार में खुश रहें अजीजों के साथ ।
दरबार में बाहमी रक़ाबत न सही ॥ २ ॥

शब्दार्थ—राहत-आराम, नसीब-प्राप्त, अजीज-प्यारा, बाहमी रक़ाबत-पारस्परिक प्रतिद्वन्दिता ।

४१—ख़ातिर मजबूत दिल तवाना रक्खो ।
उम्मीद अच्छी ख़याल अच्छा रक्खो ॥ १ ॥
हो जायेंगी मुश्किलें तुम्हारी आसान ।
'अकबर' अल्लाह पे भरोसा रक्खो ॥ २ ॥
शब्दार्थ—तवाना-मज़बूत ।

४२—गर जेब में जर नहीं तो राहत भी नहीं ।
बाजू में सक़्त नहीं तो इज्ज़त भी नहीं ॥ १ ॥

गर इल्म नहीं तो ज़ोरो-ज़र हैं बेकार ।
मजहब जो नहीं तो आदमियत भी नहीं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—राहत-आराम, सक्त-ताक़त ।

४३—दौलत वो है जो अक्लो-मेहनत से मिले ।
लज्ज़त वो है कि जोशे-सेहत से मिले ॥ १ ॥
ईमां का हो नूर दिल में वो राहत है ।
इज्जत वो है जो अपनी मिल्लत से मिले ॥ २ ॥

शब्दार्थ—नूर-प्रकाश, राहत-आराम, मिल्लत-जाति ।

४४—आमाल के हुस्न से संवरना सीखो ।
अल्लाह से नेक उम्मीद करना सीखो ॥ १ ॥
मरने से मफर नहीं है जब अय 'अकबर' ।
बेहतर है यही खुशी से मरना सीखो ॥ २ ॥

शब्दार्थ—आमाल-कार्य, हुस्न-सौन्दर्य, मफर-भागने की जगह

४५—आजाद से दीन का गिरफ्तार अच्छा ।
शरमिन्दा हो दिल में जो गुनहगार अच्छा ॥ १ ॥
हरचन्द कि ज़ोर भी है एक ख़सलते-बद ।
वल्लाह बेहया से मक्कार अच्छा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—दीन-धर्म, ख़सलत-स्वभाव ।

४६—मर्द को चाहिये क़ायम रहे ईमान के साथ ।
ता-दमे-मर्ग रहे यादे-खुदा जान के साथ ॥ १ ॥
मैंने माना कि तुम्हारी नहीं सुनता कोई ।
सुर मिलाना तुम्हें क्या फ़र्ज़ है शैतान के साथ ॥ २ ॥

४७—वाइज़ ने कहा ख़ौफ़े–ख़ुदा भी है कोई चीज़ ।
उस बुत ने कहा मेरी अदा भी है कोई चीज़ ॥१॥
खुलते हुवे उक़दे नज़र आते हैं हज़ारों ।
मालूम हुवा उक़दा–कुशा भी है कोई चीज़ ॥२॥

शब्दार्थ-वाइज़-उपदेशक, उक़दे-ग्रन्थियाँ, उक़दा-कुशा-ग्रन्थि को खोलने वाला ।

४८—अगर मिला नहीं मिलने का आसरा तो है ।
इमें इसी में है तिस्कीने–दिल खुदा तो है ॥१॥
अजल को देखके ज़ेरे फ़लक क़रार आया ।
मुसीबतों का बिलाख़िर इक इन्तहां तो है ॥२॥

शब्दार्थ—तिस्कीने दिल-हृदय की शान्ति, अजल-मृत्यु जेरे, फ़लक आसमान के नीचे, क़रार—सन्तोष, बिलाख़िर-अन्त में ।

४९—इक नज़र का है तअ़ाल्लुक़ इस जहां से होश का ।
सब का सब इक जुम्बिशे-मिज़गां में पिनहां हो गया ॥१॥
तर्के-दुनिया से हुई जमईयते–ख़ातिर नसीब ।
हाल मेरा गो कि ज़ाहिर में परीशां हो गया ॥२॥

शब्दार्थ—जुम्बिशे मिज़गां-एक पल, पिनहां-ओझल, तर्के दुनिया-संसार का परित्याग, जमईयते ख़ातिर-आत्मा की शान्ति, परीशां-विकल ।

५०—छोड़ देहली लखनऊ से भी न कुछ उम्मीद कर ।
नज़्म में भी वाज़े-आज़ादी की अब ताईद कर ॥१॥
साफ़ है रोशन है और है साहबे-सोज़ो--गुदाज़ ।
शायरी में बस ज़बाने--शमा की तक़लीद कर ॥२॥

शब्दार्थ—नज्म-कविता, वाज़े-आजादी—स्वतंत्रता का उपदेश, ताईद-अनुमोदन, साहबे सोज़ो गुदाज़—जलने और पिघलने वाला अर्थात् दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाला, ज़बाने शम्मा-दीपक की लौ रूपी जिह्वा, तक़लीद-अनुकरण ।

भावार्थ—अब लखनऊ देहली के कवियों के रंग में कविता करना व्यर्थ है। अब तो कविता में भी स्वतंत्रता का उपदेश होना चाहिये। कविता में दीपक की लौ रूपी जिह्वा का अनुकरण करना चाहिये। जिस प्रकार दीपक उज्ज्वल प्रकाश देता है तथा सभासदों की दुर्दशा पर अपना दिल जलाता है, इसी प्रकार कविता भी ऐसी होनी चाहिये जिसके पढ़ने से ज्ञान की वृद्धि हो तथा जिसमें जाति की दुर्दशा पर आंसू बहाये गये हों।

५१—दिन गुज़रते ही चले जाते है।
लोग मरते ही चले जाते हैं ॥१॥
जानते हैं कि ये ग़फ़लत के है काम।
फिर भी करते ही चले जाते हैं ॥२॥

५२—हंस के दुनिया में मरा कोई, कोई रोके मरा।
ज़िन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ होके मरा ॥१॥
जी उठा मरने से वो, जिसकी खुदा पर थी नज़र।
जिसने दुनिया ही को पाया था, वो सब खोके मरा ॥२॥

५३—बार तकलीफ़ों का मुझ पर बारे-अहसां से है सहल।
शुक्र की जा है अगर हाजत-रवा मिलता नहीं ॥१॥*
यों कहो मिल आऊं उनसे, लेकिन 'अकबर' सच ये है।
दिल नहीं मिलता, तो मिलने का मज़ा मिलता नहीं ॥२॥

शब्दार्थ—बार-बोझ, जा-स्थान, हाजत रवा-आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला।

५४—करेगा क़द्र जो दुनिया में अपने आने की।
उसी की जान को लज़्ज़त मिलेगी जाने की ॥१॥

* महाकवि ग़ालिब ने भी एक स्थान पर कहा है:-
दर्द मिन्नतकशे दवा न हुवा।
मैं न अच्छा हुवा बुरा न हुवा ॥

मज़ा भी आता है दुनिया से दिल लगाने में।
सज़ा भी मिलती है दुनिया से दिल लगाने की ॥२॥

५५—रक्खो जो मुक़ाबिल उसके सारा आलम।
दुनिया बखुदा है एक ज़र्रे से भी कम ॥१॥
उस एक ज़र्रे में है हमारी क्या अस्ल।
नाफ़हम हैं, कर रहे हैं नाहक़ 'हम-हम' ॥२॥

शब्दार्थ—आलम-सृष्टि, बखुदा-ईश्वर साक्षी है, ज़र्रा-परमाणु, नाफ़हम-बेसमझ, नाहक-व्यर्थ।

५६—यही बहसें रहीं सब में वो कैसे हैं वो कैसे थे।
यही सुनते हुवे गुज़री वो ऐसे हैं वो ऐसे थे ॥१॥
अमल औरों ही के देखा किये ये नेक ये बद हैं।
तरक्क़ी खुद न की कुछ रह गये वैसे कि जैसे थे ॥२॥

५७—इधर तसबीह क़ी ग़र्दिश में पाया शेख़ साहब को।
बिरहमन को उधर उलझा हुवा जुन्नार में देखा ॥
मगर इश्क़े-हक़ीक़ी का कोई रिश्ता न था दिल में।
फ़क़त नफ़सानियत का पेचो-ख़म हर तार में देखा ॥

शब्दार्थ—तसबीह-माला, गरदिश-फेर, जुन्नार-जनेऊ, इश्क़े हक़ीक़ी-ईश्वर का प्रेम, नफ़सानियत-विषय वासना ॥

५८—बनोगे खुसरवे-अक़लीमे-दिल शीरीं-ज़बां होकर।
जहांगीरी करेगी ये अदा नूरे—जहां होकर ॥१॥
मजाले-गुफ़्तगू किसको फ़ना का जब पयाम आया।
हुई ख़ामोश आख़िर शमा भी आतश—ज़बां होकर ॥२॥

शब्दार्थ—खुसरवे अक़लीमे दिल—हृदय रूपी देश के राजा, शीरीं जबां-मिष्ट भाषी, जहांगीरी—विश्व-विजय, नूरे-जहां-संसार का प्रकाश, फ़ना—मृत्यु, पयाम—निमन्त्रण।

५९–लताफ़त को न छोड़े रङ्ग तेरे शादी ओ ग़म का।
हंसी आये तो फूलों की जो रोना हो तो शबनम का॥

शब्दार्थ—लताफ़त-पाकीज़गी, शादी-हर्ष, शबनव-ओस।

६०–कामयाबी हो गई तो बेवक़ूफी पर भी नाज़।
और जो नाकामी हुई अक़्ल भी शरमिन्दा है॥
शब्दार्थ—नाज़-गर्व।

६१–हमारे ज़हन को इस मिसरये–अकबर पे मस्ती है।
खुश अखलाकी इबादत है खुशामद बुत-परस्ती है॥
शब्दार्थ—खुश अखलाकी-शिष्टाचार।

६२–जुस्तजू हमको आदमी की है
वे किताबें अबस मंगाते हैं॥
शब्दार्थ—जुस्तजू-खोज। अबस-व्यर्थ।

६३–निगाहें क़ाबिलों पर पड़ ही जाती हैं ज़माने में।
कहीं छिपता है 'अकबर' फूल पत्तों में निहां होकर॥
शब्दार्थ—निहां-छिपना।

६४–हक़ीक़त ज़ीस्त की पीरी में हम समझे तो क्या समझे।
बड़ा धोका दिया ज़ालिम ने दुनिया से खुदा समझे॥
शब्दार्थ—ज़ीस्त-जीवन, पीरी-बुढ़ापा।

६५–न किताबों से न कालिज के है दर से पैदा।
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा॥
शब्दार्थ—दर-द्वार। दीन-धर्म॥

६६–जुदाई ने 'मैं' बनाया मुझको जुदा न होता तो मैं न होता।
खुदा की हस्ती है मुझ से साबित खुदा न होता तो मैं न होता॥

६७–नज़र उनकी रही कालिज में बस इल्मी–फ़वायद पर।
गिरा कीं चुपके चुपके बिजलियां दीनी अक़ायद पर॥

शब्दार्थ—फ़वायद-लाभ, दोनी अक़ायद—धार्मिक सिद्धान्त।

६८—टट्टू पै जिस तरह से ही ताज़ी का साज़ बोझ।
यूं बाबुआने-हिन्द पै है अब नमाज़ बोझ॥

६९—तमाशा देखिये बिजली का मग़रिब और मशरिक़ में।
कलों में है वहां दाख़िल यहां मज़हब पै गिरती है॥

७०—जो मुज़तरिब है उसको इल्तफ़ात है।
आख़िर ख़ुदा के नाम में कोई तो बात है॥
शब्दार्थ—मुज़तरिब—परेशान, इल्तफ़ात—आनन्द॥

७१—गो हम-नफ़स अपने उठ गये सब दमसाज़ हमारी आह तो है
कोई जो हमारा रह न गया ईमान तो है अल्लाह तो है

७२—हमेशा कहता था हर बात पर 'नमीदानम'।
कुछ इसमें शक नहीं 'अकबर' बड़ा ही आलिम था॥
शब्दार्थ—नमीदानम—मैं कुछ नहीं जानता, आलिम—विद्वान्॥

७३—वही क़ानूने-फ़ितरत है जिसे तक़दीर कहते है।
जिसे क़िस्मत समझते हैं वो तदबीरों का हासिल है॥
शब्दार्थ—फ़ितरत—प्रकृति।

७४—सखुन-सञ्जी का क्या कहना मगर ये याद रख 'अकबर'।
जो सच्ची बात होती है वही दिल में उतरी है॥

७५—फ़िलासफ़ी के मुकालमों में किसी ने ये ख़ूब ही कहा है।
जो तन्दुरुस्ती हो तेरी अच्छी तो सांस ही में बड़ा मज़ा है॥

७६—हरम में दम-बखुद बैठा तो 'अकबर' ने किया अच्छा।
वो क्यों बेसूद बुतख़ाने में आहे-नारसा खींचे॥
शब्दार्थ—हरम—घर, बेसूद-व्यर्थ, नारसा-न पहुँचने वाली,प्रभाव हीन।

७७—किया है जिसने आलम को पैदा उसको क्या कहिये।
ख़िर्द ख़ामोश है और दिल ये कहता है ख़ुदा कहिये॥
शब्दार्थ—ख़िर्द—बुद्धि,

७८—कह दिया मैंने कि हूं और नहीं समझा कि क्या
इस खुदी का हश्र क्या होता है देखा चाहिये ॥

शब्दार्थ—खुदी-आत्मज्ञान । हश्र-परिणाम ॥

७६—खुदाई तेरी है हम भी हैं अय खुदा तेरे।
मुसीबतों में पुकारें किसे सिवा तेरे ॥

८०—ज़बां खोली है महफ़िल में वाह-वाह के लिये।
कभी तो बन्द कर आंखों को भी खुदा के लिये॥

८१—आता है वज्द मुझको हर दीन की अदा पर।
मसजिद में नाचता हूं नाकूस की सदा पर ॥

शब्दार्थ—वज्द आना-प्रेम में निमग्न हो जाना, दीन-धर्म, नाकूस-शङ्ख, सदा-आवाज़ ॥

८२—खुदा ने अक्ल की न्यामत अता की मेहरबां होकर।
अदाये शुक्र कर दीवानये-हुस्ने-बुतां होकर ॥

८३—बेमाख्ता आती है मुसीबत में ये लब पर।
फ़ितरत ही की जानिब से दुआ भी है कोई चीज़ ॥

शब्दार्थ—फ़ितरत-प्रकृति, बेसाख्ता-आपहीआप, लब-होंठ, दुआ-प्रार्थना।

८४—बरसों का छोड़ती है साथ ज़ालिम।
कहते हैं उम्र जिस को माशूके-बेवफ़ा है॥

८५—कभी लरज़ता हूं कुफ्र से मैं कभी हूं कुरबान भोलेपन पर।
खुदा के देता हूं वास्ते जब तो पूछता है वो बुत खुदा क्या॥

शब्दार्थ—लरज़ना-कांपना, कुफ्र-नास्तिकता, कुरबान-न्योछावर।

८६—कोई कहता नहीं सयाह हूं फ़ितरत का माहिर हूं।
यहीं तक फ़ख्र की हद है कि डिप्टी हूं वो नाज़िर हूं ॥

शब्दार्थ—सैयाह-यात्री, फितरत प्रकृति, माहिर-जानने वाला।

८७—सदियों फ़िलासफी की चुनाचुनी रही।
लेकिन खुदा की बात जहां थी वहां रही ॥

८८—मैं तो कहता था यही और कहूंगा यही
बात वो खूब है जो अल्लाह से नजदीक करे ॥

८९—ये बुत पिन्हां नहीं होते खुदा ज़ाहिर नहीं होता।
ग़नीमत वो जमाना है कि मैं काफ़िर नहीं होता ॥*
शब्दार्थ—पिन्हां होना—छिपना, काफ़िर—नास्तिक ।

९०—साइन्स से जियादा है मज़ब्रह की जड़ बड़ी ।
तोपों की मारसे भी खुदा की पकड़ बड़ी ॥

९१—मैं ये नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती ।
कहता हूं कि बे-हुक्मे-खुदा कुछ नहीं करती ॥

९२—अतिब्बा को तो अपनी फ़ीस लेना और दवा देना ।
खुदा का काम है लुत्फ़ो-करम करना शफ़ा देना ॥
शब्दार्थ—अतिब्बा-वैद्य, लुत्फो करम-दया, शफा-आराम ॥

९३—किसी के मरने से ये न समझो कि जान वापस नहीं मिलेगी ।
बईद शाने करीम से है किसी को कुछ देके छीन लेना ॥
शब्दार्थ—बईद—विरुद्ध, करीम-दयालु ।

९४—मिटा दो रंगे-वहदत में खुदी का नक्श अय 'अकबर' ।
अगर साबित किया चाहो तुम अपना मौतबिर होना ॥
शब्दार्थ—वहदत-अद्वैत, खुदी-आत्म भाव, मौतबिर—विश्वासपात्र ।

१. एक और उर्दू के कवि ने कहा है:—
क्यों बुतों को हुस्न बख़्शा था जो भूले हम तुझे ।
मुन्सफ़ी कुछ दावरे-रोज़े-क़यामत चाहिये ॥
अर्थात् माशूक का सौन्दर्य देखकर हम तुझे भूल गये किन्तु इस अपराध के लिये हम दण्ड के पात्र क्यों हैं ? अय अन्तिम न्याय करने वाले कुछ तो इन्साफ से कामले । तू ही बता कि तूने माशूकों को इतना सौन्दर्य क्यों दिया था कि उन को देख कर हम तेरी याद भूल गये ।

९५—सेठ जी को फ़िक्र थी एक-एक के दस कीजिये।
मौत आ पहुंची कि हज़रत जान वापस कीजिये ॥

९६—मैं जिसे समझा हूं "मैं" वे नफ्स की हैं ख्वाहिशें।
"मैं" हकीक़त में है जो मुझसे निहायत दूर है ॥

९७—असल अल्लाह से लगावट है।
वरना मज़हब में सब बनावट है ॥

९८—सदाक़त के निशां इस मिसरये-अकबर में मिलते हैं।
कलें साइन्स से चलती हैं दिल मज़हब से हिलते हैं ॥
शब्दार्थ—सदाक़त-सत्य।

९९—खुदा की हस्ती को याद रखना और अपनी हस्ती को भूल जाना।
नज़र उसी पर है और बातों को मैंने अपनी फ़िज़ूल जाना ॥
शब्दार्थ—हस्ती—अस्तित्व।

१००—ग़ौर से देखो ज़मीनो-आस्मां को मुन्किरों।
चल भी सकता बे खुदा के इन्तज़ाम इतना।
शब्दार्थ—मुन्किरों-नास्तिकों।

१०१—हज़ार साइन्स रंग लाये हज़ार क़ानून हम बनायें।
खुदा की कुदरत यही रहेगी हमारी हैरत यही रहेगी ॥
शब्दार्थ—हैरत—आश्चर्य।

१०२—मज़हब के ये मुबाहस निकले हैं हिस्ट्री[१] से।
उनको है क्या तआल्लुक़ वहदत की मिस्ट्री[२] से ॥
शब्दार्थ—वहदत-अद्वैत, मिस्ट्री-भेद, मुबाहस-शास्त्रार्थ, हिस्ट्री-इतिहास।

१०३—जुग़राफ़िये से हाले-गवर्न्मैन्ट पूछिये।
हम तो ये जानते हैं खुदाई खुदा की है ॥

१. History २. Mistry

१०४—निजामे-आलम बता रहा है कि है इसका बनाने वाला।
जहूरे-आदम दिखा रहा है कि दिल में है कोई आने वाला॥[1]

शब्दार्थ—निज़ाम-प्रबन्ध॥

१०५—ये मिसरा चाहिये लिखना बयाज़े-चश्मे-वहदत में।
खुदा का इश्क है इश्क़े मजाज़ी भी हक़ीक़त में॥[2]

शब्दार्थ—बयाज़-कापी, चश्म-आँख, वहदत-अद्वैत, इश्के मजाज़ी-सांसारिक माशूक़ के साथ प्रेम।

१०६—कुफ्रे-इसलाम की तफ़रीक़ नहीं फ़ितरत में।
ये वो नुक्ता है जिसे मैं भी बमुश्किल समझा॥

शब्दार्थ---फ़ितरत-प्रकृति, नुक़ता-बारीक बात।

१०८--शोर क्यों गबरो-मुसलमां ने मचा रखा है।
दैर में कुछ नहीं काबे में क्या रक्खा है॥

---

१. 'जलील' साहब का शेर है:—

हमने देखा रूवे-जानां में खुदा को अय 'जलील'।
मर्तबा ज़ाहिर किया मेमार का तामीर ने॥

अर्थात् हमने अपने माशूक़ के चेहरे में ईश्वर को देखा। जिस प्रकार किसी भवन को देखने से उसके बनानेवाले कारीगर के कौशल का पता चलता है, उसी प्रकार अपने माशूक़ की सुन्दरता देख कर हमें ईश्वर की महत्ता का पता लगा।

२. 'जलील' साहब ने भी लिखा है:—

'जलील' अपने यहां तो बुतपरस्ती-जुज़वे-ईमां है।
कि बे इश्के-मजाज़ी इश्के-कामिल हो नहीं सकता॥

अर्थात् हम तो संसारिक माशूक़ के साथ प्रेम करने को भी धर्म का एक अंग समझते हैं क्योंकि आरम्भ में साँसारिक माशूक़ के साथ प्रेम किये बिना ईश्वर के साथ भी प्रेम नहीं हो सकता॥

शब्दार्थ—गब्र-प्रतिमा-पूजक, दैर-मन्दिर।

१०८—दिखलाते हैं बुत जलवये-मस्ताना किसी का।
यहां काबये-मक़सूद है बुतखाना किसी का॥

शब्दार्थ—मक़सूद-इष्ट।

१०९—मेरी नाकामयाबी की कोई हद ही नहीं सकती।
सदाक़त चल नहीं सकती खुशामद हो नहीं सकती॥

शब्दार्थ—सदाक़त-सत्य।

११०—हुस्न है बेवफ़ा भी फ़ानी भी।
काश समझे इसे जवानी भी॥

शब्दार्थ—फ़ानी-नश्वर। काश-कहीं ऐसा हो।

१११—रंगे-हाफ़िज़ पै बहक जाते हैं अरबाबे मजाज़।
ये समझते नहीं वो बादापरस्ती क्या थी॥

शब्दार्थ—हाफ़िज़-फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि जो बड़े ईश्वर-भक्त थे।
अरबाबे मजाज़-झूंटा प्रेम रखने वाले। बादापरस्ती-मद्यपान॥

११२—फ़ना दौर जारी है मगर मरते हैं जाने पर।
तिलस्मे ज़िन्दगानी भी अजब एक राज़े-फ़ितरत है॥

११३—खुदा का घर बनाना है तो नक़शा ले किसी दिल का।
ये दीवारों का क्या तजवीज़ है ज़ाहिद ये छत कैसी॥

११४—जो देखा हिस्ट्री इस बात पर कामिल यक़ीं आया।
उसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया॥

शब्दार्थ—कामिल यक़ीं-पूरा विश्वास।

११५—निसार अपने तसव्वुर के कि जिसके फ़ैज़ से हरदम।
जो ना पैदा है नज़रों से उसे पैदा समझते हैं॥

शब्दार्थ—तसव्वुर-कल्पना, फ़ैज़-प्रसाद, कृपा।

११६—हुजूमे बुलबुल हुआ चमन में,
किया जो गुल ने जमाल पैदा।
कमी नहीं क़द्रदां की 'अकबर',
करे तो कोई कमाल पैदा ॥

११७—तसव्वुफ़ के बयां को होश ने रूह-आश्ना पाया।
मआनी कुछ न समझा पर क़यामत का मज़ा पाया ॥

शब्दार्थ—तसव्वुफ़-ब्रह्म-ज्ञान, रूह आश्ना-आत्मा से परिचित, क़यामत का मज़ा-अत्यन्त आनन्द।

११८—मुक़ामे शुक्र है ग़ाफ़िल मुसीबते-दुनिया।
इसी बहाने से अल्लाह याद आता है ॥

११९—महबूबा भी रुख़सत हुई साक़ी भी सिधारा।
दौलत न रही पास, तो अब 'हीं' है न 'शीं' है ॥

शब्दार्थ—महबूबा—प्रेमिका, साक़ी-शराब पिलाने वाला हीं-वह (पुल्लिङ्ग) अर्थात् प्यारा, शीं-वह (स्त्रीलिङ्ग) अर्थात् प्यारी,

१२०—चिपकूं दुनिया से किस तरह मैं।
औरत ने कहा कि गोंद मैं हूँ ॥[1]

१२१—ज़वाले-जाहो-दौलत में बस इतनी बात अच्छी है।
कि दुनिया को बख़ूबी आदमी पहचान जाता है ॥

शब्दार्थ—ज़वाले जाहो दौलत-धन तथा ऐश्वर्य का नष्ट होना।

१२२—ज़हन में जो घिर गया ला इन्तहा क्योंकर हुवा।
जो समझ में आ गया फिर वो ख़ुदा क्योंकर हुआ ॥

१ महाकवि बिहारीलाल ने उपरोक्त विचार को अपने एक दोहे में इस प्रकार प्रगट किया है:—

या भव पारावार को उलंघि पार को जाय।
तिय-छवि छायाग्राहनी गहै बीच ही आय ॥

शब्दार्थ—ला इन्तहा-अपरिमित।

१२३—नामे खुदा को अक्सर जे बे-ज़बां तो पाया।
इश्के-बुतां को लेकिन नक्शे-कलूब देखा॥

शब्दार्थ—जेबे ज़बां-जिव्हा पर, नक्शे कलूब-हृदय पर अंकित।

१२४—ग़मे-दहर से बचाता है बशर को मस्त रहना।
मुझे शायरी न आती तो मैं बादानोश होता॥

शब्दार्थ—ग़मे दहर-संसार की चिन्ता. बशर-मनुष्य-बादानोश-शराब पीने वाला।

१२५—तरक्की मुस्तकिल वो है जो रूहानी हो अय 'अकबर'।
उड़ा जो ज़र्रये-अन्सर वो फिर सूबे ज़मीं आया॥

शब्दार्थ—मुस्तकिल-स्थायी, रूहानी-आत्मिक, ज़र्रये-अन्सर-परिमाणु का टुकड़ा, सूबे ज़मी-पृथ्वी की ओर।

१२६—खुदा का नाम गो अक्सर ज़बानों पर है आजाता।
मगर काम इससे जब चलता कि ये दिल में समा जाता॥

१२७—जो अपनी ज़िन्दगानी को फ़क़त इक इम्तहां समझा।
उसी ने राहतों-तकलीफ़ को राजे-निहां समझा॥

शब्दार्थ—राहत-आराम, राजे निहां-गुप्त रहस्य।

१२८—लज्जत है रूह को तने-ख़ाकी से मेल में।
फ़ितरत ने मस्त रक्खा हैं क़ैदी को जेल में॥

शब्दार्थ—लज्जत-आनन्द, रूह-आत्मा, फ़ितरत-प्रकृति।

१२९—उसकी बातों से समझ रक्खा है, तुमने उसे ख़िज्र।
उसके पांवों को देखो कि किधर जाते हैं॥

१३०—जनूने-इश्क से इन्सान की तीनत संवरती है।
यही वो मस्ती वे है जो अक़्ल को हुशयार करती है॥

शब्दार्थ—तीनत-स्वभाव।

१३१—जब खूब किया का कोई मौका न निकाला ।।
फिर क्या जो हुई धूम फ़कत 'खूब कही' की।
१३२—खुदा के इज़हार में दुई है दुई को वहदत से क्या ताल्लुक।
फिराक अपना करे गवारा जो कोई उसका विसाल चाहे ॥
शब्दार्थ—खुदी आत्म, ज्ञान इजहार-प्रगट करना, दुई-द्वैत, वहदत अद्वैत, फ़िराक-वियोग, गवारा-मन्जूर ।
१३३—नासहे-नादां ने मतलब मेरा समझा ही नहीं ।
क्या समझता ! आलमे-दिल में तो वो था नहीं ।।
१३४—रकबा तुम्हारे गांव का मीलों हुआ तो क्या ।
रकबा तुम्हारे दिल का तो दो इञ्च भी नहीं ॥
१३५—दुनिया की क्या हकीकत और हमसे क्या तअ़ाल्लुक़ ।
वो क्या है, इक झलक है, हम क्या हैं इक नज़र हैं ॥
शब्दार्थ—हक़ीक़त-वास्तविकता. तआल्लुक़-सम्बन्ध ।
१३६—हुकूमत उस की उसी की मर्जी,
उसी के सब काम और धन्दे ।
कहां के इंग्लिश, कहाँ के नेटिव,
खुदा की दुनिया खुदा के बन्दे ॥

१३७—रंजे-दुनियां से बहुत मुज़्तरिबुल्हाल था मैं ।
दिल में तिस्कीं हुई मज़हब के असर से पैदा ॥
शब्दार्थ—मुज्तरिबुल्हाल—व्यग्र, तिस्कीं—शान्ति ॥

१३८—न नमाज़ है न रोज़ा न जक़ात है न हज है ।
तो खुशी फिर इसकी क्या है कोई जण्ट कोई जज है ॥
शब्दार्थ—ज़क़ात-दान, हज-काबे की यात्रा ।

१३९—आरज़ू मर्ग की तुम करते हो 'अकबर' लेकिन ।
सोचलो क़ब्र में आराम मिलेगा या नहीं ॥[1]
शब्दार्थ—आरज़ू–इच्छा, मर्ग–मृत्यु ।

१४०—तमाशा देख 'अकबर' दीदये-इब्रत से दुनियां का ।
अजल की नींद जब आये लहद में जाके सो रहना ॥

शब्दार्थ—दीदसे इब्रत–शिक्षा-ग्रहण करने की दृष्टि, अजल–मृत्यु, लहद–कब्र ।

भावार्थ—संसार विश्राम का स्थान नहीं है ! यहां की घटनाओं को तो हमें शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से देखना चाहिए । मृत्यु रूपी निद्रा आने पर कब्र में आराम मिलेगा ।

१४१—दुनिया में अम्रे-हक़ को किस तरह साफ़ कहिये ।
करता है दुश्मनी वो जिसके ख़िलाफ़ कहिये ॥
शब्दार्थ—अम्रे हक़—सच्ची बात ।

१४२—कोर्स तो लफ़्ज़ ही सिखाते हैं ।
आदमी आदमी बनाते हैं ॥
शब्दार्थ—कोर्स–पाठ्य पुस्तक ।

१४३—दो मुरादें जो मिलीं चार तमन्नायें कीं ।
हमने खुद कल्ब में आराम को रहने न दिया ॥

---

[1] महाकवि ज़ौक़ का भी इस विषय का शेर है जिस को महाकवि ग़ालिब बहुत पसन्द करते थेः—

अब तो घबराके कहते हैं कि मर जायेंगे ।
मरके भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे ॥

महाकवि दाग़ ने भी लिखा हैः—

राहत के वास्ते है तुझे आरज़ूये-मर्ग ।
अय 'दाग़', और जो चैन न आया क़ज़ा के बाद ॥

शब्दार्थ—मुराद–कामना, तमन्ना–आशा, क़ल्ब–दिल ।

१४४—दुनिया यों ही नाशादियों में शाद रहेगी ।
बरबाद किये जायगी आबाद रहेगी ॥

शब्दार्थ—नाशादी–रञ्ज, शाद–खुश ।

१४५—बन्दगी में तो है वो लुत्फ़ जो शाही में नहीं ।
दिल से कोई मगर अल्लाह का बन्दा भी तो हो ॥[1]

शब्दार्थ—बन्दगी-सेवा, बन्दा–सेवक ।

१४६—मरज़ हज़ार बलाऐखेज़ हो पसन्द है वो ।
दवा में लाख शफ़ा हो, मगर नहीं मंजूर ॥[2]

शब्दार्थ—मरज़-रोग, बलाखेज़–दुखोत्पादक, शिफ़ा-स्वास्थ्य प्रदत्ता ।

१४७—मञ्ज़िले-इश्क़ो–तवक्कुल मञ्ज़िले–एज़ाज़ है ।
शाह सब बसते हैं यां कोई गदा मिलता नहीं ॥

शब्दार्थ—मञ्ज़िले इश्को तवक्कुल-प्रेम तथा सन्तोष का विश्राम स्थान, मञ्ज़िले ऐज़ाज़-सम्मान का विश्राम स्थान, गदा–फ़क़ीर ॥

१४८—नहीं कुछ इसकी पुरसिश उल्फ़ते–अल्लाह कितनी है ।
यही सब पूछते हैं आपकी तनख्वाह कितनी है ॥

शब्दार्थ—पुर्सिश-पूछताछ, उल्फ़ते अल्लाह-ईश्वर का प्रेम,

१४९—ग़रीब 'अकबर' के गिर्द क्यों हैं, जनाबे वाइज़ से कोई कहदे ।
उसे डराते हो मौत से क्या वो ज़िन्दगी ही से डर चुका है ॥

१. उर्दू के प्रसिद्ध कवि अमीर का शेर है:—
हम फ़क़ीर अपनी फ़क़ीरी में सबो–रोज़ हैं मस्त ।
तुझ को अय शाह मुबारक रहे शाही तेरी ॥

२. अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान् कार्लायल ने भी एक स्थान पर लिखा है:—
In all way we are to becomt perfect through suffering अर्थात् कष्ट सहन द्वारा ही हम पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।

१५०—लोग कहते हैं कि हैं आप निहायत क़ाबिल।
मैं इसी सोच में रहता हूं कि किस क़ाबिल हूं ॥

१५१—क्या कहें औरों को ये ऐसे हैं वो ऐसे हैं।
सच जो पूछो तो हमीं कौन बहुत अच्छे हैं ॥

१५२—अहले मजहब में ज़ियादहतर है बस लफ़्ज़ी निज़ाअ़।
एक ही मालिक जहां का है तो फिर कैसी निज़ाअ़ ॥

शब्दार्थ—अहले अज़हब-मज़हब वाले, लफ़्ज़ी-शाब्दिक, निज़ाअ़-झगड़ा।

शेरे—अकबर म कोई कश्फ़ो—करामात नहीं।
दिल पे गुज़री हुई है और कोई बात नहीं ॥

शब्दार्थ—कश्फ़ो करामात—चमत्कार।

२—प्रेम

१—क्या हश्र हुआ बरपा थोड़ी सी जो पीली है।
डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है ॥१॥
ना तजरुबेकारी से वाइज़ की हैं ये बातें।
इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी पी है ॥२॥
उस मय से नहीं मतलब दिल जिससे है बेगाना।
मक़सूद है उस मय से दिल ही में जो खिचती है ॥३॥
वां दिल में कि सदमे दो यां जी में कि सब सहलो।
उनका भी अजब दिल है मेरा भी अजब जी है ॥४॥
सूरज में लगे धब्बा फ़ितरत के करिशमे हैं।
बुत हमको कहें काफ़िर अल्लाह की मरज़ी है ॥५॥

शब्दार्थ—हश्र—क़यामत। वाइज़—उपदेशक, मद—शराब, बेगाना—अजनबी, मक़सूद—मतलब, सदमे—कष्ट, फ़ितरत—प्रकृति, करिश्मे—अनोखे काम।

२—शौक़-पाबोसिये-जॉनां मुझे बाक़ी है हनोज़।
घास जो उगती है तुरबत पै हिना होती है ॥१॥
नज़अ का वक़्त बुरा वक़्त है ख़ालिक़ की पनाह।
है वो साअत कि क़यामत से सिवा होती है ॥२॥
रूह तो एक तरफ़ होती है रुख़सत तन से।
आरज़ू एक तरफ़ दिल से जुदा होती है ॥३॥
जिस्म तो ख़ाक में मिल जाते हुवे देखते हैं।
रूह क्या जाने किधर जाती है क्या होती है ॥४॥

हूं फ़रेबे-सितमे-यार का कायल 'अकबर'।
मरते मरते न कहा ये कि ज़फ़ा होती है ॥५॥

शब्दार्थ—पा बोसी-पांव का चुम्बन करना, हनोज़-अब तक, तुरबत-क़ब्र हिना-मेंहदी, नज़अ-प्राण निकलने का समय, पनाह-शरण, साअत समय, सिवा अधिक, आरज़ू इच्छा।

३—ज़माने साज़ी है अब ये कि मुन्तज़िर था मैं।
हमारे आने की तुमको तो कुछ ख़बर भी न थी ॥१॥

फ़लक ने क्यूं शबे-फ़ुरक़त मुझे हलाक किया।
जमाले-यार नहीं था तो क्या सहर भी न थी ॥२॥

तुम्हारे दिल की नज़ाकत पै उसको रहम आया।
नहीं तो आह मेरी ऐसी बे असर न थी ॥३॥

जो आप होते हैं मुनकिर तो ख़ैर मैं झूठा।
मेरा जिगर भी न था आपकी नज़र भी न थी ॥४॥

शहीदे-जलवये-मस्ताना हो गया शबे-वस्ल।
ख़ुशी नशीब में आशिक़ के रात भर भी न थी ॥५॥

शब्दार्थ—ज़माना साज़ी दुनिया के दिखावे की बात, सहर-प्रातःकाल, मुनकिर-इन्कार करने वाला, शब-रात।

४—रोशन दिले-आरिफ़ से फ़िज़ूं है बदन उनका।
रंगी है तबीयत की तरह पैरहन उनका ॥१॥

महरूम ही रह जाती है आग़ोशे-तमन्ना।
शर्म आके चुरा लेती है सारा बदन उनका ॥२॥

ये शर्म के मानी हैं हया करते हैं इस को।
आग़ोशे-तसुव्वर में न आया बदन उनका ॥३॥

है साफ़ निगाहों से अयां जोशे-जवानी।
आंखों से सम्हलता नहीं मस्ताना पन उनका ॥४॥

दिलचस्प है आफ़त है क़यामत है ग़ज़ब है।
बात उनकी क़द उनका चलन उनका ॥५॥

शब्दार्थ—दिले आरिफ़-सिद्ध का हृदय, पैरहन-वस्त्र, आग़ोशे तमन्ना—गोद में बैठाने की अभिलाषा, हया-लज्जा, आग़ोशे तसव्वुर-ध्यान की गोद, अयां-प्रगट ।

५—समझे वही उसको जो हो दीवाना किसी का।
अकबर ये ग़ज़ल मेरी है अफ़साना किसी का ॥१॥

गर शेख़ो-बिरहमन सुनें अफ़साना किसी का।
मोबिद न रहे काबओ-बुतख़ाना किसी का ॥२॥

अल्लाह ने दी है जो तुम्हें चांद सी सूरत।
रोशन भी करो जाके सियहख़ाना किसी का ॥३॥

अश्क आंखों में आजायें एवज़ नींद के साहब।
ऐसा भी किसी शब सुनो अफ़साना किसी का ॥४॥*

हम जान से बेज़ार रहा करते हैं 'अकबर'।
जब से दिले-बेताब है दीवाना किसी का ॥१॥

शब्दार्थ—अफ़साना-कहानी, मोबिद-पूज्य, सियहख़ाना-अन्धकारमय, स्थान, अश्क-आंसू ।

* एक और उर्दू के कवि का शेर है।
जी भर आया सुनने वालों का जिगर फट २ गये।
कुछ अजब हसरत भरी थी दास्ताने-अहले-इश्क ॥

६—जलवये-साक़ी वो मय जान लिये लेते हैं।
शेख़जी ज़ब्त करें हम तो पिये लेते हैं ॥१॥

दिल में याद उनकी जो आते हुवे शरमाती है।
दर्द उठता है कि हम आह किये लेते हैं ॥२॥

दौरे-तहज़ीब में परियों का हुआ दूर नक़ाब।
हम भी अब चाके-गरीबां को सिये लेते हैं ॥३॥

खुदकशी मना खुशी गुम ये क़यामत है मगर।
जाना ही कितना है अब ख़ैर जिये लेते हैं ॥४॥

लज़्ज़ते-वस्ल को परवाने से पूछे उश्शाक़।
वो मज़ा क्या है जो वे जान दिये लेते हैं ॥५॥

शब्दार्थ—साक़ी-शराब पिलाने वाला, मय-शराब, नक़ाब-घूंघट।

७- क्या मौत है तबियत आगई उस आफ़त-जां पर।
जिसे इतना नहीं मालूम उल्फ़त क्या वफ़ा क्या है ॥१॥

उन्हें भी जोशे-उल्फ़त हो तो लुत्फ़ उट्ठे मौहब्बत का।
हमीं दिन रात अगर तड़पे तो फिर इसमें मज़ा क्या है ॥२॥

मुसीबत ऐन राहत है अगर हो आशिक़े-सादिक़।
कोई परवाने से पूछे कि जलने में मज़ा क्या है ॥३॥

तबीबों से मैं क्या पूछूं इलाजे-दर्दे-दिल अपना।
मरज़ जब जिन्दगी खुद हो तो फिर उसकी दवा क्या है ॥४॥

शब्दार्थ—उल्फ़त-प्रेम, ऐन-बिल्कुल, राहत-आराम, सादिक़-सच्चा
तबीब-वैद्य।

८—ज़ख्मी किया सीना को नज़र है कि ग़ज़ब है।
खूं होके भी क़ायम है जिगर है कि ग़ज़ब है ॥१॥

वो कहते हैं मय पीने को तू पी नहीं सकता।
अय शेख़ ये अल्लाह का डर है कि ग़ज़ब है ॥२॥

गुज़ारी है शबे-वस्ल कि आई है मेरी मौत।
वो होते हैं रुख़सत ये सहर है कि ग़ज़ब है ॥३॥

लिपटा के मुझे सीने से वो आज ये बोले।
'अकबर' तेरी आहों का असर है कि ग़ज़ब है ॥४॥

शब्दार्थ—मय-शराब, शब रात्रि, सहर-प्रातःकाल।

९—अलग सब से नज़र नीची खराम आहिस्ता आहिस्ता।
वो मुझ को दफ़न करके अब पशेमां होते जाते है ॥१॥
कहां से लाऊंगा खूने-जिगर उनके खिलाने को।
हज़ारों तरह के ग़म दिल के मह्मां होते जाते हैं ॥२॥
गज़ब की याद है अय्यारियां वल्लाह तुमको भी।
ग़रज़ क़ायल तुम्हारे हम तो अग़ जां होते जाते हैं ॥३॥
इधर हम से भी बातें आप करते हैं लगावट की।
उधर ग़ैरों से भी कुछ अहदो-पैमां होते जाते हैं ॥४॥

शब्दार्थ—खराम-चाल, पशेमां-लज्जित, अहदो पैमां-मादे।

१०—ज़हादे-खुश्क हुस्न-बुतां से हैं बेनसीब।
आंखें खुदा ने दी हैं मगर देखते नहीं ॥१॥
मैं जिनके देखने को समझता हूँ ज़िन्दगी।
उनका ये हाल है कि इधर देखते नहीं ॥२॥
तासीरे-इन्तज़ार ने ये हाल कर दिया।
आंखें खुली हुई हैं मगर देखते नहीं ॥३॥
बे खौफ़ दिल को करते हो पामाल अय बुतों।
ये शोखियां खुदा का भी घर देखते नहीं ॥४॥

शब्दार्थ—ज़हाद-ज़ाहिद लोग अर्थात् साधु, तासीर-प्रभाव, पामाल करना-कुचलना।

११—जो नासह मेरे आगे बकने लगा।
मैं क्या करता मुंह उसका तकने लगा ॥१॥
मोहब्बत का तुम से असर क्या कहूं।
नज़र मिल गई-दिल धड़कने लगा ॥२॥

रक़ीबों ने पहलू दबाया तो चुप ।
मैं बैठा तो ज़ालिम सरकने लगा ॥३॥
जो महफ़िल में अकबर ने खोली ज़बां ।
गुलिस्तां में बुलबुल चहकने लगा ॥४॥

शब्दार्थ-नासह-उपदेशक गुलिस्ताँ-बाग ॥

१२—लगावट की अदा से उनका कहना पान हाज़िर है ।
क़यामत है सितम है दिल फ़िदा है जान हाज़िर है ॥१॥
कहो जो चाहो सुन लेंगे मगर मुतलक न समझेंगे ।
तबीयत तो खुदा जाने कहां है कान हाज़िर हैं ॥२॥
निगाहें ढूंढती है जिनको उनका दो निशां यारो ।
इसे मैं क्या करूंगा ये जो सब सामान हाज़िर है ॥३॥
बिठा कर ग़ैर की महफिल में मुझको उसने फ़रमाया ।
सुनो 'अकबर' की ग़ज़लें देखो ये मस्ताना हाज़िर है ॥४॥

शब्दार्थ—मुतलक़-बिल्कुल ।

१३—इश्क कहता है बयाने-हाल की परवा न कर ।
तेरे दिल की खुद बखुद उनको खबर हो जायगी ॥१॥
मुझको हैरत है निगाहे--शौक़ की उम्मीद पर ।
क्या निगाहे क़हर उल्फ़त की नज़र हो जायगी ॥२॥
मैंने पूछा तुम्हें मुझ से मोहब्बत है कि नहीं ।
हसं के फ़रमाया नहीं अब तक मगर हो जायगी ॥३॥
मैं शबे -फुरकत में तड़पूं और वो सोयें चैन से ।
किस तरह मानूं मोहब्बत बा० असर हो जाएगी ॥४॥
शब्दार्थ-क़हर—क्रोध शबे फुरक़त--वियोग की रात ॥
१४—खुदा की शान मेरा तड़पना दिल्लगी समझें ।
किसी की जान जाती है किसी का जी बहलता है ॥१॥

ख़याले-ज़ुल्फ़ में अय दिल न तय कर मंज़िले-उल्फ़त।
अन्धेरी रात में नादां कोई राह चलता है ॥२॥
विसाले-यार का वादा है कल और आज मौत आई।
करें क्या अब मुक़द्दर पर किसी का ज़ोर चलता है ॥३॥
मोहब्बत उनसे करके फंस गये हम तो आफ़त में।
न दिल क़ाबू में आता है न उन पर ज़ोर चलता है ॥४॥

१५—ग़रीबख़ाने में लिल्लाह दो घड़ी बैठो।
बहुत दिनों में तुम आये हो इस गली की तरफ़ ॥१॥
ज़रा सी देर ही हो जायगी तो क्या होगा।
घड़ी घड़ी न उठाओ नज़र घड़ी की तरफ़ ॥२॥
जो घर में पूछे कोई ख़ौफ़ क्या है कह देना।
चले गये थे टहलते हुवे किसी की तरफ़ ॥३॥

१६—तेरे सहरे-नज़र से हुवा ये जनूँ,
मेरे दिल की तो इसमें ख़ता ही न थी।
तेरे कूचे में आके मैं बैठ रहा,
बजुज़ इसके कुछ और दवा ही न थी ॥१॥
न निभी तो फिर इसमें थी किसकी ख़ता,
ये गिला है मेरी ही तरफ़ से बजा।
मेरे इश्क़ का रंग तो ख़ूब रहा,
मगर आप में बुये-वफ़ा ही न थी ॥२॥
ग़मे-हिज्र में जी से गया जो गुज़र,
तो ये अकबरे-ज़ार ने ख़ूब किया।
कि इलाजे-फ़िराक़ तो था ही यही,
बजुज़ इसके कुछ और दवा ही न थी ॥३॥

शब्दार्थ-सहर-जादू, बजुज़-अतिरिक्त, गिला--शिकायत बजा-उचित।

१७--वो आये भी जो बालीं पर तो ऐसे वक़्त में आये।
कि फ़र्ते-ज़ोफ़ से हम कर नहीं सकते इशारा तक ॥१॥

जो उसने नाज़ से पूछा कि तेरी आरज़ू क्या है।
खुशी से ये हुवे बेखुद कि हम भूले तमन्ना तक ॥२॥

न निकलें अश्के-हसरत नज़्अ में अय बेकसी क्यों कर।
वो बेकस हूँ नहीं है कोई मुझ को रोने वाला तक ॥३॥

शब्दार्थ--बालीं-सिरहाने, फ़र्ते ज़ोफ़-कमजोरी की अधिकता, आरज़ू-इच्छा, तमन्ना-इच्छा, अश्के हसरत-नैराश्य के आँसू, नज़्अ-प्राण-निकलने का समय।

१८--वो कूचये--जाना के मज़े एक न पाये।
हम पहले समझते थे कि जन्नत में भी कुछ है ॥१॥

फ़रमाते है वो सुन कर मेरे रोने का अहवाल।
ये बात तो दाखिल तेरी आदत में भी कुछ है ॥२॥

जब कहता हूं उनसे कि मेरे दिल में हसरत है।
किस नाज़ से कहते हैं कि हसरत में भी कुछ है ॥३॥

शब्दार्थ--कूचये जाना-माशूक की गली, जन्नत-स्वर्ग, अहवाल-हाल।

१९--तुझे अय उम्मीदे-फ़र्दा दिलो--जां से प्यार करते।
मगर अपनी जिन्दगी का नहीं ऐतबार करते ॥२॥

है बुतों की खुदनुमाई मेरी गफ़लतो से क़ायम।
मैं अगर नज़र न करता तो वो क्यों सिंगार करते ॥३॥

लिया हमने बोसये--रुख़ तो न बदगुमां हो जाना।
कोई फूल देख लेते तो उसे भी प्यार करते ॥४॥

शब्दार्थ-फ़र्दा-कल, भविष्य ॥

२०—पोशीदा आंखों में कभी दिल में निहां रहा।
बरसों ख़याले-यार मेरा मेहमां रहा ॥ १ ॥
फ़रयाद किसकी थी पसे-दीवार रात भर।
क्या मुझ से पूछते हो तू कल शब कहां रहा ॥ २ ॥
बेजा मेरे सफ़र पे हैं ये बदगुमानियां।
पेशे-नज़र तुम्हीं तो रहे मैं जहां रहा ॥ ३ ॥[1]

शब्दार्थ—पोशीदा-छिपा हुवा. निहां-गुप्त. पसे दीवार-दीवार के नीचे शब-रात, बेजा-अनुचित. पेशे नज़र-आंखों के सामने ॥

२१—मैं शेफ़ता हूं आप से बे-मिस्ल हसीं का।
हैरां हूं मेरे काम सवर क्यों नहीं जाते ॥ १ ॥
जब कहता हूं मरता हूं मेरी जान मैं तुम पर।
फ़रमाते हैं मरते हो तो मर क्यों नहीं जाते ॥ २ ॥
वो नींद में है शहर में फिरने लगे पहरे।
पूछे कोई 'अकबर' से ये घर क्यों नहीं जाते ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—शेफ़ता-आसक्त।

२२—मेरे इश्क़ के सोज़ में हो न कमी,
अजल आये तो ऐसी जफ़ा न करे।
मेरी जान को जिस्म से कर दे अलग,
मेरे दर्द को दिल से जुदा न करे ॥ १ ॥
बुते-शोख़ को देख रहा हूं नज़र,
मेरे इश्क़ का कुछ भी नहीं है असर।
जो मैं कहता हूं काश हो तुझ में वफ़ा,
तो वो कहता है इसके ख़ुदा न करे ॥ २ ॥

१. महाकवि जौक़ का शेर है:-
तुम मेरे पास होते हो गोया।
जब कोई दूसरा नहीं होता ॥

मुझे इश्क़ो-वफ़ा की सनद न मिले,
जो मैं ज़ब्त से सब्र से काम न लूं।
वहां हुस्न के नाज़ में आय कमी,
जो वो हक़्क़े-सितम को अदा न करे ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—सोज़-जलन, नाज़-नखरा।

२३—खुदा के होते बुतों को पूजूं,
नहीं था मुतलक़ गुमान ऐसा।
मगर तुम्हें देखकर तो वल्लाह,
आ गया मुझको ध्यान ऐसा।
वो छत पै बेपरदा सो रहे हैं,
फ़लक क़मर से ये पूछता है।
बता तो तेरी नज़र से गुज़रा है,
कोई खुशरू जवान ऐसा।
दिलों-जिगर को फ़िराक़े-बुत में,
हवालये-चश्मेतर करूंगा।
कभी किसी ने किया न होगा,
किनारये-गङ्ग दान ऐसा।

शब्दार्थ—मुतलक़-बिलकुल, गुमान-सम्भावना, क़मर-चन्द्रमा, खुशरू-सुन्दर, फ़िराके बुत-प्रेमपात्र का वियोग।

२४—क़रीबे-खत्म थी मजलिस कि आ निकले इधर वो भी।
ग़रज़ वाइज़ की मेहनत रह गई सब रायगां होकर ॥ १ ॥
निगाहें मिल गई थीं मेरी उनकी रात महफ़िल में।
ये दुनिया है बस इतनी बात फैली दास्तां होकर ॥ २ ॥
बहुत मुश्किल हुआ है ख़त्म करना मुझको नामे का।
वफ़ूरे-शौक़ से रुकता नहीं ख़ामा रवां होकर ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—वाइज़-उपदेशक, रायगां-व्यर्थ, नामा-पत्र, वफ़ूरे शौक-शौक की ज्यादती, ख़ामा-लेखनी, रवां होकर-चलकर।

२५—दम लबों पर था दिले-ज़ार के घबराने से।
आ गई जान में जान आपके आ जाने से॥ १॥
बचताहूं कूवये-हसीनां की हवा खाने से।
फ़ायदा क्या है दबी आग के भड़काने से॥ २॥
मैं जो कहता हूं कि मरता हूं वो फ़रमाते हैं।
कारे-दुनिया न रुकेगा तेरे मर जाने से॥ ३॥

२६—रँगे-शराब से मेरी नीयत बदल गई।
वाइज़ की बात रह गई साक़ी की चल गई॥ १॥
तैयार थे नमाज़ पै हम सुन के जिक्रे-हूर।
जलवा बुतों का देख के नीयत बदल गई॥ २॥
चमका तेरा जमाल जो महफ़िल में वक्ते-शाम।
परवाना बेक़रार हुआ शमअ़ जल गई॥ ३॥

२७—मैं नज़अ़ में हूं आयें तो अहसान है उनका।
लेकिन ये समझलें कि तमाशा नहीं होता॥ १॥
हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वो कत्ल भी करते हैं तो चरचा नहीं होता॥ २॥

शब्दार्थ—नज़अ़-अन्तिम समय।

२८—जब कहा मैंने भुला दो गैर को हंस कर कहा।
याद फिर मुझको दिलाना भूल जाने के लिये॥ १॥
खूब उम्मीदें बंधी लेकिन हुईं हिरमां नसीब।
बदलियां उट्ठी मगर बिजली गिराने के लिये॥ २॥

शब्दार्थ—हिरमां-दुःख।

२९—तुमने बीमारे-मौहब्बत को अभी क्या देखा।
जो ये कहते हुवे जाते हो कि देखा देखा॥ १॥

तिफ़्ले-दिल को मेरे जाने लगी किसकी नज़र।
मैंने कमबख़्त को दो दिन भी न अच्छा देखा ॥ २ ॥

३०—इस जफ़ा पर भी तबियत उस पै बस आ ही गई।
एक अदा ज़ालिम ने ऐसी की कि वो भा ही गई ॥ १ ॥

आशिक़ों को रस्मे-ऐशे-दुनयवी रायज नहीं।
क़ैस[1] कब दूल्हा बना लैला कहां ब्याही गई ॥ २ ॥

३१—जब उनको रहम कुछ आया हया ने समझाया।
बिगड़ बिगड़ गई तक़दीर मेरी बन बन के ॥ १ ॥

मरीज़ों-ग़म को डराया करे न फिर इतना।
क़ज़ा जो देखले तेवर तुम्हारी चितवन के ॥ २ ॥

शब्दार्थ—हया-लज्जा।

३१—हया से सर झुका लेना अदा से मुस्करा देना।
हसीनों को भी कितना सहल है बिजली गिरा देना ॥ १ ॥

ये तर्ज़ अहसान करने का तुम्हीं को ज़ेब देता है।
मरज़ में मुबतला करके मरीज़ों को दवा देना ॥ २ ॥

३३—वफ़ा बुतों में नहीं है ख़ुदा को पायें कहां।
इसी फ़िराक़ में कटते हैं दिन कि जायें कहां ॥ १ ॥

ये कहके ख़ूने-जिगर मांगता है ग़म दिल से।
कि तेरे घर में रहें रात दिन तो खायें कहां ॥ २ ॥

३४—हूर मिस को मये-गुलगू को परी कहते हैं।
शेख़ ख़ुश हों कि ख़फ़ा हम तो खरी कहते हैं ॥ १ ॥

हुस्न के बाब में 'अकबर' की सनद ठीक नहीं।
ये तो हर एक बुते-कमसिन को परी कहते हैं ॥ २ ॥

---

१ मजनूं।

शब्दार्थ—मये गुलगूं-सुर्ख़ शराब, कमसिन—कम उम्र।

३५—उलफ़त जो कीजिये ग़र्ज़—आशना से क्या।
वादा जो लीजिये तो बुते—बेवफ़ा से क्या ॥ १ ॥

क़ातिल तुम्हें कहेंगे जहां में हमें शहाद।
अय यार और होगा तुम्हारी जफ़ा से क्या ॥ २ ॥

३६—अहबाब क्या करेंगे ठहर कर मज़ार पर।
बालीं पै ख़ाक उड़ाने को हाँ आरज़ू रहे ॥ १ ॥

फ़ितना रहे फ़िसाद रहे गुफ़्तगू रहे।
मंज़ूर सब मुझे जो मेरे घर में तू रहे ॥ २ ॥

शब्दार्थ—अहबाब-मित्रगण, मज़ार-क़ब्र, बालीं-सिरहाना, आरज़ू-इच्छा।

३७—ज़िन्दा जो तेरे हिज्र में हूं मैं तो क्या अजब।
गो तू नहीं है पास तेरी आरज़ू तो है ॥ १ ॥

मुझ को तो देख लेने से मतलब है नासहा।
बदख़ू अगर है यार तो हो ख़ूबरू तो है ॥ २ ॥

शब्दार्थ—बदख़ू-बुरे स्वभाववाला, ख़ूबरू-सुन्दर।

३८—आस्मां से क्या ग़रज़ जब है ज़मीं परये चमक।
माहो—अन्जुम से हैं बढ़कर उनके बुन्दे बालियां ॥१॥

फूल[1] वो कहती है मुझको मैं उन्हें समझा हूं फूल।
हैं गुले-रंगी से बेहतर इन गुलों की गालियां ॥ २ ॥

शब्दार्थ—मांह-चांद, अन्जुम-तारे।

२६—पहुंचना दाद को मज़लूम का मुश्किल ही होता है।
कभी क़ाज़ी नहीं मिलते कभी क़ातिल नहीं मिलता ॥ १ ॥

---

१ Fool

ये हुस्नो-इश्क़ ही का काम है शुबहा करें किस पर।
मिजाज़ उनका नहीं मिलता हमारा दिल नहीं मिलता॥ २॥

शब्दार्थ—दाद-न्याय, मज़लूम-अन्याय-पीड़ित।

४०—राज़े-बुते-शोख़ की ख़बर ही न मिली।
दिल क्या मिलता कभी नज़र ही न मिली॥ १॥

क्या वस्ल का हौसला करें पेशे-रक़ीब।
जिनको इस वक्त तक कमर ही न मिली॥ २॥

शब्दार्थ—राज़-रहस्य।

४१—उठाता था हज़ारों सख़्तियां दिल में इसे रखकर।
मेरे संगे-लहद पर आरज़ू पटकेगी सर अपना॥ १॥

कहीं देखा न हस्ती वो कदम का इश्तराक ऐसा।
जहां में मिस्ल रखती ही नहीं उनकी कमर अपना॥ २॥

शब्दार्थ—संगे लहद-क़ब्र का पत्थर, आरज़ू-इच्छा, हस्ती-अस्तित्व, अदम-अनुपस्थिति, इश्तराक-मेल।

४२—बहुत अच्छा हुवा आये न वो मेरी अयादत को।
जो वो आते तो ग़ैर आते जो ग़ैर आते तो ग़म होता॥ १॥
अगर क़बरें नज़र आतीं न दारा वो सिकन्दर की।
मुझे भी इश्तयाक़े-दौलतो-जाहो-हशम होता॥ २॥

शब्दार्थ—अयादत-मिज़ाज पूछना, इश्तयाक-शौक, जाहो हशम-वैभव तथा ऐश्वर्य।

४३—किसी से वो मोहब्बत हो मोहब्बत जिसको कहते हैं।
फिर उससे ऐसी फ़ुरक़त हो कि फ़ुरक़त जिसको कहते हैं॥ १॥
दिलो हालत का अन्दाज़ा हो उस वक्त ग़ाफ़िल को।
मुसीबत ही नहीं देखी मुसीबत जिसको कहते हैं॥ २॥
शब्दार्थ—फ़ुरक़त-जुदाई।

४४—लहज़ा २ है तरक्की पै तेरा हुस्नो-जमाल ।
जिस को शक हो तुझे देखे तेरी तस्वीर के साथ ॥ १ ॥[1]
नातवानी मेरी देखी तो मुसव्विर ने कहा ।
डर है तुमभी कहीं खिच आवो न तसवीर के साथ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—लहज़ा-प्रति क्षण, मुसव्विर-चित्रकार ।

४५—सरसर ने लाख चाहा उड़ाना उस गली से ।
अब तक गुबार अपना ख़ाके-रहे-वफ़ा है ॥ १ ॥
रंगीं तेरी अदा ने दिल ख़ूं किया चमन का ।
जो गुल है दाग़-दिल है जो बर्ग है हिना है ॥ २ ॥

शब्दार्थ—सरसर-आँधी, रहे वफ़ा-वफा का रास्ता, बर्ग-पत्ता, हिना-मेंहदी ।

४६—दिन रात की ये बेचैनी है ये आठ पहर का रोना है ।
आसार बुरे हैं फ़ुरक़त में मालूम नहीं क्या होना है ॥ १ ॥
क्यों पस्त हुई है हिम्मते-दिल क्यों रोक रही है मायूसी ।
कोशिश तो हम अपनी सी करलें होगा वही जो होना है ॥ २ ॥

४७—उन्हें पसन्द नहीं और इस से मैं बेज़ार ।
इलाही फिर ये दिले-बेक़रार क्या होगा ॥ १ ॥
अज़ीज़ो सादा ही रहने दो लौहे-तुरबत को ।
हमी मिटे तो ये नक़्शो-निगार क्या होगा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—लौहे तुरबत-क़ब्र का पत्थर ।

---

१ पद्माकर ने भी इसी कारण किसी ब्रज-बाला के स्वरूप-वर्णन में अपनी असमर्थता प्रकट की है :—

पल पल में पलटन लगे जाके अंग अनूप ।
ऐसी एक ब्रज-बाल को कहि नहीं सकत सरूप ॥

४८—गुञ्चये-दिल को नसीमे-इश्क़ ने वा कर दिया।
मैं मरीज़े-होश था मस्ती ने अच्छा कर दिया ॥ १ ॥

सब के सब बाहर हुये वहमो-ख़िरद होशो तमीज़।
ख़ानये-दिल में तुम आओ हमने परदा कर दिया ॥ २ ॥

शब्दार्थ—गुंचये दिल-दिल की कली, नसीमे इश्क़-प्रेम की हवा, समझ, ख़िरद-बुद्धि, होशो तमीज़-विवेक.

४९—इनायत तख़लिये में बज़्म में ना-आशना होना।
ग़ज़ब हैं ये अदायें दम ही भर में क्या से क्या होना ॥

जो दिक़्क़त है तो ये है दिल नहीं है मेरे क़ब्ज़े में।
मुझे तसलीम है इरशादे-वाइज़ का बजा होना ॥

शब्दार्थ—तख़लिया-एकान्त, बज़्म-सभा. नाआशना-जिससे जान पहचान न हो, तसलीम-स्वीकार, इरशादे वाइज़-उपदेशक का कथन, बजा-ठीक।

५०—आप से आते हो कब उश्शाक़े-मुज़्तर की तरफ़।
जज़्बे-दिल ये तुमको लाया है मेरे घरकी तरफ़ ॥ १ ॥

पूछता है जब कोई उनसे किसे है तुम से इश्क़।
देखते हैं प्यार से शरमाके 'अकबर' की तरफ़ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—उश्शाके मुज़तर-व्याकुल प्रेमियों, जज्बे दिल-हृदय की आकर्षण शक्ति।

५१—नज़अ में हूं अब भी आजायें वो दम भर के लिये।
और तो क्या एक निगाहे आख़िरी हो जायगी ॥

शब्दार्थ—नज़अ-प्राण निकलने का समय।

५२—दिल लेके कहते है तेरी ख़ातिर से ले लिया।
उलटा मुझी पे रखते हैं अहसान लीजिये ॥

५३—जब कहा मैंने मेरा दिल मुझको वापस कीजिये ।
नाज़ा-शोख़ी से वो बोला खो गया मिलता नहीं ॥

५४—गूज से बाले की जुल्फ़ उलझी मैं आशिक़ हो गया ।
ये न ख़ौफ़ आया कि ये अफ़ई है वो ज़ंबूर है ॥
शब्दार्थ—अफ़ई सर्प ।

५५—ज़माना हो गया बिसमल तेरी सीधी निगाहों से ।
खुदा ना ख्वास्ता तिरछी नज़र होती तो क्या होता ॥[1]
शब्दार्थ—बिसमिल-घायल, खुदा ना ख्वास्ता-ईश्वर न करे ।

५६—बुतों के पहले बन्दे थे मिसों के अब हुवे ख़ादिम ।
हमें हर अहद में मुशिकल रहा है बाखुदा होना ॥
शब्दार्थ—अहद-समय, बाखुदा-आस्तिक ॥

५७—खुदा जाने वो क्या समझे कि बिगड़े इस क़दर मुझ पर ।
कहा था मैंने इतना ही मुझे कुछ अर्ज़ करना है ॥
शब्दार्थ—अर्ज़-निवेदन ॥

५८—हंसाते हैं क्यों वो ग़ैरों को मुझ पर ।
यही रोना है अब रोना है जो कुछ ॥

५९—बुतों की याद से दिल मायले-फ़रियाद होता है ।
मगर कहना ही पड़ता है बजा इरशाद होता है ॥

---

१ महाकवि आतिश के अनुसार तो कुछ न होता:—
तिरछी नज़रों से तायरे-दिल हो चुका शिकार ।
जब तीर कज पड़ेगा तो देगा निशाना क्या ॥
किन्तु एक और उस्ताद का कहना है:—
ख़ता करते हैं टेढ़े तीर ये कहने की बातें हैं ।
वो देखें तिरछी नज़रों से ये सीधे दिल पै आते हैं ॥

६०—देख कर मुझ को वो कहते हैं कि अच्छे तो रहे।
जिंदा हैं सांस लिये जाते हैं अच्छे क्या हैं॥

६१—मंज़िले-गोर में क्या खाक मिलेगा आराम।
खू तड़पने की वही और जमीं थोड़ी सी॥

शब्दार्थ—मंज़िल, पड़ाव, खू-आदत।

६२—जफ़ायें झेल कर तासीर उल्फ़त की दिखाते हैं।
हिना की तरह पिस लेते हैं तब हम रंग लाते हैं॥

शब्दार्थ—जफ़ायें बेवफ़ाइयाँ, तासीर-असर, उल्फ़त-प्रेम, हिना-मेंहदी

६३—बनते हो मेरी जान तो आ बैठो गोद में।
तुम जानते हो रूह को क़ालिब जरूर है॥

शब्दार्थ—रूह-आत्मा, क़ालिब-शरीर॥

६४—कहा जो मैंने न तोड़ दिल को तुझे मुनासिब है दिल-नवाज़ी।
तो हँसके बोला कि सहज होगा दिले-शकिस्ता में राह करना॥

शब्दार्थ—दिले शकिस्ता-टूटा हुआ दिल।

६५—तुम्हारे आरिज़े-रोशन ने खोलदी आंखें।
मैं कह रहा था कि अब क्या है मेहरो-माह के बाद॥

शब्दार्थ—आरिज़-कपोल, मेहरो माह-सूर्य, चांद।

६६—बेगानगी नहीं है बस इतनी दोस्ती है।
मैं उनको जानता हूँ वो मुझको जानते हैं॥

६७—नाज़ कहता है कि ज़ेवर से हो तज़ईने-जमाल।
नाज़की कहती है कि सुरमा भी कहीं बार न हो॥[1]

१ महाकवि 'नासिख़' ने भी लिखा है:—
यों नज़ाकत से गरां सुरमा है चश्मे-यार को।
जिस तरह हो रात भारी मर्दुमे-बीमार को॥

शब्दार्थ—तज़ईने जमाल-सौन्दर्य की वृद्धि, बार-बोझ ।

६८—ये परवानों का शमत्रों से लिपटना और जल मरना।
मौहब्बत की रविश ये भी है यों भी प्यार करते हैं ॥

६९—तुम्हारे हुस्न में[1] साइन्स का भी दिल उलझता है ।
कमर को देखकर वो खते-उक़लैदस समझता है ॥

७०—वस्ल का उस बुते-खुदबीं से कोई हिन्ट[2] कहां ।
सिर्फ़ बोसे में भला सैल्फ़ गवर्नमैन्ट[3] कहाँ ॥

७१—मेरे हवास इश्क़ में क्या कम है मुन्तशिर ।
मजनूं का नाम हो गया क़िसमत की बात है ॥

७२—क़ैस का ज़िक्र मेरी शाने--जनूं के आगे ।[4]
अगले वक्तोंका कोई बादिया-पैमा होगा ॥

शब्दार्थ—जनूं—उन्माद, बादिया पैमा—जङ्गलों में फिरनेवाला ।

हिन्दी के महाकवि बिहारीलाल का भी कहना है:—

भूषन-भार संभारि है क्यों यह तन सुकुमार ।
सूधे पांय न धर परत सोभा ही के भार ॥

मुन्शी देवीप्रसाद साहब 'प्रीतम' ने इस दोहे का अनुवाद इस प्रकार किया है:—

संभाले बारे-ज़ेवर क्या तेरा नाज़ुक बदन प्यारी ।
कजी रफ्तार की कहती है बारे-हुस्न है भारी ॥

१ Science

२ Hint ३ Self Government.

४ उर्दू के अन्य कवियों ने भी मजनूं की बराबरी की है या मजनूं से भी बढ़ कर होने का दावा किया है । महाकवि 'दाग़' का शेर है:—

क़ैसो-फ़रहाद के क़िस्से तो सुना करते हो लेकिन ।
दाद दो इसकी हमने तुम्हें चाहा कैसा ॥

७३—तेरी तिरछी नज़र से हमको डर क्या।
मोहब्बत की तो फिर दिल क्या जिगर क्या॥

७४—वलवले उठते है दिल में देख कर उनका जमाल।
हौसले होते हैं पस्त उनकी नज़र को देख कर॥

शब्दार्थ—वलवले-उमङ्गें, जमाल-रूप, हौसला पस्त होना-हिम्मत टूटना।

७५—दिला क्योंकर मैं उस रुख़सारे-रोशन के मुक़ाबिल हूं।
जिसे खुरशीदे-महशर देख कर कहता है मैं तिल हूं॥

शब्दार्थ—रुख़सार-कपोल, गाल, खुरशीद-सूर्य, महशर-क़यामत, ईश्वरीय न्याय का दिन।

७६—एक दिल था सो दिया और कहां से लाऊं।
झूंठ कहिये तो मैं कहदूं कि नहीं और भी है॥

७७—ज़ेरे-गेसू रूवे-रोशन जलवागर देखा किये।
शाने-हक़ से एक जा शामो-सहर देखा किये॥

शब्दार्थ—ज़ेरे गेसू-जुल्फों के नीचे, रूवे रोशन-उज्वल मुख शानेहक़-ईश्वर की महिमा, एक जा-एक जगह, शामो सहर-सांयकाल तथा प्रातः काल।

७८—फेर सकती नहीं तक़वे से मुझे कोई सदा।
शर्त ये है कि वो पाज़ेब की झन्कार न हो॥

शब्दार्थ—तक़वा-परहेज़गारी, सदा-आवाज़।

७९—कुछ नतीजा न सही इश्क़ की उम्मीदों का।
दिल तो बढ़ता है तबियत तो बहल जाती है॥

८०—बुते-मशरिक़ नहीं मोहताजे-सामां।
कमर ही जब न हो कैसा कमरबन्द॥

३-हास्य।

१—बुतों से मेल ख़ुदा पै नज़र ये ख़ूब कही।
शब गुनाह वो नमाज़े-सहर ये ख़ूब कही ॥ १ ॥
फ़िटन नफ़ीस सड़क ख़ुशनुमा डिनर[1] हर शब।
ये लुत्फ़ छोड़ के हज्ज का सफ़र ये ख़ूब कही ॥ २ ॥
तुम्हारी ख़ातिरे-नाजुक का है ख़याल फ़क़त।
वरना मुझको रक़ीबों का डर ये ख़ूब कही ॥ ३ ॥
जनाबे-शेख़ का हो जाऊं मौतक़िद माक़ूल।
निगाहे-यार रहे बेअसर ये ख़ूब कही ॥ ४॥
सवाले-वस्ल करूं या तलब हो बोसे की।
वो कहते हैं मेरी हर बात पै ये ख़ूब कही ॥ ५ ॥

शब्दार्थ—शब-रात, नमाजे सहर-प्रातःकाल की नमाज़, मौतक़िद मानने वाला।

२—मज़हब का हो क्योंकर इल्मो-अमल दिल ही नहीं भाई एक तरफ़।
किरकिट की खिलाई एक तरफ़ कालिज की पढ़ाई एक तरफ़ ॥१॥
क्या ज़ौक़े-इबादत हो उनको जो मिस के लबों के शैदा हों।
हलवाये-बहिश्ती एक तरफ़ होटल की मिठाई एक तरफ़ ॥२॥
ताऊनो-तप और खटमल-मच्छर सब कुछ है ये पैदा कीचड़ से।
बम्बेकी रवानी एक तरफ़ और सारी सफ़ाई एक तरफ़ ॥ ३ ॥
क्या काम चले क्या रंग जमे क्या बात बने कौन उसकी सुने।
है अकबरे-बेकस एक तरफ़ और सारी ख़ुदाई एक तरफ़ ॥४॥

---

१. Dinner.

फ़र्याद किये जा अय अकबर कुछ हो ही रहेगा आख़िरकार।
अल्लाह से तोबा एक तरफ़ साहब की दुहाई एक तरफ़ ॥५॥
शब्दार्थ—जौक़े इबादत-पूजा का चाव, लब-ओष्ट, शैदा-आसक्त ॥

३—उन्हें शौक़े-इबादत भी है और गाने की आदत भी।
निकलती हैं दुआयें उनके मुंह से ठुमरियां होकर ॥ १ ॥
न थी मुतलक़ तवक़्क़ो के बिल[1] बनाकर पेश कर दोगे।
मेरी जां लुट गया मैं तो तुम्हारा मेहमां हो कर ॥ २ ॥
निकाला करती है घर से ये कह कर तू तो मजनूं है।
सता रखा है मुझको सास ने लैलाकी मां होकर ॥ ३ ॥
रक़ीबे-सिफ़ला-ख़ू ठहरे न मेरी आह के आगे।
भगाया मच्छुरों को उनके कमरे से धुंवा होकर ॥ ४ ॥
शब्दार्थ—इबादत-पूजन, सिफ़ला-ख़ू-कमीन ॥

४—अपना रंग उन से मिलाना चाहिये।
आजकल पीना पिलाना चाहिये ॥ १ ॥
चाल में तलवार है दिल की घड़ी।
तोप से इस को मिलाना चाहिये ॥ २ ॥
क़ौल-बाबू का है जब बिल[2] पेश हो।
पेशे-हाकिम बिलबिलाना चाहिये ॥ ३ ॥
कुछ न हाथ आये मगर इज्जत तो है।
हाथ उस मिस से मिलाना चाहिये ॥ ४ ॥
शब्दार्थ—पेश-सन्मुख।

५—जब मैं कहता हूं कि या अल्लाह मेरा हाल देख।
हुक्म होता है कि अपना नामये-आमाल देख ॥ १ ॥
सोच तुझ को है अगर आइन्दा पालिटिक्स[2] की।
ले नतायज से मदद और हिस्ट्री में फ़ाल देख ॥ २ ॥

---

१. Bill २. Bill. ३. Politics.

शौक़े-तूलो-पेच इस जुल्मतकदे में है अगर।
बात बङ्गालों की सुन बङ्गालनों के बाल देख ॥ ३ ॥

हुस्न-मिस पर कर नज़र मजहब अगर जाता है जाय।
क़द्रदां को निर्ख़ की क्या बहस अकबर माल देख ॥ ४ ॥

शब्दार्थ--नामये आमल-कर्मों का लेखा, जुल्मत कदा-अन्धकारमय स्थान

६—अज़ीज़ाने-वतन को पहले हीं से देता हूं नोटिस[१]।
चुरट और चाय की आमद है हुक़्क़ा पान जाता है॥ १ ॥

ये इतनी गोशमाली तिफ़्ले-मकतब की नहीं अच्छी।
ज़बां आती है उस को सच है लेकिन कान जाता है॥ २ ॥

मेरी डाढ़ी से रहता है वो बुत इन्कार पर क़ायम।
मगर जब दिल दिखाता हूं तो फ़ौरन मान जाता है॥ ३ ॥

शब्दार्थ—गोशमाली-कान खैंचना, तिफ्ल-बच्चा।

७—चल गई मूसा की लाठी रह गया जादू का खेल।
साहिरों के सांप को मारा खुदा की मार ने॥ १ ॥

रेल काबे तक अगर बन भी गई तो नाज़ क्या।
अर्शे-बारी तक नहीं पाई रसाई तार ने॥ २ ॥

बाप मां से शेख़ से अल्लाह से क्या उनको काम।
डाक्टर जनवा गये तालीम दी सरकार ने॥ ३ ॥

शब्दार्थ—साहिरों-जादूगरों, नाज़-गर्व, अर्शे बारी-आकाश, खुदा की छत, रसाई-पहुँच।

८—शू मेकरी शुरू जो की एक अज़ीज़ ने।
जो सिलसिला मिलाते थे बहराम ग़ौर से॥ १ ॥

---

१. Notice.

पूछा कि भाई तुम तो थे तलवार के धनी।
मूरिस तुम्हारे आये थे ग़ज़नी वो ग़ोर से ॥ २ ॥

कहने लगे है इस में भी एक बात नोक की।
रोटी हम अब कमाते हैं जूते के जोर से ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—शू मेकरी-जूता बनाना, मूरिस-पुरखा, ग़ज़नी-महमूद गज़नवी की जन्मभूमि, ग़ोर-मौहम्मद ग़ोरी की जन्मभूमि।

९—अकबर मुझे शक नहीं तेरी तेजी में।
और तेरे बयान की दिलावेज़ी में ॥ १ ॥
शैतान अरबी से है हिन्द में बेख़ौफ़।
लाहौल का तरजुमा कर अंग्रेजी में ॥ २ ॥

शब्दार्थ—दिलावेज़ी-चित्ताकर्षकता, लाहौल-भाग शैतान

१०—कचहरियों में पुरसिश हैं ग्रेजुवेटों की।
सड़क पै मांग है कुलियों की और मेटों की ॥ १ ॥
नहीं है क़द्र तो बस इल्मे-दीनो-तक़वे की।
ख़राबी है तो फ़क़त शेख़ जी के बेटों की ॥ २ ॥

शब्दार्थ—पुरसिश-पूछ, तक़वा परहेजग़ारी।

११—मज़हब और मौलवी पै गाली होली।
स्पीच[1] पे अञ्जुमन में ताली होली ॥ १ ॥
दरवाज़ये-मुन्सफ़ी है हम पर क्यों बन्द।
हर बात तो अब बनाबे-आली होली ॥ २ ॥

१२—उश्शाक़ को भी माले-तिजारत समझ लिया।
इस कदर को मुलाहज़ा लिल्लाह कीजिये ॥ १ ॥
भरते हैं मेरी आह को फ़ोनोग्राफ़ में।
कहते हैं फ़ीस लीजिये और आह कीजिये ॥ २ ॥

---

१. Speech.

१३--मिल का आटा है नल का पानी है।
आबो-दाने की हुक्मरानी है ॥ २ ॥

एक अदा से महा मिसों ने कम आन[1]।
तीर की मुझ में अब रवानी है ॥ २ ॥

शब्दार्थ--रवानी-चाल।

१४--परचा रक्खा जो उसने मैं यह समझा।
पाकेट[2] में ये बीस रुपये का नोट गया ॥१॥

घर पर खोला तो बस यही लिखा था।
क्या शेर थे वाह वाह मैं लोट गया ॥२॥

१५--स्माल[3] नहीं ग्रेट[4] होना अच्छा।
दिल होना बुरा है पेट होना अच्छा ॥ १ ॥

पंडित हो कि मौलवी हो दोनों बेकार।
इन्सान को ग्रेजुएट[5] होना अच्छा ॥ २ ॥

१६--जो दोनों साथ पड़ें तो ये मुनासिब है।
कि अपने घर में क्रिसमस[6] भी कर तू ईद भी कर ॥१॥

खुदा करे कोई बुत आके कहे मुझ से।
बिठा भी ले घर में मुझे मुरीद भी कर ॥२॥

१७--थे केक[7] की फिक्र में सो रोटी भी गई।
चाहते थे बड़ी शय सो छोटी भी गई ॥१॥

वाइज़ की नसीहत क्यों न मानें आखिर।
पतलून की ताक में लंगोटी भी गई ॥२॥

१ Come on. २ Pocket. ३ Small. ४ Great.
५ Graduate. ६ Christmas. ७ Cake.

१८—कर दिया करज़न ने ज़न मरदों की सूरत देखिये।
आबरू चेहरे की सब फ़ैशन बना कर पूंछ ली॥ १॥
सच ये है इन्सान को यूरुप ने हलका कर दिया।
इब्तदा दाढ़ी से की और इन्तहा में मूंछ ली॥ २॥
शब्दार्थ—ज़न-स्त्री, इब्तदा-आरम्भ, इन्तहा-अन्त।

१९—मैं रय्यत हूं वो शाहना दिलरी है कहां।
मुझको क्यों रश्क आये वज़ए-मिल्लते-अंग्रेज़ पर॥१॥
कांटे बिछ जाते हैं उन लोगों की राहे-रिज्क़ में।
खौफ़ आता है छुरी चलती है उनकी मेज़ पर॥२॥
शब्दार्थ—राहे रिज्क-भोजन का मार्ग।

२०—रह गया दिल ही में शौके-सायये-अलताफ़े-खास।
मुझ को आने को इजाज़त दी नहीं बडरूम[1] में॥१॥
खाने के कमरे से रुखसत कर दिया बाद-अज़-डिनर[2]।
थे फ़कत छुरियां ही और कांटे मेरे मक़सूम में॥२॥
शब्दार्थ—अलताफ़े खास-विशेष प्रेम; मक़सूम-भाग्य।

२१—किस्सये-मनसूर सुन कर बोल उठी वो शोख़ मिस।
कैसा अहमक़ लोग था पागल को फांसी क्यों दिया॥१॥
काश अय अकबर वही हालत तुझे भी पेश आय।
और ये काफ़िर पुकारे दर-पनाहे-मन बिया॥२॥
शब्दार्थ—अहमक़-पागल, दरपनाहे मन बिया-मेरी शरण में आ

२२—उनकी तहरीकों से यूं रहती है दुनिया बेचैन।
जिस तरह पेट में बीमार के बाई दौड़े॥ १॥

1 Bed Room 2 Dinner.

मैम्बरी के लिये लपका मेरी जानिब वो ग़ोल।
गाय मोटी नज़र आई तो क़साई दौड़े ॥ २ ॥

२३—ख्वाह साहब को तुम सलाम करो।
ख्वाह मन्दिर में राम राम करो ॥ १ ॥
भाई जी का फ़क़त ये मतलब है।
जिसमें रुपया मिले वो काम करो ॥ २ ॥

२४—मेरी रसाई है दैर में भी हरम में भी मेरी मनज़िलत है।
बुतों से ब्रोसे की है तवक़्क़ो खुदा से उम्मीदे-मग़फ़रत है ॥ १ ॥
झुका है सर अपना पाये-बुत पर ज़बान पर है गिला जफ़ा का।
मेरे अम्ल में है तरज़े-सय्यद ग़ज़ल में अन्दाज़े-लाजपत है ॥ २ ॥

शब्दार्थ—रसाई-पहुँच। दैर-मन्दिर। मनज़िलत-आदर। मग़फ़रत-क्षमा-दान। सैयद-सर सैयद अहमद। लाजपत-पंजाब के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत लाला लाजपतराय।

२५—इस क़दर था खटमलों का चारपाई में हजूम।
वस्ल का दिल से मेरे अरमान रुख़सत हो गया ॥ १ ॥
लात दुनिया ने जो मारी बन गया दींदार वो।
थी बुरी ठोकर मगर शैतान रुख़सत हो गया ॥ २ ॥

शब्दार्थ—अरमान-इच्छा। दीनदार-धार्मिक।

२६—इस से तो इस सदी में नहीं हमको कुछ ग़रज़।
सुक़रात[1] बोले क्या अरस्तू[2] ने क्या कहा ॥ १ ॥

---

१ आप यूनान के बड़े प्रसिद्ध तत्त्वज्ञानी थे। आपका जन्म ईसा से ४६६ वर्ष पूर्व एथन्स में हुवा था। आप आरकीलस (Archelaus) के शिष्य थे। लोगों ने आप पर नास्तिकता तथा युवकों को बिगाड़ने का अभियोग लगाया। न्यायाधीश ने आपको दोषी समझा और प्राण-दण्ड की सजा दी। ईसा से ३६६ वर्ष पूर्व यह महापुरुष ज़हर का प्याला पीकर सदैव के लिये सो गये।

२ अरस्तू भी यूनान का एक प्रसिद्ध तत्वज्ञानी था। आपका जन्म

बहरे-खुदा जनाब[१] दें हमको इत्तला ।
साहब का क्या जवाब था बाबू ने क्या कहा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—बहरे खुदा-ईश्वर के लिये ।

२७—हमको अपने एलबम[१] पर नाज़ का है क्या महल ।
बेहद अरज़ां हो गया है अब तो फ़ोटो[२] आपका ॥ १ ॥

आपके दरशन मुसव्विर के भी हिस्से में नहीं ।
बस लिया जाता है फ़ोटो ही से फ़ोटो आपका ॥ ॥

शब्दार्थ—अरजां सस्ता ।

२८—मोहताजे-दर-वकीलों-मुख़तार हैं आप ।
सारे अमलों के नाज़बरदार हैं आप ॥ १ ॥

आवारा वो मुन्तशिर हैं मानिन्दे-गुबार ।
मालूम हुआ मुझे ज़मीदार हैं आप ॥ २ ॥

शब्दार्थ—दर-द्वार । मुन्तशिर-व्यग्र ।

२९—कहती हैं ज़राहे-किब मुझ से वो गर्ल[३] ।
क्या तुझ से मिलूं कहीं का तू ड्यूक[४] न अर्ल[५] ॥ १ ॥

अकबर ने कहा दिखा के दाग़े-दिलो- अश्क ।
हैं मेरी गिरह में भी ये रूबी[६] ये पर्ल[७] ॥ २ ॥

ईसा से ३८४ वर्ष पूर्व स्टैगोरा नामक स्थान में हुआ था, किन्तु आप अधिकतर एथैन्स में रहा करते थे। आप महान सिकन्दर (Alexander the Great) के गुरू भी थे। ईसा से ३३२ वर्ष पूर्व इस महापुरुष ने सदैव के लिये अपनी कीर्ति छोड़ कर इस संसार से मुंह मोड़ लिया।

१ Album २ Photo ३ Girl ४ Duke ५ Earl ६ Ruby ७ Pearl

शब्दार्थ—ज़राहे किब्र-घमण्ड से, गर्ल-लड़की, ड्यूक-अर्ल-उपाधियों के नाम, अश्क-आंसू, रूपी-लाल, पर्ल-मोती ।

३०—उम्मीदे-चश्मे-मरवत कहां रही बाक़ी ।
ज़रिया बातों का जब सिर्फ़ टेलीफ़ून[1] हुवा ॥ १ ॥
निगाहे-गर्म किरस्मस[2] में भी रही हम पर ।
हमारे हक़ में दिसम्बर भी माहे-जून हुआ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—चश्मे मरव्वत-कृपा दृष्टि ।

३१—वो मिस बोली मैं करती आपका ज़िक्र अपने फ़ादर[3] से ।
मगर आप अल्लाह अल्लाह करता है पागल का माफ़िक़ है ॥ १ ॥
न माना शेख़ जी ने चल गये दस पांच दे कह कर ।
अगर क़ाबिज़ हैं ये बिसकुट तो हों अल्लाह मालिक है ॥ २ ॥

३२—शायक़ तहक़ीक़ के ये मज़मूं सुनलें ।
इन्सान की शक्ल जैसे मैमूं न बना ॥ १ ॥
पाजामा भी यूं ही इरतक़ाक़ से बदला ।
सिमटा उभरा ग़र्ज़ कि पतलून बना ॥ २ ॥

शब्दार्थ—मैमूं-बन्दर, इतरक़ा-विकाश ।

३३—फ़ैज़े-कालिज से जवानी रह गई बालाये- ताक़ ।
इन्तहां पेशे नजर और आशिक़ी बालाये-ताक़ ॥ १ ॥
वो चिराग़ों से हैं जलते ऐसे हैं रोशन ज़मीर ।
कहते हैं रखिये पुरानी रोशनी बालाये-ताक़ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—रोशनज़मीर-दिव्य दृष्टि रखने वाले, बालायेंताक़-ताक़ पर अर्थात् अलग ।

३४—नुक़ता ये सुना है एक बङ्गाली से ।
करना हो बसर जो तुम को खुशहाली से ॥ १ ॥

१ Telephone २ Christmas ३ Father

ख़ाली हो जगह तो अपने भाई को दिलावो।
गुस्सा आय तो काम लो गाली से ॥ २ ॥

शब्दार्थ—नुकता-बारीक बात ।

३५—बाबू जी का वो बुत हुवा नौकर।
ग़ैर उसको पयाम देता है ॥१॥
बाबू कहते है वो न जायगा।
मेरे अन्डर[1] में काम देता है ॥२॥[2]

३६—लज़्ज़ते नाने-जवीं तुमको मुबारिक अय शेख़।
मुझ गुनहगार को है सिर्फ़ मुतञ्जन काफ़ी ॥१॥
हज़रते-ख़िज़्र टिकट मुझको दिलादें अकबर।
रहनुमाई के लिये मेरी है अञ्जन काफ़ी ॥२॥

३७—कुछ सैन नहीं ख़ुश आते हैं न भाते हैं बनरजी।
मैं ज़ील[2] का तालिब हूँ न ख़्वावाहाने-आनर[3] जी ॥१॥
सुनता नही लैक्चर[4] मैं पड़ा रहता हूं दिन रात।
लगता फ़क़त लेडियों में वक़्-डिनर[5] जी ॥२॥

३८—सब समझते हैं कि ये इश्क़े-बुतां एक रोग है।
लेकिन इसको क्या करें मिलता जो मोहनभोग है ॥१॥
शाहिदाने-मग़रिबी करते नहीं मुझको क़बूल।
टाल देते हैं ये कहकर आप काला लोग है ॥२॥

शब्दार्थ—शाहिदाने मग़रिबी-पश्चिम के माशूक़ ॥

१ Under

२ इस पद्य में अकबर ने अंग्रेज़ी पढ़े बाबू लोगों की उर्दू का नमूना दिखाया है।

२ Zeal. ३ Honour. ४ Lecture. ५ Dinner.

३६—हुस्न देखिये बुताने-काशी का।
चेहरा है चांद पूर्णमाशी का ॥१॥
चश्मे-तर देख कर वो मिस बोली।
महकमा है ये आबपाशी का ॥२॥

४०—परदे का किया है खुद अड्डा पैदा।
खुद हमने किया इज़ार और अड्डा पैदा ॥१॥
क्या खूब कहा है मौलवी मेहदी ने।
नेचर ने किया है हमको नङ्गा पैदा ॥२॥
शब्दार्थ—नेचर-प्रकृति ॥

४१—ज़र कौम से लेकर ऐसा सामान करो।
जिस से कि तुम्हारी बज़्म बन जाये बहिश्त ॥१॥
हलवे-मांडे से काम रखो भाई।
मुरदा दोज़ख में जाय या जाये बहिश्त ॥२॥
शब्दार्थ—ज़र रुपया, बज्म सभा।

४२—लैला ने साया पहना मजनूं ने कोट पहना।
टोका जो मैंने बोले बस बस खामोश रहना ॥१॥
हुस्नो-जनूं बदस्तूर अपनी जगह हैं लेकिन।
है लुत्फे-बहरे-हस्ती फ़ैशन के साथ बहना ॥२॥
शब्दार्थ—लुत्फे बहरे हस्ती-जीवन का आनन्द ॥

४३—छोड़ लिट्रेचर को अपनी हिस्ट्री को भूल जा।
शेखो-मसजिद से तआल्लुक़ तर्क कर स्कूल जा ॥ १ ॥
चार दिन की ज़िन्दगी है कोफ्त से क्या फ़ायदा।
खा डबल रोटी किलरकी कर खुशी से फूल जा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—लिट्रेचर-साहित्य, तआल्लुक़-सम्बन्ध, तर्क कर-त्याग, कोफ्त-रंज।

४४—तिल खेत में मिल जाय तो गोदाम में ले जायें।
क्या फ़ाकदा आरिज़ पे किसी बुत के जो तिल है॥ १ ॥
तनख्वाह के बिल से हमें होती हैं मुसर्रत।
और शेख़ ये कहता है कि ये सांप का बिल है॥ २ ॥

शब्दार्थ—आरिज़-कपोल, बुत-माशूक़, मुसर्रत-खुशी।

४५—फ़रमायें मेरा क़सूर जो हज़रत माफ़।
जो अमर है वाक़ई गुज़ारिश करूं साफ़॥ १ ॥
इन्कार नहीं नमाज़- रोज़े से मुझे।
लेकिन ये तरीक़ अब है फ़ैशन के खिलाफ़॥ २ ॥

४६—दरबारे-सल्तनत में है किब्रो खुदपसन्दी।
मज़हब में देखता हूं जंग और गिरोहबन्दी॥ १ ॥
रिन्दी वो आशिक़ी का है शग्ल सबसे बेहतर।
लैमनेड है और व्हिसकी बन्दा है और बन्दी॥ २ ॥

शब्दार्थ—किब्र-गर्व, जंग-लड़ाई, गिरोह बन्दी-अपने अपने अखाड़े अलग अलग क़ायम करना।

४७—मैंने कुछ इख्तलाफ़ किया आप से अगर।
गुस्सा अबस है आपका नौकर नहीं हूं मैं॥
अय क़िबला मुझ पै आप चढ़े आते हैं ये क्यों।
मैम्बर इस अन्जमन का हूं मिम्बर नहीं हूं मैं॥

शब्दार्थ—इख्तलाफ़-मतभेद, अबस-व्यर्थ. क़िबला-मान्यवर, मिम्बर-सभासद, अन्जमन-सभा, मिम्बर-उपदेश देने का स्थान।

४८—बेदिल हमें बरोज़े-सलूनो न कीजिये।
लिल्लाह बात मानिये नोनो[१] न कीजिये॥

---

१ No No

कल की सदा न खूबिये-फ़ितरत न लुत्फ़े दीद ।
बेहतर यही है ख्वाहिशे-फ़ोनो न कीजिये ॥

शब्दार्थ—लिल्लाह ईश्वर के लिये. नो-नो नहीं नहीं. सदा आवाज़ फ़ितरत स्वभाव. लुत्फ़-दीद-देखने का मज़ा ।

४६—हर एक को खुश करूं मैं क्योंकर साहब ।
अपनी ही तरफ़ बुलाते हैं हर साहब ॥
आसायशे-उम्र के लिये काफ़ी है ।
बीबी राज़ी हों और कलक्टर साहब ॥

शब्दार्थ—आसायशे उम्र-जीवन का सुख ।

५०—जौरे-फ़लक का माजरा आप से क्या बयां करूं ।
तफ़क़ा देखिये ज़रा हम पै ये हैं अजीब दिन ॥
अक्ल सुपुर्दे-मास्टर माल सुपुर्दे-आंजनाब ।
जान सुपुर्दे-डाक्टर रूह सुपुर्दे-डार्विन ॥

शब्दार्थ—जौरे फ़लक-आसमान का जुल्म, माजरा-विवरण, तफ़का-अन्तर, आंजनाब-सम्मानित पुरुष, रूह-आत्मा ।

५१—ख्याल शाइर का है निराला ये कह गया एक कहने वाला ।
शबाब के साथ यूं है रिन्दी कि जैसे फागन के साथ होली ॥
कहां ये रिन्दाने-एशिया से कि बज्मे-इशरत के ठाठ बदलें ।
उड़नखटोला है अब मिसां का गई परीजान की वो डोली ॥

शब्दार्थ—शबाब-जवानी, रिन्दी-मस्ती, रिन्द-मस्त, बज्मे इशरत-आनन्द मनाने की सभा ॥

५२—मग़रिबी ज़ौक़ है और वज़अ़ की पाबन्दी भी ।
ऊंट पर चढ़के थियेटर को चले हैं हज़रत ॥

शब्दार्थ—ज़ौक़-शौक, वज़अ़-मर्यादा, पाबन्दी-पालन ।

५३—शेख़ आनर के लिये आते हैं मैदान के बीच।
वोट हाथों में हैं स्पीच क़लमदान के बीच॥

५४—पादरी से वो मिले पहले तो क्या शेख़ को उज्र.।
देखिये पीर का नम्बर तो है इतवार के बाद॥

५५—शेख़ के दामन को अकबर ने दिया बोसा जो कल।
हमने बरकत के लिये एक मिस का साया छू लिया॥

५६—जो जिसके मुनासिब था गर्दूं ने किया पैदा।
यारों के लिये ओहदे चिड़ियों के लिये फन्दे॥

शब्दार्थ—गर्दूं-आकाश।

५७—मग़रिब ने ख़ुर्दबीं से कमर उन की देखली।
मशरिक़ की शायरी का मज़ा किरकिरा हुआ॥

शब्दार्थ—मग़रिब-पच्छिम, मशरिक़-पूर्व, ख़ुर्दबीं-सूक्ष्म-दर्शक-यन्त्र

५८—क्या अजब हो गये मुझ से मेरे दमसाज़ जुदा।
दौरे-फ़ोनो में गले से हुई आवाज़ जुदा॥

शब्दार्थ—दमसाज-सान्त्वना देने वाले. दौर-युग।

५९—पाकर ख़िताब नाच का भी शौक़ हो गया।
सर [१] हो गये तो बाल का भी शौक़ हो गया॥

शब्दार्थ—सर-एक उपाधि, बाल-नाच।

६०—क्या वस्ल का हौसला करें पेशे-रक़ीब।
जिनको इस वक़्त तक कमर ही न मिली॥

६१—बन्दूक़ का नहीं है जो लैसन्स [२] ग़म नहीं।
मैंने तो इस ख़याल ही को गोली मारदी॥

६२—आदत जो पड़ी हो हमेशा से वो दूर भला कब होती है।
रक्खी है चिनौटी पाकेट [३] में पतलून के नीचे धोती है॥

---

१. Sir. २. License. ३. Pocket.

६३—मौलवी साहब न छोड़ेंगे खुदा गो बख्श दे।
घेर ही लेंगे पुलिसवाले सज़ा हो या न हो॥

६४—क्यों सिविल सर्जन [१] का आना रोकता है हमनशीं।
इस में है एक बात आनर [२] की शफ़ा हो या न हो॥

६५—बाबू हमें निगल गये इस अहद में तो खैर।
रहना पड़ा है नबियों को मछली के पेट में॥[३]

१. Civil Surgeon. २. Honour.

३. एशिया माइनर में यूनिस नामक मुसल्मानों के एक नबी हुवे हैं। लोगों ने आपके उपदेश की उपेक्षा की। कहा जाता है कि आपने खुदा से शिकायत की। खुदा ने उत्तर दिया कि जन साधारण से कहदो कि उन्हें थोड़ा अवकाश और दिया जाता है। यदि इस अवधि में भी वे तुम्हारे उपदेश को न मानेंगे और अपनी पुरानी बातों ही पर डटे रहेंगे तो मैं अपना कोप प्रगट करूंगा। कोप प्रगट होने से पूर्व अमुक २ चिन्ह दृष्टिगोचर होंगे। अस्तु। लोगों ने यूनिस साहब की बात न सुनी। अवधि समाप्त होने को आई तो कोप के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे। यूनिस साहब ने यह सोच कर कि कहीं मैं भी अन्य मनुष्यों के साथ २ किसी संकट में न पड़ जाऊं अपना देश छोड़ने का विचार कर लिया और एक नाव में बैठ कर चल दिये। मँझधार में पहुंचने पर नाव डगमगाने लगी। मल्लाह ने कहा, "हमारी नाव उस समय डगमगाती है जब कोई ऐसा मनुष्य नाव में बैठ जाता है जो अपने स्वामी की आज्ञा के बिना भाग आया हो। यदि कोई ऐसा मनुष्य हो तो नाव से पानी में कूद पड़े नहीं तो अपने साथ सब को ले डूबेगा।" यूनिस साहब ने सोचा कि ऐसा तो मैं ही हूं। बिना खुदा की आज्ञा के मैं अपना देश छोड़ रहा हूं। यह सोच कर आप पानी में कूद पड़े। एक मछली, जो मुंह खोले हुये बैठी थी, आपको निगल गई।

६६—डाढ़ी खुदा का नूर है बेशक मगर जनाब।
फ़ैशन के इन्तज़ामे-सफ़ाई को क्या करूं॥

६७—न कटलट है यहां न कांटा छुरी है।
मगर बी है तो खिचड़ी क्या बुरी है॥

६८—खींचों न कमानों को न तलवार निकालो।
जब तोप मुक़ाबिल है तो अख़बार निकालो॥

६९—बिरगड के मौलवी को क्या पूछते हो क्या है।
मग़रिब की पालिसी का अरबी में तरजुमा है॥

७०—माल गाड़ी पे जिन्हें भरोसा है अकबर।
उनको क्या ग़म है गुनाहों की गरां-बारी का॥

शब्दार्थ—गरां बारी-बोझ.

७१—फ़रमा गये हैं ये खूब भाई घूरन।
दुनिया रोटी है और मज़हब चूरन॥

७२—आदम छुटे बहिश्त से गेहूं के वास्ते।
मस्जिद से हम निकल गये बिस्कुट की चाट में॥

७३—साहब सलामत अब भी मेरी शेख़ जी से है।
लेकिन छुटे छुमाहे वही राह हाट में॥

७४—बोले चपरासी जो मैं पहुंचा ब-उम्मीदे-सलाम।
फांकिये ख़ाक आप भी साहब हवा खाने गये॥

७५—उनको बिस्कुट के लिये सूजी की थैली मिल गई।
कैम्प में गुल मच गया मजनूं को लैली मिल गई॥

७६—इन से बोसा मांगता हूं उन से वोट।
बुत भी मुझ से तङ्ग है-और शेख़ भी॥

७७—नेटवियत पर किया जो मैंने इज़हार-मलाल।
सुन के साहब ने कहा 'सच है मगर हम क्या करें'॥

७८—फ़ज़्ले-खुदा से इज़्ज़त पाई आज हुवे हम सी० एस० आई[१]।
शेख़ न समझे लफ़्ज़-अंग्रेज़ी बोले हुवे हैं ये ईसाई॥

७९—ऐसा शौक़ न करना अकबर, गोरे को न बनाना साला।
भाई रंग यही है अच्छा, हम भी काले यार भी काला॥

८०—यही सबब है अब उनकी बातों पै कान धरते नहीं हैं लड़के।
खिंचा न हो दस्ते- मौलवी से न था यहां कोई कान ऐसा॥

८१—वो हंस के बोले जगह कहां है दिखाऊं कारीगरी जो अपनी।
कहा था मुन्किर से मैंने एक दिन बना तो ले आस्मान ऐसा॥

शब्दार्थ—मुन्किर-नास्तिक।

८२—पकालें पीस कर दो रोटियां थोड़े से जौ लाना।
हमारी क्या अय भाई न मिस्टर हैं न मौलाना॥

८३—इस्लाम को जो कहते हैं फैला बज़ोरे-तेग़।
ये भी कहेंगे फैली खुदाई बज़ोरे-मौत॥

शब्दार्थ—तेग़-तलवार।

८४—जब सुन चुके मेरी ग़ज़लें बोले ला चन्दा।
जो हिनहिनाया है आज इतना तो लीद भी कर॥

८५—कोठी में जमा है न डिपाजिट[२] है बैंक्स[३] में।
कुल्लाश कर दिया मुझे दो चार थैंक्स[४] ने॥

८६—सुना के मिसरा ये शेख़ साहब बहुत ज्यादा हंसा चुके हैं।
हमारी गर्दन वो क्यों न मारें जो नाक अपनी कटा चुके हैं॥

८६—रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस ज़माने में॥

८८—मज़हब ने पुकारा अय अकबर अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं।
यारों ने कहा ये क़ौल ग़लत तनख्वाह नहीं तो कुछ भी नहीं॥

१. C. S. I. २. Deposit. ३. Banks. ४. Thahks,

८९—उन के दस्ते-नाज़नीं पाई टी[1] ।
अब कहां बाक़ी है हम में पायटी[2] ॥
शब्दार्थ—टी-चाय, पायटी-पवित्रता ।

९०—धमकाके बोसा लूंगा रुखे़-माह का ।
चन्दा वसूल होता है साहब दबाव से ॥

९१—आशिक़ी का हो बुरा इस ने बिगाड़े सारे काम ।
हम तो ए० बी० में रहे अग़यार बी० ए० हो गये ॥

९२—खाई मिज़गां वो नज़र की जो क़सम बोला वो शोख़ ।
आप अब क़स्में भी खाते हैं छुरी-कांटे से ॥
शब्दार्थ-मिज़गां-भवें ।

९३—इस अखाड़े में अड़ङ्गे देख कर क़ानून के ।
शेख़ ने तहमद से हिजरत की तरफ़ पतलून के ॥
शब्दार्थ-हिजरत-गमन.

९४—वज़ए-मग़रिब सीख कर देखा तो ये काफ़ूर थी ।
अब मैं समझा वाक़ई डाढ़ी ख़ुदा का नूर थी ॥
शब्दार्थ—नूर-ज्योति ।

९५—बे पास के तो सास की भी अब नहीं है आस ।
मौकूफ़ शादियां भी हैं अब इम्तहान पर ॥

९६—हम क्या कहें अहबाब क्या कारे-नुमायां कर गये ।
बी० ए० किया नौकर हुवे पेन्शन[3] मिली फिर मर गये ॥
शब्दार्थ—कारे नुमायां-उल्लेखनीय कार्य ।

९७—शाप[4] में सब जमा हैं मुझ से न पी पी कीजिये ।
आप इस बोतल को मेरे घर पे वी० पी० कीजिए ॥

१. Tea. २. Piety.
३. Pension. ४. Shop.

शब्दार्थ-शाप-दुकान ।

६८—शेख़ जी घर से न निकले और मुझ से कह दिया ।
आप बी ए पास हैं और बन्दा बी० बी० पास है ॥

६६—आबरू चाहो तो अंग्रेज़ से डरते रहो ।
नाक रखते हो तो तेग़े-तेज़ से डरते रहो ॥

१००—शेख़ जी के दोनों बेटे बा-हुनर पैदा हुवे ।
एक है खुफ़िया पुलिस में एक फांसी पा गये ॥

१०१—मुसल्मानों को लुत्फ़ो-ऐश से जीने नहीं देते ।
खुदा देता है खाना शेख़ जी पीने नहीं देते ॥

१०२—सिधारे शेख़ काबे को हम इङ्गलिस्तान देखेंगे ।
वो देखे घर खुदा का हम खुदा की शान देखेंगे ॥

१०३—जब ग़म हुवा चढ़ालीं दो बोतलें इखट्टी ।
मुल्ला की दौड़ मसजिद 'अकबर की दौड़ भट्टी ॥

१०४—इस की हरकत है कलीदे-मग़रिबी पर मुनहसिर ।
दिल ये सीने में या पाकेट[1] के अन्दर वाच[2] है ॥

शब्दार्थ-कलीद-कुञ्जी, मुनहसिर-आश्रित, पाकेट-जेब, वाच घड़ी ।

१०५—नाक रगड़ी बरसों इस अरमान में ।
सुनलें मेरी बात एक दिन कान में ॥

१०६—तुम नाक चढ़ाते हो मेरी बात पै अय शेख़ ।
खैंचूंगा किसी रोज़ मैं अब कान तुम्हारे ॥

१०७—शबों को कोर्स[3] दिन में फ़ारमूला[4] वर्क[5] करते हैं ।
अदीम उल्फुरसती से उन की उल्फ़त तर्क करते हैं ॥

शब्दार्थ-शब-रात्रि, कोर्स-अध्ययन की पुस्तकें, फारमूला-सूत्र, वर्क-

---

१. Pocket. २. Watch. ३. Course. ४. Formula. ५. Work.

काम, अदीम उल्फुरसती-अवकाशाभाव, तर्क-छोड़ना।

१०८—हरीफ़ों पर ख़ज़ाने हैं खुले यां हिज्रे-गेसू है।
वहां पे-बिल[१] है और यां सांप का भी बिल नहीं मिलता॥

शब्दार्थ-हरीफ़-दुश्मन, हिज्रगेसू-जुल्फ़ों का वियोग, पे बिल। तनख्वाह का बिल, सांप का बिल सांप का भट।

१०९—एवज़ कुरआन के अब है डारविन का ज़िक्र यारों में।
जहां थे हज़रते आदम वहां बन्दर उछलते हैं॥

११०—फ़र्क़ क्या वाइज़ो आशिक़ में है बताये तुम से।
उसकी हुज्जत में कटी इसकी मौहब्बत में कटी॥

१११—थी शबे-तारीक चोर आये जो कुछ था ले गये।
कर ही क्या सकता था बन्दा खांस लेने के सिवा॥

११२—हमारे बाग में पेड़ अब कहां माली लगाते हैं।
उन्होंने भी तो देखा ये फ़क़त डाली लगाते हैं॥

११३—ये आपका फ़रमाना है बजा कुरआन भी है अल्लाह भी है।
मुशकिलतो ये है लेकिन कि इधर आनर[२] भी है तनख्वाह भी है॥

११४—क़ाबिले-रश्क है ज़माने में।
दिन वकीलों का रात आशिक़ की॥

११५—लिपट भी जा, न रुक अकबर, ग़ज़ब की ब्यूटी[३] है।
नहीं नहीं पै न जा, ये हया की ड्यूटी[४] है॥

शब्दार्थ-ब्यूटी-सौन्दर्य, हया-लज्जा, ड्यूटी-धर्म।

११६—शाईराना दाद अच्छी दी ये मुझ को चर्ख़ ने।
तेग़े-अबरू का था आशिक़ ख़ान बहादुर कर दिया॥

१. Pay Bill. २. Hounour. ३. Beauty. ४. Duty.

११८—बी० ए० के कमाल की कामयाबी है यही।
सरविस[1] के लगाव से मौअज़िज़ बनना ॥

११६—हरमवालों से क्या निसबत हम अहले-होटल को।
वहां कुरआन उतरा है यहां अंग्रेज़ उतरे हैं ॥

१२०—तुम बीवियों को मेम बनाते हो आज कल।
क्या ग़म जो हमने मेम को बीवी बना लिया ॥

१२१—खुदा की राह में अब रेल चल गई अकबर।
जो जान देना हो अंजन से कट मरो एक दिन ॥

१२२—अजब क्या शेख़ बिरगड में जो मुश्ताक़े-गुलामी हैं।
हमारे ऊंट साहब खुद ही कमसरिकट[2] के हामी हैं ॥

शब्दार्थ—मुश्ताक़-इच्छुक, हामी-सहायक।

१२३—गुज़र उनका हुवा कब आलमे-अल्लाहो-अकबर में।
पले कालिज[3] के चक्कर में मरे साहब के दफ़तर में ॥

शब्दार्थ—अल्लाहो अकबर-ईश्वर बड़ा है।

१२४—शौक़े—सिविल-सरविस[4] ने मुझ मजनून को।
इतना दौड़ाया लंगोटी कर दिया पतलून को ॥

१२५—बुरा हुवा कि रक़ीबों में बढ़ गये बाबू।
ज़रा सी बात हुई और ये सुवे-थाने चले ॥

१२६—हम-नशीं ज़ुल्फ़े-बुतां पर चुप न रहना चाहिये।
बात जब कुछ बन न आये शेर कहना चाहिये ॥

१२७—हुवे इस क़दर मोहज़्ज़िब कभी घर का मुंह न देखा।
कटी उम्र होटलों में मरे अस्पताल जाकर ॥

---

१ Service. २ Comissarsat
३ College. ४ Civil Service.

१२८—अफ़ईए-ज़ुल्फ़े-मिस का तो सौदा बुरा नहीं ।
पेन्चीदगी जो कुछ है फ़क़त उसके बिल में है ॥

शब्दार्थ—अफ़ई-साँप । सौदा-ख़ब्त ।

१२६—हिज्र की शब यों ही काटो भाइयो ।
उनका फ़ोटो लेके चाटो भाइयो ॥

शब्दार्थ—हिज्र-वियोग ।

१३०—क्या पूछते हो अकबरे-शोरीदा-सर का हाल ।
खुफ़िया पुलिस से पूछ रहा है कमर का हाल ॥

१३१—मुमकिन नहीं अय मिस तेरा नोटिस[1] न लिया जाय ।
गाल ऐसे परीज़ाद हों और किस[2] न लिया जाय ॥

१३२—हमें क्या बाल्शेविक[3] फिर गया या रूस आता है ।
यहाँ तो फ़िक्रे-सरमाई है माहे-पूस आता है ॥

शब्दार्थ—सरमाई-रज़ाई ।

१३३—डिनर[4] से तुम को कम फ़ुरसत यहां फ़ाके से कम ख़ाली ।
चलो बस हो चुका मिलना न तुम ख़ाली न हम ख़ाली ॥

१३४—बताऊं आप से मरने के बाद क्या होगा ।
पुलाव खायेंगे अहबाब फ़ातहा होगा ॥

१३५—पेश आ जाय जो मसजिद तो नमाज़ी भी सही ।
बुत-जो मौक़े से मिले, दस्तदराज़ी भी सही ॥

शब्दार्थ-पेश-सामने । नमाज़ी-नमाज़ पढ़ने वाला अर्थात् धार्मिक बुत-माशूक । दस्तदराज़ी-बलात्कार ।

भावार्थ—हमारी धार्मिकता केवल बाह्य है ।

---

१ Notice. २ Kiss. ३ Bolshevik. ४ Dinner.

१३६—सरासर नूरे-तक़वा साये पर कुर्बान कर आये।
ये क्या अच्छा किया तुमने अगर ज़र खोके 'मिस' लाये॥

शब्दार्थ—सरासर-बिल्कुल। नूर-प्रकाश। क़ुरबान-न्यौछावर। तक़वा-परहेज़गारी। साया-अंग्रेज़ी महिलाओं का वस्त्र, ज़र-रुपया। मिस-आँग्ल कुमारी। तांबा।

१३७—दिली ख्वाहिश तो है बेशक कि एक और एक दो कहिये।
मगर कहने को हूँ मौजूद बस आप जो कहिये॥
१३८—जो पूछा मैंने हूं किस तरह हैपी[1]।
कहा उस ने मेरे साथ मय पी॥
१३९—पांव कांपा हाी किये खौफ़ से उनके दर पर।
चुस्त पतलून पहनने से भी पिंडली न तनी॥[2]
१४०—हो खैर या रब अकबरे-आशुफ्ता-हाल की।
सरजन रक़ीब और दवा अस्पताल की॥

शब्दार्थ—या रब-हे ईश्वर। अकबरे-आशुफ्ता-हाल-रोगी अकबर।

१४१—हमको साया पुरजुनूं वह धूप में मसरूफ़े-कार।
मिस पै है अपनी नज़र और सीम उनके हाथ में॥

शब्दार्थ—साया-छाया। अंग्रेजी महिलाओं का वस्त्र। पुरजुनूं-उन्माद-पूर्ण। मसरूफे कार-काम में लगे हुवे। मिस-आंग्लकुमारी। सीम-चांदी।

भावार्थ—हम साया (अंग्रेजी महिला का वस्त्र) देखकर ही उन्मत्त हो जाते हैं और अंग्रेज धूप में भी काम करते रहते हैं। परिणाम यह है कि हमारी दृष्टि तो मिस तक ही परिमित है और वे (अंग्रेज) धनवान् हैं।

---

१ Happy

२ उन भारतवासियों पर कटाक्ष है जो अंग्रेजी-ढंग के कपड़े पहनकर अफ़सरों से मिलने जाते हैं।

१४२—उसकी बेटी ने उठा रक्खी है दुनिया सर पर।
ख़ैरियत गुज़री कि अंगूर के बेटा न हुआ ॥

१४३—शेख़ जी दैर में बैठे हुवे गाते थे—भजन।
निगरां सुवे-बिरहमन थे बशौक़े-भोजन ॥

शब्दार्थ—दैर-मन्दिर। निगराँ थे। देख रहे थे। सुवे-बिरहमन-ब्राह्मण की ओर।

१४४—सीने पै बुतों के दस्तरस मुशकिल है।
पाइन्ट[1] ये सख़्त है इसे टच न करो ॥

शब्दार्थ—दस्तरस-पहुँच। टच-छूना।

१४५—शेख़ भी हैं दैर के साइल बस इतना फ़र्क़ है।
मुझको बोसा चाहिये उनको समोसा चाहिये ॥

शब्दार्थ—दैर-मन्दिर। साइल-भिखारी।

१४६—हकीम और वैदयकसां है अगर तशख़ीस अच्छी हो।
हमें सेहत से मतलब है बनफ़शा हो कि तुलसी हो ॥

शब्दार्थ—तशख़ीस-पहचान। सेहत-फ़ायदा।

१४७—मेरी क़ुरआन-ख़्वानी से न हों यूं बदगुमाँ हज़रत।
मुझे तफ़सीर भी आती है अपना मुद्दआ कहिये ॥[2]

शब्दार्थ—क़ुरआन ख़्वानी-क़ुरान का पाठ। तफ़सीर-व्याख्या। मुद्दआ-मतलब।

१ Point.

२ उन मनुष्यों पर कटाक्ष है जो अपना मतलब सिद्ध करने के लिये धार्मिक-ग्रन्थों के अर्थ उलट-पलट देते हैं।

४-सामयिक घटनायें।

दिल्ली का दरबार-सन् १६०३ ई०

१—सर में शौक़ का सौदा देखा।
देहली को हमने भी जा देखा॥
जो कुछ देखा अच्छा देखा।
क्या बतलायें क्या क्या देखा॥ १॥
जमना जी के पाट को देखा।
अच्छे सुथरे घाट को देखा॥
सब से ऊंचे लाट को देखा।
हज़रत ड्यूक कनाट को देखा॥ २॥
पलटन और रिसाले देखे।
गोरे देखे काले देखे॥
सङ्गीन और भाले देखे।
बैण्ड बजाने वाले देखे॥ ३॥
ख़ेमों का एक जङ्गल देखा।
उस जङ्गल में मङ्गल देखा॥
ब्रह्मा और वरंगल देखा।
इज्ज़तख़्वाहों का दङ्गल देखा॥ ४॥
अच्छे अच्छों को भटका देखा।
भीड़ में खाते झटका देखा॥

मुंह को अगरचे लटका देखा।
दिल दरबार से अटका देखा ॥ ५ ॥
हाथी देखे भारी भरकम।
उनका चलना कम कम थम थम ॥
ज़रीं भूलें नूर का आलम।
मीलों तक वो चम-चम चम-चम ॥ ६ ॥
सुर्ख़ी सड़क पै कुटती देखी।
मांस भीड़ में घुटती देखी ॥
आतिशबाज़ी छुटती देखी।
लुत्फ़ की दौलत लुटती देखी ॥ ७ ॥
एक्ज़ीबीशन[1] की शान अनोखी।
हर शय उम्दा हर शय चोखी ॥
उक़्लैदस की नापी जोखी।
मन भर सोने की लागत सोखी ॥ ८ ॥
की है ये बन्दिश ज़हन रसा ने।
कोई माने ख्वाह न माने ॥
सुनते हैं हम तो ये अफ़साने।
जिसने देखा हो वो जाने ॥ ९ ॥

शब्दार्थ—सौटा-लब्न, ज़रीं भूलें-सुनहरे काम की भूलें, नूर-प्रकाश, एक्ज़ीबीशन-नुमायश।

सरसय्यद अहमद की कृतकार्यता का रहस्य

२—ताज्जुब से कहने लगे बाबू साहब।
गवर्न्मेन्ट सय्यद पै क्यों मेहरबां है ॥ १ ॥
इसे क्यों हुई इस क़दर कामयाबी।
कि हर बज़्म में बस यही दास्तां है ॥ २ ॥

कभी लाट साहब हैं महमान उसके।
कभी लाट साहब का वो महमां है ॥ ३ ॥
नहीं है हमारे बराबर वो हरगिज़।
दिया हमने हर सीग़े का इम्तहां है ॥ ४ ॥
वो अङ्गरेज़ी से कुछ भी वाकिफ़ नहीं है।
यहां जितनी इङ्गलिश है सब बर-ज़बां है ॥ ५ ॥
कहा हंस के अकबर ने अय बाबू साहब।
सुनो मुझ से जो रम्ज़ इस में निहां है ॥ ६ ॥
नहीं है तुम्हें कुछ भी सय्यद से निसबत।
तुम अंग्रेज़ी-दां हो वो अंग्रेज़-दां हैं ॥७॥

शब्दार्थ—सीगा-विभाग। रम्ज़-भेद। निहां-गुप्त। अंग्रेज़ी दां-अंग्रेज़ी भाषा जाननेवाला। अंग्रेज़-दां अंग्रेज़ों का स्वभाव जानने वाला।

अपने लड़के के नाम पत्र

३—इशरती घर की मौहब्बत का मज़ा भूल गये।
खा के लन्दन की हवा अहदे-वफ़ा भूल गये ॥१॥
पहुँचे होटल में तो फिर ईद की परवा न रही।
केक[1] को चख के सवइयों का मज़ा भूल गये ॥२॥
भूले मां-बाप को अग़यार के चरचों में वहां।
सायये-कुफ़्र, पड़ा नूरे-खुदा भूल गये ॥३॥
मौम की पुतलियों पर ऐसी तबीयत पिघली।
चमने-हिन्द की परियों की अदा भूल गये ॥४॥
बख्ल है अपने वतन से जो वफ़ा में तुमको।
क्या बुजुर्गों की वो सब जूदो-अता भूल गये ॥५॥

---

१ Cake.

नक्ले-मग़रिब की तरंग आई तुम्हारे दिल में ।
और ये नुकता कि मेरी अस्ल है क्या भूल गये ॥६॥
क्या तअ़ज्जुब है जो लड़कों ने भुलाया घर को ।
जब कि बूढ़े रविशे-दीने-खुदा भूल गये ॥७॥

शब्दार्थ—अग़यार-अजनबियों । कुफ्र-नास्तिकता । नूर-प्रकाश बख्ल-कंजूसी । जूदो अता-उदारता । रविश-मार्ग ।

अपने लड़के के नाम पत्र

४—लन्दन को छोड़ लड़के अब हिन्द की ख़बर ले ।
बनती रहेंगी बातें आबाद घर तो करले ॥१॥
राह अपनी अब बदल दे बस 'पास' करके चल दे ।
अपने वतन का रुख़ कर और रुख़सते-सफ़र ले ॥२॥
इंग्लिश की करके कापी दुनिया की राह नापी ।
दीनी तरीक़ में भी अपने क़दम को धर ले ॥३॥
वापिस नहीं जो आता क्या मुन्तज़िर है इसका ।
मां खस्ता हाल हो ले बेचारा बाप मर ले ॥४॥
मग़रिब के मुरशिदों से तू पढ़ चुका बहुत कुछ ।
पीराने-मशरिक़ी से अब फ़ैज़ की नज़र ले ॥५॥
मैं भी हूँ एक सखुनवर आ सुन कलामे-अकबर ।
इन मोतियों से आकर दामन को अपने भरले ॥६॥

इन्फ्लूएन्ज़ा का प्रकोप

५—इन्फ्लूएन्ज़ा[1] चढ़ा चौगान बाज़ी अब कहां ।
अस्पताली हो रहे हैं अस्प ताज़ी अब कहां ॥१॥
चारे की क़िल्लत हुई तो बैल भी अब मरने लगे ।
इन्फ्लूएन्ज़ा हुवा करनैल भी मरने लगे ॥२॥

१ Influenza.

हम में टेढ़ापन जो आये तो सीधा वो करे।
देवता बिगड़े तो फिर सरकार इसको क्या करे ॥३॥

हाशिम का स्वर्गवास

६—आग़ोश से सिधारा मुझसे ये कहने वाला।
अब्बा सुनाइये तो क्या आपने कहा है ॥१॥
अशआरे-हसरते-आगीं कहने की ताब किस को।
अब हर नज़र है नौहा हर सांस मरसिया है ॥२॥

उर्दू पत्र-पत्रिकाओं की असामयिक मृत्यु

७—ले ले के क़लम के लोग भाले निकले।
हर सिम्त से बीसियों रिसाले निकले ॥१॥
अफ़सोस कि मुफ़लिसी ने छापा मारा।
आख़िर अहबाब के दिवाले निकले ॥२॥

आधुनिक लेखक

८—उन्हीं के मतलब की कह रहा हूँ।
ज़बान मेरी है बात उनकी ॥
उन्हीं की महफ़िल संवारता हूँ।
चिराग़ मेरा है रात उनकी ॥१॥
फ़क़त मेरा हाथ चल रहा है।
उन्हीं का मतलब निकल रहा है।
उन्हीं का मज़मूं उन्हीं का काग़ज़।
क़लम उन्हीं का दवात उन्हीं की ॥२॥

भारतवर्ष में अनावृष्टि

९—एक मुसीबत में है साधू है या कोई सेठ है।
है तो ये सावन मगर हुक्मे-खुदा से जेठ है ॥१॥

सच तो ये है गरदूं को राहे-मेहरबानी क्यों मिले।
आग जब यूरुप में बरसे हमको पानी क्यों मिले ॥२॥[1]

शब्दार्थ—गरंदू-आस्मान।

चन्दा हज़म कर जाने वाले लीडर

१०—देखता एक उम्र से है बन्दा।
होता है कुछ काम न धन्दा ॥१॥
बस यही बातें और यही फन्दा।
लाओ चन्दा लाओ चन्दा ॥२॥

अंग्रेज़ों का भारतवर्ष को होमरूल देने का ध्येय

११—जब ये समझे थे परहेज़ ज़रूरी है इन्हें।
वादा बच्चों से मिठाई का मुनासिब ही न था ॥१॥
आप ही ने तो किया केक[2] का ज़िक्रे-शीरीं।
वरना इस चीज़ का इनमें कोई तालिब ही न था ॥२॥

उर्दू-हिन्दी की बहस[3]

१२—कहां उर्दू वो हिन्दी में ज़रे-नक़्द।
वही अच्छा है जो गिनता मनी है ॥१॥
मेरे नज़दीक तो बेसूद ये बहस।
मियां हमदम वो चिन्तामनी है ॥२॥

शब्दार्थ—बेसूद-व्यर्थ। मनी-रुपया। हमदम-एक अखबार का नाम। चिन्तामणि-भूतपूर्व सम्पादक लीडर।

१ गत महायुद्ध के समय एक वर्ष भारतवर्ष में बहुत ही कम वर्षा हुई थी, उस समय आपने उपरोक्त शेर लिखे थे।

२ Cake.

३ एक बार प्रयाग के 'लीडर' और लखनऊ के 'हमदम' नामक पत्र में उर्दू हिन्दी की बहस छिड़ी थी। उस समय आपने उपरोक्त शेर लिखे थे।

११८—बी० ए० के कमाल की कामयाबी है यही।
सरविस[1] के लगाव से मौअज़िज बनना॥
११६—हरमवालों से क्या निसबत हम अहले-होटल को।
वहां कुरआन उतरा है यहां अंग्रेज़ उतरे हैं॥
१२०—तुम बीवियों को मेम बनाते हो आज कल।
क्या ग़म जो हमने मेम को बीवी बना लिया॥
१२१—खुदा की राह में अब रेल चल गई अकबर।
जो जान देना हो अंजन से कट मरो एक दिन॥
१२२—अजब क्या शेख़ बिरगड में जो मुश्ताके-गुलामी हैं।
हमारे ऊंट साहब खुद ही कमसरिकट[2] के हामी हैं॥

शब्दार्थ—मुश्ताक़-इच्छुक, हामी-सहायक।

१२३—गुज़र उनका हुवा कब आलमे-अल्लाहो-अकबर में।
पले कालिज[3] के चक्कर में मरे साहब के दफ़तर में॥

शब्दार्थ—अल्लाहो अकबर-ईश्वर बड़ा है।

१२४—शौक़े—सिविल-सरविस[4] ने मुझ मजनून को।
इतना दौड़ाया लंगोटी कर दिया पतलून को॥
१२५—बुरा हुवा कि रक़ीबों में बढ़ गये बाबू।
ज़रा सी बात हुई और ये सुवे-थाने चले॥
१२६—हम-नशीं ज़ुल्फ़े-बुतां पर चुप न रहना चाहिये।
बात जब कुछ बन न आये शेर कहना चाहिये॥
१२७—हुवे इस क़दर मोहज़्ज़िब कभी घर का मुंह न देखा।
कटी उम्र होटलों में मरे अस्पताल जाकर॥

---

१ Service. २ Comissarsat
३ College. ४ Civil Service.

लोकमान्य तिलक की लन्दन में अपील

१६—तकल्लुफ़ उन्हीं के लिये कीजिये।
फ़क़ीरों की क्या है? जहां पड़ रहे ॥१॥
बुतों से भी लड़ती नहीं याँ तो आंख।
त्रिरहमन हैं लन्दन तलक लड़ रहे ॥२॥

इङ्गलैंड के लाभ की दृष्टि से भारतवर्ष का शासन

१७—हज़रते-अकबर ने फ़रमाया ये खूब।
दाद के क़ाबिल है ये फ़र्ज़ान्गी ॥१॥
उज़्र हमको कुछ गुलामी में नहीं।
है फ़क़त तकलीफ़दह बेगान्गी ॥२॥

शब्दार्थ— तकलीफदह· कष्टप्रद। बेगान्गी-अजनबीपन। फर्ज़ान्गी-उदारता।

सर सय्यद अहमद

१८—हमारी बातें ही बातें हैं सय्यद काम करता था।
न भूलो फर्क जो है कहनेवाले करनेवाले में ॥१॥
कहे जो चाहे कोई मैं तो ये कहता हूँ अय अकबर।
खुदा बख्शे बहुत सी खूबियां थीं मरनेवाले में ॥२॥

लार्ड मिन्टो के समय में अमीर काबुल का भारतवर्ष में आना

१९—जो सच्ची बात है कह दूंगा बे खौफ़ो-खतर उसको।
नहीं रुकने का मैं हरगिज़ परी रोके कि जिन रोके ॥१॥
अनार आते जो काबुल के तो पड़ते सबके हिस्से में।
अमीर आये तो हमको क्या मज़े हैं लार्ड मिन्टो के ॥२॥

लार्ड करज़न का पद-त्याग

२०—करज़नो-किचनर की हालत पर जो कल।
वो सनम तशरीह का तालिब हुवा ॥१॥
कह दिया मैंने कि है ये साफ़ बात ।
देख लो तुम ज़न पै नर ग़ालिब हुवा ॥२॥

शब्दार्थ—तशरीह-व्याख्यान। ज़न-स्त्री। नर-पुरुष। ग़ालिब-विजयी।

हिन्दुस्तान यूरूप के माल का गोदाम है

२१—ये बात ग़लत दारे- इसलाम है हिन्द।
ये झूठ कि मुल्के-लछमनो-राम है हिन्द॥१॥
हम सब हैं मुती वो ख़ैरख्वाहे-इङ्गलिश।
यूरुप के लिये बस एक गोदाम है हिन्द ॥२॥

भारतवर्ष में प्रत्येक मनुष्य का लीडर होने का दावा है

२२—लीडरों[1] की धूम है और फ़ालोवर[2] कोई नहीं।
सब तो जनरल हैं यहां आख़िर सिपाही कौन है॥

ख़ुदगर्ज़ लीडर

२३—क़ौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
लीडर को ग़म बहुत है पर आराम के साथ॥

चन्दा खाने वाले लीडर

२४—सरविस[3] में मैं दाख़िल नहीं हूँ क़ौम का ख़ादिम।
चन्दा की फ़क़त आस है तनख्वाह कहां है॥

बनावटी लीडर

२५—वो रोये बहुत स्पीचों में हिकमत इसको कहते हैं।
मैं समझा ख़ैरख्वाह उनको हिमाक़त इसको कहते हैं॥

---

१ Leaders. २ Follower.
३ Service.

ख़ुदग़र्ज़ लीडर

२६—कोई साहब न हों लिल्लाह नाखुश सुनके ये मिसरा।
ख़याले-हुब्बे-क़ौमी-पीछे और फ़िक्रे-शिकम पहिले॥

शब्दार्थ—हुब्बे क़ौमी-जातीय हित। शिकम-पेट।

वाक्शूर लीडर

२७—हो दिसम्बर में मुबारिक ये उछल कूद आपको।
खून मुझ में भी है लेकिन मुझको फागन चाहिये॥

शिक्षा प्राप्त करने के लिये विलायत जाना

२८—लन्दन में बिगड़ जावोगे विश्वास यही है।
तुम पास रहो मेरे बड़ा पास यही है॥

अन्जुमन तरक्क़िये-उर्दू

२९—हम से छिन कर हो गई बज़्मे-तरक्क़ी-के सपुर्द।
सच कहा मिरज़ा ने अब उर्दू भी कोरट हो गई॥

एक रुपए का नोट

३०—हर्ज क्या रुपया जो काग़ज़ का चला।
ग़म न खा रोटी तो गेहूँ की रही॥

प्लेग के दिनों में चूहे मरवाना

३१—ताऊन की बदौलत उनको भी इरतफ़ा है।
जो मारते थे मक्खी अब मारते हैं चूहे॥

शब्दार्थ—इरतफ़ा-विकाश।

मिसेज़ बेसन्ट

३२—अब मिसेज़-बेसेन्ट नज़मों में कहानी बन गईं।
राज हम पायें न पायें वो तो रानी बन गईं॥

लैण्ड-एक्वीज़ीशन एक्ट

३३—तङ्ग दुनिया से दिल इस दौरे-फ़लक में आ गया।
जिस जगह मैंने बनाया घर सड़क में आ गया ॥

म्युनिसिपिल बोर्ड और नया घर

३४—करो न तामीर घर की अकबर हुदूदे-म्युनिसिपिल के अन्दर।
ये अहल्काराने-बददियानत बनेंगे फोड़ा बग़ल के अन्दर ॥
३५—लो निकलना पड़ा सड़क के साथ।
आज तो मेरा घर भी नपता है ॥

कौन्सिल आव् स्टेट

३६—दफ्तरे-तदबीर तो खोला गया है हिन्द में।
फ़ैसला क़िस्मत का अय अकबर मगर लन्दन में है ॥

५—पश्चिमी सभ्यता।

—:०:—

१—कहां की पूजा नमाज़ कैसी कहां की गङ्गा कहां का ज़मज़म।
डटा है होटल के दर पै हर एक हमें भी दो एक जाम साहब ॥१॥
हज़ार समझाते हैं वो सबको कि सब नहीं नामदार होते।
करो ख़मोशी वो नेकबख़्ती से जाके तुम घर का काम साहब ॥२॥
मगर नहीं मानता है कोई हर एक की ये इल्तजा है उनसे।
मुझे भी छाप दो कहीं पर मेरा भी हो जाय नाम साहब ॥३॥
मेरी तुम्हारी नहीं निभेगी सिधारता हूँ मैं अब यहां से।
सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब ॥४॥

शब्दार्थ—ज़मज़म-मुसलमानों की पवित्र नदी। नामदार-प्रसिद्ध। इल्तजा-प्रार्थना।

२—मुरीदे-दहर हुवे वज़अ मग़रिबी कर ली।
नये जन्म की तमन्ना में खुदकशी कर ली ॥१॥
निगाहे-नाज़े-बुतां पर निसार दिल को किया।
ज़माना देख के दुश्मन से दोस्ती करली ॥२॥
जो हुस्ने-बुतां की जगह हुक्मे-मिस हुवा क़ायम।
तो इश्क़ छोड़ के हमने भी नौकरी करली ॥३॥
ज़वाले-क़ौम की तो इब्तदा वही थी कि जब।
तिजारत आपने की तर्क नौकरी कर ली ॥४॥

शब्दार्थ—मुरीदे दहर हुवे-दुनिया के पीछे और सब बातें भूल गये। ज़वाल-अधःपतन। इब्तदा-आरम्भ। तर्क-त्याग।

३—एक पीर ने तहज़ीब से लड़के को उभारा।
एक पीर ने तालीम से लड़की को संवारा॥१॥
पतलून में वो तन गया ये साये में फैली।
पाजामा ग़र्ज़ ये है कि दोनों ने उतारा॥२॥
बहरा वो बना कैम्प में ये बन गई आया।
बीवी न रही जब तो मियांपन भी सिधारा॥३॥
दोनों जो कभी मिलते हैं गाते हैं ये मिसरा।
आग़ाज़ से बदतर है अन्जाम हमारा॥४॥

शब्दार्थ—आग़ाज़-आरम्भ। अन्जाम-अन्त, परिणाम।

४—पास कालिज के जो हैं वोट तलब करते हैं।
पास मसजिद के जो हैं ताअ़ते-रब करते हैं॥१॥
उनको है लैमनेड वो व्हिसकी की ज़रूरत और ये।
रफ़ै पानी से फ़क़त खुश्किये-लब करते हैं॥२॥
वक़्त को देख के अब आप ही इन्साफ़ करें।
वो सितम करते हैं या आप ग़ज़ब करते हैं॥३॥

शब्दार्थ—तलब-याचना। ताअ़ते रब-ईश्वर की आज्ञा का पालन।
रफ़ै दूर। लब-ओष्ठ।

५—कर गई काम निगाहे-मिसे-पुरफ़न कैसा।
तज चले दैरो-हरम शेख़ो-बिरहमन कैसा॥१॥
उसको चक्कर ही रहा और ये खुदा तक पहुंचा।
दिले-पुरसोज़ जो हाथ आये तो अञ्जन कैसा॥२॥
अस्ल से होके जुदा नश्वो-नुमा की उम्मीद।
मुझको हैरत है कि बूढ़ों में ये बचपन कैसा॥३॥

६—मेरे अमल से न शेख़ खुश हैं,
न भाई खुश हैं न बाप खुश हैं।
मगर मैं समझा हूं इसको अच्छा,
दलील ये है कि आप खुश हैं॥१॥

जो देखा साइन्स का ये चक्कर,
बरम पुकारा कि अय बिरादर।
हमारे दौरे में पुन मगन थे,
तुम्हारे दौरे में पाप खुश हैं ॥२॥

शब्दार्थ—बिरादार-भाई। दौर-समय।

७—मज़हब के वास्ते न शराफ़त के वास्ते।
है अब तो जङ्ग हुक्मो-तिजारत के वास्ते ॥१॥
ले ही गये घसीट के मुझको परेड हर।
तय्यार हो रहा था मैं जन्नत के वास्ते ॥२॥

८—जिस रोशनी में लूट ही की आपको सूझे।
तहज़ीब की मैं उसको तजल्ली न कहूँगा ॥१॥
लाखों को मिटा कर जो हज़ारों को उभारे।
उसको तो मैं दुनिया की तरक्क़ी न कहूँगा ॥२॥

शब्दार्थ—तजल्ली-ज्योति।

९—हरचन्द कि मिस का है लवण्डर भी बहुत खूब।
बेगम का मगर इतरे-हिना और ही कुछ है ॥१॥
साये की भी सन सन हविस-अंगेज़ है लेकिन।
उस शोख़ के घुंघरुवों की सदा और ही कुछ है ॥२॥

१०—ये बात तो खरी है हरग़िज़ नहीं है खोटी।
अरबी में नज़्मे-मिल्लत बी० ए० में सिर्फ़ रोटी ॥१॥
लेकिन जनाबे-लीडर सुन कर ये शेर बोले।
बंधवायेंगे ये हज़रत इस क़ौम को लंगोटी ॥२॥
इस बात को खुदा ही बस खूब जानता है।
किसकी नज़र है ग़ायर किसकी नज़र है मोटी ॥३॥

शब्दार्थ—ग़ायर-बारीक।

११—हुवे नेकी से बेगाना तरक्क़ी इसको कहते हैं।
फ़रिश्ते हो गये रुख़सत फ़क़त शैतान बाक़ी है ॥१॥
तबीअ़त को अभी पतलून से सेरी नहीं अकबर।
ये सच है कट गये हैं पांव लेकिन रान बाक़ी है ॥२॥
१२—अफ़ई से कहा मैंने मुझे तूने डसा क्यों।
बोला कि बिना लाठी के तू बन में बसा क्यों ॥१॥
पांव में तो मेंहदी है लगी शौके-डिनर की।
हैरान हूँ अकबर ने कमर को ये कसा क्यों ॥२॥
१३—मशरिक़ी को है ज़ौके-रूहानी।
मग़रिबी में है मेले-जिस्मानी ॥१॥
कहा मन्सूर ने खुदा हूं मैं।
डारविन बोले बूज़ना हूं मैं ॥२॥
शब्दार्थ—बूज़ना-बन्दर।
१४—नई तहज़ीब में दिक्क़त ज़ियादा तो नहीं होती।
मज़ाहब रहते हैं क़ायम फ़क़त ईमान जाता है ॥१॥
थियेटर रात को दिन को यारों की ये स्पीचें।
दुहाई लाट साहब की मेरा ईमान जाता है ॥२॥
१५—मिस से बेगम ने कहा कल तू कहां और हम कहां।
बूट की चरचर में क्या रक्खा है ये चमचम कहां ॥१॥
मिस ये बोलीं पढ़ के निकलो तो ज़रा स्कूल से।
और ही चालें नज़र आयेंगी ये आलम कहां ॥२॥
१६—पढ़े गुन-गुनाते थे लाला निरंजन।
न आंखों में अंजन न दांतों में मंजन ॥ १ ॥
छूटे हम से बिल्कुल वो अगले तरीक़े।
कहां खींच ले जायगा हमको अंजन ॥ २ ॥
१७—तरक्क़ी की नई राहें जो ज़ेरे आस्मां निकलीं।
मियां मसजिद से निकले और हरम से बीवियां निकलीं ॥ १ ॥

मुसीबत में भी अब यादे-खुदा आती नहीं उनको।
दुआ निकली न मुंह से पाकटों से अर्जियां निकलीं।। २ ।।

१८—मेरे मनसूबे तरक्क़ी के हुवे सब पायमाल।
बीज मग़रिब ने जो बोया वो उगा और फलगया।। १ ।।
बूट डासन ने बनाया मैंने एक मज़मूं लिखा।
मुल्क में मज़मूं न फैला और जूता चल गया।। २ ।।

शब्दार्थ—मनसूबे-विचार। पायमाल-पददलित।

१९—अज़ां से अब सिवा बेदारकुन अंजन की सीटी है।
इसी पर शेख़ बेचारे ने छाती अपनी पीटी है।। १ ।।
कहां बाक़ी रहे हम में वो औरदे-सहरगाही।
वज़ीफ़ों की जगह या पायनियर या आई० डी० टी०[1] है।। २ ।।

२०—पण्डित जी ने खूब बात कही जोशे-तबअ में।
नाहक़ गुज़श्ता अहद पर यूं तानेज़न हैं आप।। १ ।।
पत्थर के बदले अब तो धरम टूटने लगा।
महमूद बुतशिकन था बिरहमन शिकन हैं आप।। २ ।।

शब्दार्थ—जोशे तबअ-तबियत का जोश। गुज़श्ता-भूत काल। अहद-काल समय शिकन-तोड़ने वाला।

२१—क्या कहूं इसको मैं बदबख्तिये-नेशन[2] के सिवा।
उसको आता नहीं अब कुछ इमीटेशन[3] के सिवा।।

शब्दार्थ—बदबख्ती-दुर्भाग्य। नेशन-राष्ट्र। इमीटेशन-नक़ल उतारना।

२२—हमें घेरे हुए हैं हर तरफ़ इसलाह की मौजें।
मगर यह हिस नहीं है डूबते हैं या उभरते हैं।।

शब्दार्थ—इसलाह-सुधार। मौज-लहर। हिस-ज्ञान।

---

१ Indian Daily Telegraph.
२ Nation ३ Imitation.

२३—खुशी है सबको कि आपरेशन[1] में खूब नशतर ये चल रहा है।
मगर किसी को ख़बर नहीं है मरीज़ का दम निकल रहा है॥

शब्दार्थ—आपरेशन-चीर फाड़।

२४—इधर ख़याल नहीं मसलहाने नेशन[1] का।
कि फ़र्ते-ज़ोफ़ नहीं वक्त आपरेशन[2] का॥

शब्दार्थ—मसलहाने नेशन-जाति के शुभचिन्तक। फ़र्ते-ज़ोफ़-अत्यधिक कमज़ोरी। आपरेशन-चीरफाड़।

२५—पुरानी रोशनी में और नई में फ़र्क़ इतना है।
उसे किश्ती नहीं मिलती इसे साहिल नहीं मिलता॥

शब्दार्थ—साहिल-किनारा।

२६—सूझता लेक्चर तरक्क़ी का तो है हर बात पर।
ख़त्म हो के लेकिन रह जाता है मेरी ज़ात पर॥

२७—न कोई तकरीमे-बाहमी है,
न प्यार बाक़ी है अब दिलों में।
ये सिर्फ़ तहरीर में डियर सर,
है या 'जनाबे-मुकर्रमी' है॥

२८—दिल में अब नूरे-ख़ुदा के दिन गये।
हड्डियों में फ़ास्फ़ोरस देखिये॥

शब्दार्थ—तकरीम-शिष्टाचार। जनाबे मुकर्रमी-मान्यवर महाशय।

२९—तरज़े-मग़रिब में नहीं है शर्ते-दिल बहरे-अमल।
चल खड़े होते हैं स्टीमर हवा हो या न हो॥

३०—लगी लिप्टी न लगा रखती थी तलवार की जङ्ग।
तोप क्या चाहती है सिर्फ़ दग़ा चाहती है॥

१ Operation

३१—कुछ देखता नहीं मैं दिले-ज़ार के लिये।
जो कुछ ये हो रहा है सब अख़बार के लिये॥

३२—इल्मी तरक्क़ियों से ज़बां तो चमक गई।
लेकिन अमल फ़रेबो-दग़ा ही के साथ है॥

३३—मेरी नसीहतों को सुन कर वो शेख़ बोला।
नेचर की क्या सनद है साहब कहें तो मानूं॥
शब्दार्थ—सनद-प्रमाण।

३४—शेख़ साहब का तास्सुब है जो फ़रमाते हैं।
ऊंट मौजूद है फिर रेल पे क्यों चढ़ते हो॥

३५—मिटाते हैं जो वो हमको तो अपना काम करते हैं।
मुझे हैरत तो उन पर है जो इस मिटने पे मरते हैं॥

३६—बक़ौले-अहले-मग़रिब ये ज़माना है तरक्क़ी का।
मुझे भी शक नहीं इसमें कि ग़फ़लत की जवानी है॥

३७—वज़ए-मग़रिब से मुझे कुछ भी तसल्ली न हुई।
नाज़ तो बढ़ गये दौलत की तरक्क़ी न हुई॥

———

६-समाज सुधार तथा आधुनिक शिक्षा

——:०:——

परदा ।

१—बिठाई जायेंगी परदे में बीबियां कब तक ।
बने रहोगे तुम इस मुल्क में मियां कब तक ॥
अवाम बांध लें दोहर को थर्डो-इन्टर में ।
सैकिन्डो-फ़र्स्ट की हों बंद खिड़कियां कब तक ॥
मुंहदिखाई की रस्मों पर है मुसिर इबलीस ।
छिपेंगी हज़रते-हव्वा की बेटियां कब तक ॥

शब्दार्थ—अवाम-सर्व साधारण । मुसिर-तुला हुवा । इबलीस-शैतान ।

२—बे परदा नज़र आईं जो कल चन्द बीबियां ।
'अकबर' ज़मीं में ग़ैरते-क़ौमी से गढ़ गया ॥१॥
पूछा जब उन से आप का परदा वो क्या हुआ ।
कहने लगीं कि अक्ल पै मरदों की पड़ गया ॥२॥

३—परदा उठ जाने से अख़लाक़ी तरक्क़ी क़ौम की ।
जो समझते हैं यक़ीनन अक्ल से फ़ारिग़ हैं वो ॥१॥
सुन चुका हूं कि कुछ बूढ़े भी हैं इसमें शरीक ।
ये अगर सच है तो बेशक पीरे-नाबालिग़ हैं वो ॥२॥

३—परदे में ज़रूर है तवालत बेहद ।
इन्साफ़पसन्द को नहीं चाहिये हट ॥१॥
तशबीह बुरी नहीं अगर मैं ये कहूं ।
बेगम है पेचवान लेडी सिगरट ॥२॥

५—ये परदा-दर को सुवे-क़ौम किसने भेजा है।
कि जिसकी बहस से मजरूह हर कलेजा है॥
यही है उक़दे-कशाइये-कौम तो एक दिन।
इज़ारबन्द को कह देंगे हक्से-बेजा है॥

६—उठ गया परदा तो अकबर का बढ़ा कौनसा हक़।
वे पुकारे मेरे घर में चला आता है॥१॥
बेहिजाबी मेरी हमसाये की ख़ातिर से नहीं।
सिर्फ़ हुक्काम से मिलने में मज़ा आता है॥२॥

७—ग़रीब अकबर ने बहस परदे की,
की बहुत कुछ मगर हुआ क्या।
नक़ाब उलट ही दी उसने कहकर,
कि कर ही लेगा मेरा मुवा क्या॥

८—नूरे-इस्लाम ने समझा था मुनासिब परदा।
शमए-ख़ामोशको फ़ानूसकी हाजत क्या है॥

९—मजलिसे-निसवां में देखो इज़्ज़ते-तालीम को।
परदा उटा चाहता है इल्म की ताज़ीम को॥

शब्दार्थ—निसवां-स्त्रियां। ताज़ीम-मान।

१०—नज़र में तीरगी है और रगों में नातवानी है।
ज़रूरत क्या है परदे की जहां बग्बे का पानी है॥

शब्दार्थ—तीरगी-अन्धकार। नातवानी-कमजोरी।

११—शमशेरज़न को अब नये सांचे में ढालिये।
शमशेर को छुपाइये ज़न को निकालिये॥

शब्दार्थ—शमशेरज़न-तलवार चलानेवाला। शमशेर-तलवार।

भावार्थ—आधुनिक युग में हमारी शूरता का स्थान निलर्ज्जता ने लेलिया है। अतः तलवार को, जिसे खुला रखना चाहिये था, परदे में रखना तथा स्त्री को, जिसे परदे में रखना चाहिये था, खुला रखना ही ठीक समझा गया है।

१२—फ़र्ज़ औरत पर नहीं है चारदीवारी की क़ैद।
हो अगर ज़ब्ते-नज़र की और खुद्दारी की क़ैद॥

शब्दार्थ—चारदीवारी-परदा। ज़ब्ते नज़र-दृष्टि को क़ाबू में रखना, खुद्दारी-स्वाभिमान।

आधुनिक शिक्षा

१२—मिस्टरे-नक़ली को उक़बां में सज़ा कैसी मिली।
शरह उसकी ना मुनासिब है मिली जैसी मिली॥
उसने भी लेकिन अदब से कर दिया ये इल्तमास।
चारा क्या था अय खुदा तालीम ही ऐसी मिली॥
१३—तालीम हमें जो दी जाती है।
वो क्या है फ़क़त बाज़ारी है॥
जो अक़्ल सिखाई जाती है।
वो क्या है फ़क़त सरकारी है॥
१४—जब पेशवा ने अपना काबा जुदा बनाया।
अपने मज़े को सबने अपना खुदा बनाया॥
अपनी ही ये ख़ता है हमने तो खूब जांचा।
लड़के ढले हैं वैसे जैसा बना था सांचा॥२॥
१५—फ़िलसफ़े में क्या धरा है घर का हो या लन्दनी।
सई का मौक़ा मिले तो आर्ट या साइन्स सीख॥१॥
दुश्मने-दाना से बच पहचान ले नादान दोस्त।
सिर्फ़ लफ़्फ़ाज़ी से इन रोज़ों नहीं मिलने की भीख॥२॥
१६—तिफ़्ल में बू आये क्या मां बाप के अतवार की।
दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की॥

१७—मेरे सय्याद की तालीम की है धूम गुलशन में ।
यहां जो आज फंसता हैं वो कल सय्याद होता है ॥

१८—हमारे खेत से ले जाते हैं बन्दर चने क्यों कर
ये बहस अच्छी है इस से हज़रते-आमद बने क्यों कर ॥

१९—नई तालीम को क्या वासता है आदमियत से ।
जनाबे-डारविन को हज़रते-आदम से क्या मतलब ॥

२०—नई तहजीब में भी मज़हबी तालीम शामिल है ।
मगर यों ही कि गोया आबे-ज़मज़म मय में दाख़िल है ॥

शब्दार्थ—आबे ज़मज़म-ज़मज़म का पानी, मय-शराब ।

२१—तहम्मुल बरकते-तालीम से ऐसा हुआ पैदा ।
कि हिस तक़रीर का होता है और ग़ुस्सा नहीं आता ॥

शब्दार्थ—तहम्मुल-सहन-शक्ति, बरकते तालीम-शिक्षा की कृपा, हिस-ज्ञान ।

भावार्थ—यह है आधुनिक शिक्षा के कारण हमको अपने अपमान तक पर क्रोध नहीं आता ।

२२—इल्मी तरक्क़ियों से ज़बां तो चमक गई ।
लेकिन अमल फ़रेबो-दग़ा ही के साथ हैं ॥

शब्दार्थ—अमल-काम ।

२३—इस अहद में मायल सुए—इलहाद जो दिल है ।
इसकी तो गवर्नमैंन्ट ही रिसपानसिबिल[1] है ॥

शब्दार्थ—अहद-समय, मायल-प्रवृत्त, सुए-ओर, इलहाद-नास्तिकता, रिसपानसिबिल-उत्तरदायी ।

२४—खुदा-परस्त बनायगा क्या वो लिट्रेचर[2] ।
करे जो तबअ. को बे क़ैद और गुनाह पसन्द ॥

---

१ Responsible. २ Literature.

शब्दार्थ—खुदापरस्त-ईश्वर-पूजक, लिट्रेचर-साहित्य, तबअ-चित्त

२५—शेख़े-मरहूम का क़ौल अब मुझे याद आता है।
दिल बदल जायँगे तालीम बदल जाने से॥

२६—लाख रोये कि रहे जाते हैं अल्लाहो-रसूल।
दैर का कोर्स बिरहमन ने मगर कम न किया॥

स्त्री-शिक्षा।

२७—तालीम लड़कियों की ज़रूरी तो है मगर।
ख़ातूने-ख़ाना हो वे सभा की परी न हों॥ १॥
ज़ी इल्मो-मुत्तक़ी हों उनके मुन्तज़िम।
उस्ताद अच्छे हों मगर उस्ताद जी न हों॥ २॥

शब्दार्थ—ख़ातूने ख़ाना-घर की देवियां, ज़ी इल्म-विद्वान, मुत्तकी-परहेज़गार।

२८—कौन कहता है कि तालीमे-ज़नां खूब नहीं।
एक ही बात फ़क़त कहना है यां हिकमत को॥ १॥
दो उसे शौहरो-अतफ़ाल की ख़ातिर तालीम।
क़ौम के वास्ते तालीम न दो औरत को॥ २॥

शब्दार्थ—तालीमे ज़नां-स्त्रियों की शिक्षा, शौहर-पति, अतफ़ाल-बच्चे।

२९—एज़ाज़ बढ़ गया है आराम घट गया है।
ख़िदमत में है लेज़ी और नाचने को रेडी॥
तालीम की ख़राबी से हो गई बिलाख़िर।
शौहर-परस्त बीवी पब्लिक-पसन्द लेडी॥

शब्दार्थ—एज़ाज़-सम्मान, लैज़ी-सुस्त, रेडी-तैयार, बिलाख़िर-अन्त में शौहर-परस्त-पति-भक्त।

३०—कुल स्टेशन को उसने मेरे घर से कर दिया वाक़िफ़।
ये देखो बरकते-तालीम बीवी इसको कहते हैं॥

अब रहो तालीम, कौन इस अम्र का मफ्तूं नहीं।
बीवियों पर मग़रिबी सांचा मगर मौजूं नहीं॥

शब्दार्थ—मफ्तूं-प्रेमी, मग़रिबी-पश्चिमी, मौजूं-ठीक।

३१—तालीमे-दुख्तरां से ये उम्मीद है ज़रूर।
नाचे दुल्हन खुशी से खुद अपनी बरात में॥

३२—उन से बीवी ने फ़क़त स्कूल ही की बात की।
ये न बतलाया कहां रक्खी है रोटी रात की॥

३३—बीवी में तरज़े-मग़रिबी हो तो कहो।
अहसान है ये जो मुझको शौहर समझो॥

३४—खुदा के फ़ज़्ल से बीवी मियां दोनों मुहज्ज़ब हैं।
हिजाब उनको नहीं आता इन्हें गुस्सा नहीं आता॥

शब्दार्थ—फ़ज़्ल-कृपा, मुहज्ज़ब-सभ्य, हिजाब-लज्जा।

भावार्थ—ईश्वर की कृपा से स्त्री-पुरुष दोनों पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे हुवे हैं, स्त्री को बिना परदे के बाहर निकलने में लज्जा नहीं आती और पुरुष को स्त्री की निर्लज्जता पर क्रोध नहीं आता।

३५—घर से जब पढ़ लिख के निकलेंगी कुवारी लड़कियां।
दिल कशो आज़ादी खुशरो साख्ता परदाख्त॥
यह तो क्या मालूम क्या मौक़े अमल के होंगे पेश।
हां निगाहें होंगी मायल उस तरफ़ बे साख्ता॥
मग़रबी तहज़ीब, आगे चल के जो हालत दिखाये।
एक मुद्दत तक रहेंगे नौजवां दिल बाख्ता॥
ओज क़ौमी से शराफ़त का हुमा गिर जायगा।
माकियां से पस्ततर दिखलायी देगी फ़ाख्ता॥
डाल देगा सीनये ग़ैरत सपर मैदान में।
तेग़ अबरु ही नज़र आयेगी हरसू, साख्ता॥

७—राज-नीति

तथा

हिन्दू-मुस्लिम एकता।

—:•:—

राज-नीति

१—कहा महदी ने भाई तुमको क्यों इस दरजे हैरत है।
तुम्हारे वास्ते क्या ये महले-रश्को-ग़ैरत है॥
ताज्जुब क्या है हम उस बुत के पहलू में जो लेटे है।
हरम के मौहतरिम क्या देर के ख़ादिम से हेटे है॥
बिरहमन ने कहा बस आपकी बातें ही बातें है।
अजी ये वस्ल की रातें नहीं हैं उनकी घातें हैं॥
कहा महदी ने हम को तो मज़े से अपने मतलब है।
मौहब्बत हो न हो उनको उमीद उसकी यहां कब है॥
बिरहमन ने कहा ऐसा मज़ा अयज़ा का मुज़ाइफ़ है।
कहा महदी ने हां इस बात से बन्दा भी वाक़िफ़ है॥[1]

शब्दार्थ—हैरत-आश्चर्य, महल-अवसर, रश्क-ईर्षा, ग़ैरत-लज्जा, हरम-काबा, मौहतरिम-माननीय, देर-मन्दिर, ख़ादिम-सेवक, अयज़ा का मुज़ाइफ़ है—अङ्गों को कमज़ोर करने वाला है।

२—बहुत ही उम्दा है ऐ हमनशीन बिरटिश राज।
कि हर तरह के ज़वाबित भी हैं उसूल भी हैं॥

१ इस पद्य में अकबर ने सरकार के चापलूस हिन्दू-मुसलमानों पर कटाक्ष किया है।

जो चाहे खोल दे दरवाज़ये-अदालत को ।
कि तेल पेच में है ढीली इसकी चूल भी है ॥
तरह-तरह के बना लो लिबास रंगारंग ।
अलावा रूई के रेशम भी और ऊल भी है ॥
जब इतनी नेमतें मौजूद हैं यहां अकबर ।
तो हर्ज क्या है जो साथ उसके डैम-फूल भी है ॥

शब्दार्थ—हमनशीन-मित्र, ज़वाबित-नियम, उसूल-सिद्धान्त, ऊल-ऊन

३—मुल्क पर तासीरे-चश्मे-वोट तारी हो गई ।
मुफ्त शेखो-बिरहमन में फ़ौजदारी हो गई ॥ १ ॥
हिन्दुओं को क्यों न अब भाई बनायें सुलहदोस्त ।
आर्य मज़हब में भी तौहीद जारी हो गई ॥ २ ॥
मैम्बरी पर जङ्ग हो इस में गऊ का क्या कसूर ।
मुल्क में बदनाम नाहक़ ये बिचारी हो गई ॥ ३ ॥
शब्दार्थ—तौहीद-एक ईश्वर को मनाना ।

४—अज़ राहे-ताल्लुक़ जोड़ा करे कोई रिश्ता ।
अंग्रेज़ तो 'नेटिव' के चचा हो नहीं सकते ॥ २ ॥
'नेटिव' नहीं हो सकते गोरे तो है क्या ग़म ।
गोरे भी तो बन्दे से खुदा हो नहीं सकते ॥ २ ॥
हम हों जो कलक्टर तो वो हो जायें कमिश्नर ।
हम उन से कभी ओहदेबरा हो नहीं सकते ॥ ३ ॥
शब्दार्थ—ओहदेबरा होना-ओहदे में बढ़ना ।

५—अञ्जन आया निकल गया सन से ।
सुन लिया नाम आग पानी का ॥ १ ॥

बात इतनी और उस पै ये तूमार ।
गुल है यूरुप पै जांफ़िसानी का ॥ २ ॥
इल्म पूरा हमें सिखायें अगर ।
तब करें शुक्र मेहरबानी का ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—जांफिशानी-परिश्रम ।

६—क्यों अपने सर पर ज़हमते-बेसूद लीजिये ।
कौन्सिल के बदले घर में उछल कूद लीजिये ॥१॥
खा पी के घर में बैठिये और गाइये भजन ।
काशी से चल प्रयाग से अमरूद लीजिये ॥२॥
हां वज़अ अपने देश की माल अपने देश का ।
बेहतर है राहे-मंज़िले-बहबूद लीजिये ॥३॥

शब्दार्थ—ज़हमत-कष्ट, बेसूद-व्यर्थ, बहबूद-आराम ।

७—नौकर को सिखाते हैं मियां अपनी ज़बां ।
मतलब ये है कि समझे उनके फ़र्मान ॥
मक़सूद नहीं मियां की सो अक़्लो-तमीज़ ।
इस नुक्ते को क्या समझें वे जो हैं नादान ॥

शब्दार्थ—फर्मान-आज्ञा, मक़सूद-इष्ट, नुकता-रहस्य ।

८—सितम से वो दिल मेरा दुखायें ।
और अपने इशवों की दाद चाहें ॥
अजब तमाशा है दिल का रोना ।
ज़बान का वाह वाह करना ॥

शब्दार्थ—सितम-जुल्म, इशवा-अदा, दाद-प्रशंसा ।

९—क़ौम पर मैम्बरी का फ़ैर हुवा ।
कल जो अपना था वो ग़ैर हुवा ॥१॥
शेख़ जी मर गये कमैटी में ।
गुल मचा ख़ातमा बख़ैर हुवा ॥२॥

१०—हमदर्द हों सब ये लुत्फ़े-आबादी है।
हमसाया भी हो शरीक तब शादी है॥१॥
तसकीन है जब कि खुदा पर हो तकिया।
क़ानून बना सकें तब आज़ादी है॥२॥

शब्दार्थ—तसकीन-शान्ति, तकिया-सहारा।

११—मुल्क में मुझको ज़लीलो-ख्वार रहने दीजिये।
आप अपनी इज्ज़तो-दरबार रहने दीजिये॥१॥
ज़ालिमाना मशवरों में मैं नहीं हूंगा शरीक।
गैर ही को मरहमे-इसरार रहने दीजिये॥२॥

शब्दार्थ—मरहमे इसरार-भेद की बात जानने वाला।

१२—रिज़ोल्यूशन की शोरिश है मगर उसका असर ग़ायब।
प्लेटों की सदा सुनता हूँ और खाना नहीं आता॥

शब्दार्थ—रिज़ोल्यूशन-प्रस्ताव, शोरिश-धूम, प्लेट-रकाबी।

१३—रिआया को मुनासिब है कि बाहम दोस्ती रक्खें।
हिमाक़त हाकिमों से है तवक्क़ौ गर्म जोशी की॥

शब्दार्थ—हिमाक़त-मूर्खता, तवक्क़ौ-आशा।

१४—बाबू साहब ना ये शिकवये-अफ़लास बजा।
सच तो कहते हैं कि मक़्दूर न सही भात तो हो॥
जो ख़िर्दमन्द हैं वे खू़ब समझते हैं ये बात।
खैरख्वाही वो नहीं है जो हो डर से पैदा॥

शब्दार्थ—खिर्दमन्द-बुद्धिमान।

१६—फ़िरंगी से कहा पेन्शन भी लेकर बस यहीं रहिये।
कहा जीने को आये हैं यहां मरने नहीं आये॥

१७—मैंने कहा कि अपना समझिये मुझे गुलाम।
बोला वो बुत ये हंस के फ़िरंगी नहीं हूँ मैं॥

१८—अगर मज़हब ख़ललअन्दाज़ है मुल्की मक़ासिद में।
तो शेख़ो-बिरहमन पिन्हां-रहें दैरो-मसाजिद में॥

शब्दार्थ—मक़ासिद-उद्देश्य, पिन्हां-छिपे हुवे, दैर-मन्दिर, मसाजिद-मसजिद का बहुवचन

१६—उनका मेरा तअ़ाल्लुक़ इस से है साफ़ ज़ाहिर।
उनका इशारा देखो मेरा सलाम देखो॥

२०—जिधर साहब उधर दौलत जिधर दौलत उधर चन्दा।
जिधर चन्दा उधर आनर जिधर आनर उधर बन्दा॥

शब्दार्थ—आनर-इज्जत।

२१—क़ौमी तरक्क़ी की राधा प्यारी, बैठी है पहने जोड़ा भारी।
नौ मन तेल की फ़िक्र है तारी, चन्दे की तहसील है जारी॥

शब्दार्थ—तारी-लगी हुई,

भावार्थ—जातीय उन्नति के लिये हम जो काम करते हैं उनमें अधिकतर दिखावा ही होता है तथा बहुत सा धन इस निरर्थक दिखावे ही की भेंट हो जाता है।

२२—गोलियों के ज़ोर से करते हैं वो दुनिया को हज़म।
इससे बेहतर इस ग़िज़ा के वास्ते चूरन नहीं॥

२३—अपनी मिनक़ारों से हल्क़ा कस रहे हैं जाल का।
तायरों पर सहर है सय्याद के इक़बाल का॥

शब्दार्थ—मिनकार-चोंच, हल्क़ा-फन्दा, तायर-पक्षी, सहर-जादू, सय्याद-चिड़ीमार, इक़बाल-प्रताप।

२४—उन्हीं की भैंस है भाई कि जिन की लाटी है।
उन्हीं का गांव है अकबर जो बन सकें ठाकुर॥

२५—ज़ोरे-बाज़ू न हो तो क्या स्पीच।
हाथ भी दे खुदा ज़बां के साथ॥

२६—हमें तो चाहते हैं खींचना खुद हम से खिंचते हैं।
यें उनकी पालिसी के बाग़ किस पानी से सिंचते हैं॥

हिन्दू-मुस्लिम एकता।

२७—अमूरे मुल्की की बहस में तुम,
जो हिन्दुओं के बनोगे साथी।
न लाट साहब खिताब देंगे,
न राजाजी से मिलेगा हाथी॥१॥
न अपना मक्खन वो तुमको देंगे,
न अपनी पूरी ये बांट देंगे।
पड़ेगा मौक़ा जो कोई आकर,
तो दोनों ही तुमको छांट देंगे॥२॥
मगर वो रहते हैं दूर हम से,
ये लोग साथी हैं और पड़ौसी।
मिले जुले हैं सोसाइटी में,
अहीर इनमें तो हम में घोसी॥३॥
न होगी हुक्काम को भी दिक्क़त,
जो होगी एकजा हर एक की ख्वाहिश।
ज़रूरत उनको भी ये न होगी,
करें हर एक से अलहदा पुरसिश॥४॥
२८—हम उर्दू को अरबी क्यों न करें,
उर्दू को वो भाषा क्यों न करें।
झगड़े के लिये अखबारों में,
मज़मून तराशा क्यों न करें॥१॥
आपस में अदावत कुछ भी नहीं,
लेकिन एक अखाड़ा क़ायम है।

जब इससे फ़लक का दिल बहले,
हम लोग तमाशा क्यों न करें ॥२॥

२९—चुग़लियां एक दूसरे की वक़्त पे जड़ते भी हैं।
नागहां ग़ुस्सा जो आ जाता है लड़ पड़ते भी है ॥१॥
हिन्दू वो मुस्लिम हैं फिर एक और कहते हैं सच।
हैं नज़र आपस की हम मिलते भी हैं लड़ते भी हैं ॥२॥

३०—हिन्दू मुसलिम एक हैं दोनों?
यानी ये दोनों एशियाई हैं ॥१॥
हमवतन-हमज़ुबानो-हमक़िस्मत।
क्यों न कहदूं कि भाई-भाई हैं ॥२॥

३१—लड़ें क्यों हिन्दुओं से हम यहीं के अन्न से पनपे हैं।
हमारी भी दुआ ये है कि गंगा जी की बढ़ती हो ॥
मगर हां,शेख़जी की पालिसी से हम नहीं वाक़िफ़।
इसी पर ख़त्म करते हैं कि जो साहब की मरजी हो ॥

शब्दार्थ—दुआ-प्रार्थना।

३२—ऊंट ने गायों की ज़िद् पर शेर को साझी किया।
फिर तो मेंडक से भी बदतर सबने पाया ऊंट को ॥१॥
जिस पै रक्खा चाहते हो बाक़ी अपनी दस्तरस।
मुंह में हाथी के कभी भाई वो गन्ना न दो ॥२॥

शब्दार्थ—दस्तरस-पहुँच,

३३—बाज मुसिलम तो ऐसे हैं मौजूद।
मुंह जो लहमे-बक़र से मोड़ते हैं ॥१॥
फ़ौजी गोरे मगर रुकें क्योंकर।
जान बुल कब गऊ को छोड़ते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—लहमे बक़र-गाय का गोश्त,

३४—बेहतर यही है फेर लें आंखों को गाय से।
क्या फ़ायदा है रोज की इस हाय हाय से ॥१॥

कमजोरियों को रोकदें ज़ोरों को क्या करें।
मुसलिम हटे तो फौज के गोरों को क्या करें ॥२॥

३५—झगड़ा कभी गाय का जबां की कभी बहस।
है सख्त मुजिर ये नुसखये-गावजबां ॥

शब्दार्थ—गावज़बां-गाय और भाषा। एक यूनानी दवा का नाम भी गावज़बां है।

३६—मेरी नजरों में यकसां है शुतर हों या गऊ माता।
मुझे करते जो वो मदऊ कथा में मैं भी झूम आता ॥

३७—खुदा हीं की इबादत जिनको हो मक़सूद अय अकबर।
वों क्यों बाहम लड़ें गो फर्क हो तरजे-इबादत में ॥

३८—आता है वज़्द मुझको हर दीन की अदा पर।
मसजिद में नचता हूँ नाक़ूस की सदा पर ॥

शब्दार्थ—वज्द आना-प्रेम में तन्मय हो जाना, दीन-धर्म, नाक़ूस-शंख।

:–विभिन।

—:o:—

१—चला जाता था एक नन्हा सा कीड़ा रात कागज़ पर।
बिला क़स्दे-ज़रर उसको हटाया मैंने उंगली से ॥१॥
मगर ऐसा वो नाजुक था कि फ़ौरन पिस गया बिल्कुल।
निहायत ही खफ़ीफ़ एक दाग़ कागज़ पर रहा उसका ॥२॥
अभी वो रोशनी में शमअ की कागज़ पै फिरता था।
अभी यूं मिट गया जंबिशे-अन्गुश्ते-इन्सां से ॥३॥
लिया मेरे सिवा नोटिस ही किसने उसका दुनिया में।
थी फ़ितरत की क्या कारीगरी उसके बनाने में ॥४॥
नसबनामा भी उसका आलमे-ज़र्रात में होगा।
यही थी उसकी हस्ती और उसमें उसकी मस्ती थी ॥५॥
न मातम करनेवाला है न लाइफ़ लिखनेवाला है।
वो धब्बा दर्स-इबरत दे रहा है मुझको अय अकबर ॥६॥
मआज़ अल्लाह क्या समझा है तूने अपनी वक़अत को।
मुझे भी सफ़हे-रुवे-ज़मीं से एक दिन आख़िर ॥७॥
मिटा देगी कोई तहरीक फ़ितरते-हुक्मे-बारी से।
अजब हैरत से मैं हूं देखता इस दागे-कागज़ को ॥८॥
मेरी नज़रों में नक़्शा ये है, दुनियाये-फ़ानी का।
मगीहन जिस्म था एक जान थी अहसास था उसमें ॥९॥
और अब धब्बा सा है क्या जाने कोई कैसा धब्बा है।
अजब क्या है जो समझे कोई पेन्सिल की लकीर इसको ॥१०॥

मआज़ अल्लाह मआज़ अल्लाह सन्नाटे का आलम है ।
बहुत जी चाहता है रोऊं इस हस्ती के धब्बे पर ॥११॥
ये हैं बरसात के दिन तीसरी भादों गुज़रती है ।
मैं अपना ग़म ग़लत करता हूं कुछ अशआर लिखने से ॥१२॥

शब्दार्थ—क़स्दे ज़रर-नुक़सान पहुँचाने का इरादा । ख़फ़ीफ़-छोटा । जंबिशे अंगुस्ते इन्सां-आदमी की उंगली की हरकत । फ़ितरत-प्रकृति । नसबनामा-वंशावलि । ज़र्रात-कण । हस्ति-अस्तित्व । लाइफ़-जीवन-चरित्र । दर्स-शिक्षा । मआज़ अल्लाह-ईश्वर की शरण । सरीहन-साफ़ तौर से । अहसास-अनुभव करने की शक्ति ।

२—मेरी चश्म क्यों न हो खूंफ़शां न रही वो बज़्म न वो समा ।
न वो तर्ज़े-गर्दिशे-चर्ख़ है न वो रंगे-लैलो-निहार है ॥१॥
जहां कल था गुलगुलये-तर्ब वहां आज है ये ग़ज़ब ।
कहीं एक मकां है गिरा हुवा कहीं एक शकिश्ता मज़ार है ॥२॥
ग़मो-यासो-हसरतो-बेकसी की हवा कुछ ऐसी है चल रही ।
न दिलों में अब वो उमंग है न तबियतों में उभार है ॥३॥
हुवे मुझपे जो सितमे-फ़लक कहूं किससे उसको कहां तलक ।
न मुसीबतों की है कोई हद न मेरे ग़मों का शुमार है ॥४॥
मेरा सीना दाग़ों से है भरा मेरे दिल को देखिये तो ज़रा ।
ये शहीदे-इश्क की है लहद पड़ा जिसपै फूलों का हार है ॥५॥
मैं समझ गया वो है बेवफ़ा मगर उनकी राह में हूं फ़िदा ।
मुझे ख़ाकमें वो मिला चुके मगर अब भी दिल में गुबार है ॥६॥

शब्दार्थ—खूंफसां-लोहू से भरी हुई, बज्म-सभा, चर्ख-आकाश, लैलो निहार-रात दिन, गलगुलये तर्ब-खुशी का शोर, शकिस्ता-जीर्ण, मज़ार-क़ब्र, यास-निराशा, शहीदे इश्क़र्ग में-प्रेम के मा जान खोने वाला, लहद-क़ब्र ।

३—बन पड़े तो क़िबला ही बनना मुनासिब है तुझे ।
दिक़्क़तों में वो फंसा जो स्क्वायर हो गया ॥१॥

दीदनी है ये तमाशाये-मशीने-इन्क़लाब ।
बाप तो क़िबला थे बेटा स्क्वायर हो गया ॥२॥
तख़लिये में आज मैंने उन का बोसा ले लिया ।
देखिये डिगरी जो हो दावा तो दायर हो गया ॥४॥
अब तो मुझ को भी मुनासिब है कि पटवारी बनूं ।
यार को शौके-हिसाबे-माला-सायिर हो गया ॥४॥
फ़िक्रे-दुनिया ने भुलाया सब कुरानो-हदीस ।
मौलवी भी महवे-क़ानूनो-नज़ायर हो गया ॥५॥

शब्दार्थ—क़िबला-प्राचीन सभ्यता के अनुसार प्रतिष्ठित, स्क्वायर-नूतन सभ्यता के अनुसार प्रतिष्ठित, दीदनी-दर्शनीय, इनक़लाब-परिवर्तन, तख़लिया-एकान्त, हदीस मुसलमानों की धार्मिक पुस्तक, नज़ायर-मुक़दमों के दृष्टान्त।

४—अकबर न थमा बुतख़ाने में,
ज़हमत भी हुई और ज़र भी गया।
कुछ नामे-खुदा से उन्स भी था,
कुछ जुल्मे-बुतां से डर भी गया ॥१॥
परवाने का हाल इस महफ़िल में,
है क़ाबिले-रश्क अय अहले-नज़र ।
एक शब ही में पैदा भी हुआ,
आशिक़ भी हुआ और मर भी गया ॥२॥
काबे से जो बुत निकले तो क्या,
काबा ही गया जब दिल से निकल ।
अफ़सोस कि बुत भी हम से छुटे,
क़ब्ज़े से खुदा का घर भी गया ॥३॥
क्या गुज़री जो एक परदे के अदू,
रो रो के पुलिस से कहते थे ।

इज़्ज़त भी गई दौलत भी ग..

बीवी भी गई ज़ेवर भी गया ॥४॥

अकबर के जो मर जाने की ख़बर,

साक़ी ने सुनी तो ख़ूब कहा।

मरना तो ज़रूरी था ही उसे,

रिन्दों के लिये कुछ कर भी गया ॥५॥

शब्दार्थ—ज़हमत-कष्ट, उन्स-प्रेम, अदू-दुश्मन।

५—सख़ुनशनास से मैं चाहता हूं दादे-सख़ुन।
ख़ुशी के वास्ते काफ़ी हैं मुझको वाह फ़क़त ॥१॥
सोसाइटी नहीं मिलती कि जिससे दिल बहले।
जो कोई मूनिसो-हमदम है अब तो आह फ़क़त ॥२॥

शब्दार्थ—सख़ुन शनास-काव्य मर्मज्ञ, दादे सख़ुन-काव्य की प्रशंसा, मूनिस-आराम देने वाला ॥

६—शर्फ़ है जुब्बये-बेरिस्ट्री से जिनको यहां।
मुक़दमों ही की वो देखते हैं राह फ़क़त ॥३॥
बयाज़े-शेर से मतलब नहीं किलरकों को।
रजिस्ट्रों ही को करते हैं वो स्याह फ़क़त ॥४॥

शब्दार्थ—शर्फ़-मान, जुब्बये बेरिस्ट्री-बेरिस्ट्री की पौशाक, बयाजे शेर शेर लिखने की कापी।

७—गुज़र की जब न हो सूरत गुज़र जाना ही बहतर है।
हुई जब ज़िन्दगी दुश्वार मर जाना ही बहतर है ॥१॥
रहे-इस्लाह में गो तेज़गामी ख़ूब है लेकिन।
क़दम को लग़ज़िशें जब हों ठहर जाना ही बहतर है ॥२॥
मवाक़े देख कर इज़हारे-मरदी चाहिये अय दिल।
डरायें खेल में बच्चे तो डर जाना ही बहतर है ॥३॥

बिठाया है बुतों ने बज़्म में जब अपना ही सिक्का।
जो हैं अल्लाहवाले उनको उठ जाना ही बहतर है ॥४॥
बुलाता है मुझे बुतख़ाने से शेख़े-हरम अकबर।
न जाना गोकि जा है मगर जाना ही बहतर है ॥५॥

शब्दार्थ—इस्लाह-सुधार, तेज़गामी-तेज़ चाल, लग़ज़िशें-ठोकरें, मवाके-अवसर, जायज-ठीक।

८—ज़बाने-संस्कृत इस वक़्त पण्डित जी से कहती है।
कि अच्छा है मेरी उल्फ़त तुम्हारे दिल में रहती है ॥१॥
मैं खुशी हूंगी बिलाशक तुम अगर मुझको जिलावोगे।
मगर व्हिसकी पिलावोगे कि गङ्गा-जल पिलावोगे ॥२॥
जिऊंगी मैं कि फिर तुमको मिलाऊं देवताओं से।
भिड़ावोगे मुझी को या कि दुनिया की बलाओं से ॥३॥
अगर शौक़े-इबादत है तो मैं मौजूद हूं अब भी।
अगर दुनिया का सौदा है तो कब मैं इस से राज़ी थी ॥४॥

शब्दार्थ—इबादत-पूजना।

९—ज़न ज़मीं ज़र तो है फ़साद का घर।
लेकिन इतना कहूँगा अय अकबर ॥ १ ॥
ज़न मनकूहा वो शरीफ़ो–ग़रीब।
क्या अजब है जो करे अमन नसीब ॥ २ ॥
हो जो बस आमदे–ज़रे–तनख्वाह।
तो नहीं हाजिते–वकीलो–गवाह ॥ ३ ॥
हो जो थोड़ी सी बाग़ ही की ज़मीं।
तो कलक्टर का डर ज़ियादह नहीं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—ज़न-स्त्री, ज़मीं-भूमि, ज़र-द्रव्य, फ़साद-झगड़ा, मनकूहा-विवाहित।

१०—निगरानिये-मराहिल कभी ऐसी तो न थी,
तुन्द मौज लबे—साहिल कभी ऐसी तो न थी।
बदगुमानी तेरी क़ातिल कभी ऐसी तो न थी,
बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी ॥
जसा अब है तेरी महफ़िल कभी ऐसी तो न थी ॥ १ ॥
करती है ख़ल्क़ को लैलाये—लिबर्टी[1] मफ़तूं,
हिन्द के दिल को लुभा लेता है मिल[2] का ये फ़सूं।
लाजपत भी हुवे शायद कि असीरो—महजूं,
पाय—कोबां कोई जिन्दां में नया है मजनूं ॥
आती आवाजे सलासिल कभी ऐसी तो न थी ॥ २ ॥
पेशतर इस से तबायअ़ के न थे ये पहलू,
कहीं स्नान की लहर कहीं मौजे वज़ू।
अय मिसे—कमसिन माहे--जबीं वो गुलरू,
तेरी आंखों ने खुदा जाने क्या किया जादू ॥
कि तबियत मेरी मायल कभी ऐसी तो न थी ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—निगरानी-देख-रेख, महफिल-मरहला (मञ्जिल) का बहुवचन, लबे साहिल-किनारे पर, ख़ल्क़-संसार, लिबर्टी-स्वाधीनता, मफ़तूं-मोहित, मिल-लिबर्टी आदि पुस्तकों के रचयिता इंग्लैंड के प्रसिद्ध दार्शनिक स्टुअर्ट मिल, फ़सूं-जादू, पाय कोबां-पांव काटने वाला, सलासिल-ज़ञ्जार।

११—गये बिरहमन के पास लेकर,
अपने झगड़े को शीआ़ सुन्नी।
बिगड़ के बोला कि जावो भागो,
मलेच्छ तुम भी मलेच्छ वो भी ॥ १ ॥

१ Liberty. २ Stuart Mill.

बढ़ी जो तकरार तो वे लेकर,
उन्हें फिरङ्गी के पास पहुँचा।
वो बोला बस दूर हो यहां से,
कि तुम भी नेटिव हो वो भी नेटिव ॥ २ ॥

फ़लक ने आखिर हरेक की सुन कर,
कहा कि तुम सब हो मस्ते-ग़फ़लत।
समझलो इस को कि तुम भी फ़ानी हो,
वो भी फ़ानी है ये भी फ़ानी ॥ ३ ॥

१२—कालिज में हो चुका जब इम्तहां हमारा।
सीखा ज़बां ने कहना हिन्दोस्तां हमारा ॥ १ ॥

रक़बे को कम समझ कर अकबर ये बोले उट्ठे।
हिन्दोस्तान कैसा सारा जहां हमारा ॥ २ ॥

लेकिन ये सब ग़लत है कहना यही है लाज़िम।
जो कुछ है सब खुदा का वहमो-गुमां हमारा ॥ ३ ॥

१३—गुल फैंके हैं यूरुप की तरफ़ बल्कि समर भी।
अय नेचरो-साइन्स भला कुछ तो इधर भी ॥ १ ॥

अग़यार तो दुनिया है उठाये हुवे सर पर।
हम बैठे हैं इस तरह कि उठता नहीं सर भी ॥ २ ॥

अग़यार तो रग रग से हमारी हुवे वाक़िफ़।
हम वो हैं कि पाते नहीं उस बुत की कमर भी ॥ ३ ॥

१४—सोचो कि आगे चल कर किस्मत में क्या लिखा है।
देखो घरों में क्या था और आज क्या रहा है ॥ १ ॥

हुशियार रहके पढ़ना इस जाल में न पड़ना।
यूरूप ने ये किया है यूरोप ने वो किया है ॥ २ ॥

१५—आनरो[1]-दौलत में खुद वाइज़ है गर्क़ ।
दूसरों पर नुकतेचीनी की तो क्या ॥ ३ ॥
बज़्मे—साक़ी की कहां वो मस्तियां ।
छुप के अकबर ने अगर पी भी तो क्या ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—आनर-मान, वाइज-धर्मोपदेशक, गर्क-डूबा हुआ, नुकते चीनी-दोषान्वेषण ।

१६—ग़लत फ़हमी बहुत है आलमे—अलफ़ाज़ में अकबर ।
बड़ी मायूसियों के साथ अक्सर काम चलता है ॥ १ ॥
ये रोशन है कि परवाना है उसका आशिक़े—सादिक ।
मगर कहती है खलक़त शमअ से परवाना जलता है ॥ २ ॥

१७—जो हमको बुरा कहते हैं माजूर हैं अकबर ।
हक़ ये है हम भी उन्हें अच्छा नहीं कहते ॥ १ ॥
हम हज़रते—ईसा का अदब करते हैं बेहद ।
लेकिन उन्हें अल्लाह का बेटा नहीं कहते ॥ २ ॥
शब्दार्थ—माजूर-मजबूर, हक-वास्तविकता ।

१८—या इमीटेशन[2] के सदक़े चाय दूध और खांड ले ।
या एजीटेशन[3] के बदले तू चला जा मांडले ॥ १ ॥
या क़नाअत और ताअत में बसर कर ज़िन्दगी ।
रिज़्क की किश्ती को खे पतवार ले और डांड ले ॥ २ ॥

१९—बुते-सितमगर की कुछ न पूछो,
हसीन भी है ज़हीन भी है ।
नहीं है दिल ही पे सिर्फ़ आफ़त,
यहां तो खतरे में दीन भी है ॥१॥

१ Honour. २ Imitation. ३ Agitation.

हमारे झगड़ों की कुछ न पूछो,
तमाम दुनिया है और हम हैं।
कि जेब में ज़र है घर में ज़न है,
ख़िराज पर कुछ ज़मीन भी है ॥२॥

शब्दार्थ—ज़र-रुपया, ज़न-स्त्री।

२०—ज़िन्दगी को ज़रूर है एक शग़्ल।
ख़ैर बिलफ़ेल लीडरी हो सही ॥१॥
अब तो अकबर बसा है गंगा तीर।
न हो स्नान दिल्लगी ही सही ॥२॥

२१—मेरे तरज़े-फ़ुग़ां की बुलहविस तकलीद करते हैं।
ख़िजल होंगे असर को भी अगर उम्मीद करते हैं ॥१॥
जहां के इनक़लाबों के भी क्या क्या रंग होते हैं।
बशर की क्या हक़ीक़त है फ़रिश्ते ढंग होते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—तरजे फ़ुग़ां-रोने चिल्लाने का ढंग, तकलीद-अनुगमन ख़िजल-लज्जित, इनकलाब-परिवर्तन, बशर-मनुष्य।

२२—तआल्ली की नहीं लेते हम ऐसे हैं हम ऐसे हैं।
मगर हम जितने हैं बेज़ार दुनिया से कम ऐसे हैं ॥१॥
मेरी हर वक़्त की अफ़सुर्दगी है बार यारों पर।
मगर मैं क्या करूं इसको ख़ुदा शाहिद ग़म ऐसे हैं ॥२॥

शब्दार्थ—तआल्ली की लेना-बढ़ा कर बात कहना, बेजार-नाराज, अफसुर्दगी-आकुलता, बार-बोझ। शाहिद-गवाह।

२३-यूरूप वाले जो चाहें दिल में भरदें।
जिसके सिर पर चाहें तोहमत धरदें ॥१॥
बचते रहो इनकी तेजियों से अकबर।
तुम क्या हो ख़ुदा के तीन टुकड़े करदें ॥२॥

२४—अगरचे आशिक़ बुतों का हूं मैं,
नज़र खुदा से फिरी नहीं है।
जो आंख रखते हैं जानते हैं,
कि आशिक़ी काफ़िरी नहीं है ॥१॥
जमाले-दिलकश का महूव होना,
नहीं है हरगिज़ ख़िलाफ़े-ताअ़त।
खुदा की कुदरत की क़द्र करना,
सवाब है काफ़िरी नहीं है ॥२॥

शब्दार्थ—जमाले दिलकश-चित्ताकर्षक सौन्दर्य। महूव-लवलीन। ताअ़त-आज्ञा, सवाब-पुण्य।

२५—लुत्फ़ चाहो एक बुते-नौख़ेज़ को राज़ी करो।
नौकरी चाहो किसी अंग्रेज़ को राज़ी करो ॥१॥
लीडरी चाहो लफ्ज़े-क़ौम है महमांनवाज़।
गपनवीसों को और अहले-मेज़ को राज़ी करो ॥२॥

२६—असबाते-खुदा को मन्तिक़ी उठ न सका।
ख़ाके-हैरत से ज़हन ही उठ न सका ॥१॥
अल्लाह रे नज़ाकते—वजूदे—बारी।
साबित होने का बार भी उठ न सका ॥२॥

शब्दार्थ—असबाते खुदा-ईश्वर का अस्तित्व, मन्तिकी-तार्किक, हैरता-आश्चर्य,वजूदे बारी-इश्वर का अस्तित्व, बार-बोझ।

२७—अपनी हस्ती जो हिजाबे-रुखे-जानां न रहे।
वां रहें हम कि जहां फिर कोई अरमां न रहे ॥१॥
सूरते-यार जो सौ परदों में पिन्हां न रहे।
बहस फिर तुझ में ये अय गबरो-मुसल्मां न रहे ॥२॥

२८—ज़माने-हाल में अगले फ़साने अमरे-माज़ी हैं।
जो तलवारें चलाते थे वो अब ठोकर पे राज़ी हैं ॥१॥

शराब उड़ती है पब्लिक में रवा है खून तक़वे का।
मज़ा है अब तो रिन्दों का न मुफ्ती है न क़ाज़ी हैं ॥२॥

२६—हर गाम पै चन्द आंखें निगरां,
हर मोड़ पै एक लैसन्स तलब।
उस पार्क में आख़िर अय अकबर,
मैंने तो टहलना छोड़ दिया ॥१॥
उस हूरे-लक़ा को घर लायें हो,
तुम को मुबारिक अय अक़बर।
लेकिन ये क़यामत की तुम ने,
घर से जो निकलना छोड़ दिया ॥२॥

३०—अल्लाह रे इनक़लाबे-तरज़ो-मज़ाके-मशरिक़।
हाफ़िज के शेर कैसे सब पढ़ रहे हैं रीडर[1] ॥१॥
लैलो का नमज़ रुख़सत स्कूल मिस्टरस[2] है।
सौदाये-क़ैस ग़ायब अब वो बने है लीडर[3] ॥२॥

शब्दार्थ—इनक़लाब-परिवर्तन, सौदाये क़ैस-मजनूं का पागलपन।

३१—वो शरारत से सरे शाम आते हैं।
ये दिखाना है कि ग़ैरों के पयाम आते हैं ॥१॥
बाज़ कालिज में जो कह आते है अक्सर अकबर।
क्या ये गिरती हुई दीवार को थाम आते हैं ॥२॥

३२—क़दम अंग्रेज़ कलकत्ते से दिल्ली में जो धरते हैं।
तिजारत खूब की अब देखें शाही कैसी करते हैं ॥

३३—ताकीदे-इबादत पै अब ये कहते हैं लड़के।
पीरी में भी अकबर की ज़राफ़त नहीं जाती ॥

---

१ Reader. २ School Mistress. ३ Leader.

शब्दार्थ—पीरी-बुढ़ापा। ज़राफ़त-हास्य।

३४—हरीफ़ों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
कि अकबर ज़िक्र करता है खुदा का इस ज़माने में॥

शब्दार्थ—हरीफ़-दुश्मन।

३५—दिल की बाक़ी नहीं अय दोस्त मज़ामीं कैसे।
आप मोती के तलबगार हैं दरया भी तो हो॥

३६—आशिक़ की तबअ् लाखों ही मौजों में है रवां।
अलफ़ाज़ कर न सकेंगे उसका मुहासरा॥

शब्दार्थ—रवां-बहती हुई, मुहासरा-घेरा।

३७—इन बुतों के बाब में इतनी ही मेरी अर्ज़ है।
कुफ़्र है इनकी परस्तिश प्यार करना फ़र्ज़ है॥

३८—कब मैं कहता हूं अलग हो सारा क़िस्सा छोड़ कर।
कर तलब दुनिया मगर साहब का हिस्सा छोड़ कर॥

शब्दार्थ—तलब-याचना।

३९—फुरक़ते-यार में जीने का सहारा क्या था।
खूब थी मौत सिवा मौत के चारा क्या था॥

४०—जहां सुई घड़ी की होती थी वक़्त उसको कहते थे।
गई चोरी तो हम समझे ज़माना इसको कहते हैं॥

४१—गोशये-मसजिद में कारे-शेख़ अब बनता नहीं।
पेट गो तिस्कीन पाजाय मगर तनता नहीं॥

शब्दार्थ—गोशा-कोना, कार-काम, तिस्कीन-तसल्ली।

४२—सनद कैसी जमाल उनमें अगर है होगा खुद ज़ाहिर।
कोई सर्टिफ़िकेट से खूबसूरत हो नहीं सकता॥

शब्दार्थ—जमाल-सौन्दर्य।

४३—बुतों के नाज पर इस अहद में लाज़िम है ख़ामोशी।
बुरा कहते हैं हम उनको तो दस अच्छा भी कहते हैं॥

४४—खुला दीवां मेरा तो शोरे-तहसीं बज्म में उट्ठा।
मगर सब हो गये खामोश जब मतबे का बिल आया॥

शब्दार्थ— शोरे तहसीं-प्रशंसा का शोर, मतबा-प्रेस।

४५—हम ऐसी कुल किताबें काबिले-ज़ब्ती समझते हैं।
कि जिनको पढ़के लड़के बापको ख़ब्ती समझते हैं॥

४६—दाद दे रफ्तार की सुस्ती पै क्या है मौतरिज़।
आबला है पांव में और आबले में ज़ख्म है॥

शब्दार्थ—मौतरिज़-आक्षेप करने वाला।

४७—तुम से उस्तादों में मेरी शाइरी बेकार है।
साथ सारंगी का बुलबुल के लिये दुशवार है॥

४८—ये परचा जिसमें चन्द अशआर हैं इरसाले-ख़िदमत है।
हमारे लख्ते-दिल हैं आप का माले तिजारत है॥

शब्दार्थ—इरसाले ख़िदमत है—सेवा में भेजता हूँ, लख्ते दिल-दिल के टुकड़े।

४९—बने बन्दर से हम इन्सां तरक्की इसको कहते हैं।
तरक्की पर भी नेटिव बदनसीबी इसको कहते हैं॥

५०—दावत भी बहुत खूब है अहबाब की खातिर।
लेकिन जो 'एडीटर' हो तो मज़मून है अच्छा॥

शब्दार्थ—अहबाब-मित्रगण।

५१—मवर्रिख़-और सूफी में यही है फर्क अय अकबर।
कि वो मसरूफे-माज़ी है और इसको हाल आता है॥

शब्दार्थ—मवर्रिख़-इतिहास-लेखक, माज़ी-भूत, हाल-ईश्वर प्रेम में तन्मय हो जाना, इस शब्द का अर्थ वर्तमान भी है।

५२—गुनाहों से न बाज आयगी और बस्ती से भागेगी।
जहन्नुम से सिवा ताऊन से ये कौम डरती है॥

५३—वो कभी मुझको जवाबे-नामा लिखता ही नहीं।
जब गिला करता हूं कह देता है पहुँचा ही नहीं॥

शब्दार्थ—जवाबे नामा पत्र का उत्तर, गिला-शिकायत।

५४—उनके हुस्न अपनी ज़रूरत पै नजर करते हैं।
गो खुशामद है बुरी चीज मगर करते हैं॥

५५—जलवये-रफ़तार-जानां है नमूना हश्र का।
हक बजानिब है जो है जाहिद को धड़का हश्र का॥

५६—किस्मत का नाम लेकर अब भी गिला है जायज़।
लेकिन उसी को बी० ए० एम० ए० जो हो चुका हो॥

५७—ये न पूछो मुझसे ये क्यों है और ऐसा क्यों नहीं।
शेख ये सोचो तुम्हारे पास पैसा क्यों नहीं॥

५८—वो मनाने में भी बनाते हैं।
कहते हैं मान जाओ मनसा राम॥

५९—मैं बहुत अच्छा हूँ जी हां कद्रदानी आपकी।
गैर पर फिर क्यों है इतनी मेहरबानी आपकी॥

६०—हम क्या कहें अहबाब क्या कारे-नुमायां कर गये।
बी० ए० हुवे नौकर हुवे पेन्शन मिली फिर मर गये॥

शब्दार्थ—कारे-नुमाया-उल्लेखनीय कार्य।

६१—काफी अगरचे लेटने को एक पलंग है।
उंगड़ाइयों को अरजे-दुनिया भी तंग है॥

६२—क्योंकर न शेरे-अकबर आये पसन्द सब का।
ये रंग ही नया है कूचा ही दूसरा है॥

परिशिष्ट ।

—:०:—

गान्धीनामा ।

दौरे[१]-गर्दूं[२] में नया हर रोज़ एक हन्गामा[३] है ।
शाहनामा हो चुका अब दौरे-गांधी नामा है ॥

बहुत से मनुष्य असहयोग के सिद्धान्त पर चलने में अपनी असमर्थता दिखाते हुवे कहते हैं:—

जाहो[४] ज़र[५] के रहे इङ्गलिश से हमेशा तालिब[६] ।
अहदे[७] पीरी[८] में बदल सकते हैं क्योंकर क़ालिब[९] ॥
मुश्तहिर[१०] करदं ये 'हमदम'[११] में जनाबे-'जालिब'[१२]
उम्र भर दिल पे रहा इश्क़ मिसों का ग़ालिब ।
आख़िरी वक्त में क्या ख़ाक मुसल्मां होंगे ॥१॥
कूचये[१३]-सरविसे[१४]-इङ्गलिश में रहे हम साकिन ।
जाहो-ज़र ही की तमन्ना में कटे ज़ीस्त के दिन ॥
वाज़े[१५]-गान्धी से बदल सकते हैं क्योंकर बातिन ।

---

१ चक्कर. २ आकाश. ३ झगड़ा ४ फारसी की प्रसिद्ध पुस्तक जिसमें फारस के बादशाहों का वृतान्त है. ५ ऐश्वर्य. ६ धन. ७ इच्छुक. ८ समय. ९ बुढ़ापा. १० शरीर. ११ प्रकाशित. १२ उर्दू का साप्ताहिक पत्र. १३ हमदम सम्पादक.

१४ मौहल्ला. १५ नौकरी. १६ रहने वाले.

उम्र सारी तो कटी इश्के-बुतां में 'मोमिन' ॥
आख़िरी वक़्त में क्या ख़ाक मुसल्मां होंगे ॥२॥

एक महाशय कहते हैं:—

ये दाल लबे गङ्ग कभी गल नहीं सकती।
कल्लू के पटाखे से बला टल नहीं सकती॥

कतिपय सज्जन महात्मा गान्धी के इस उपदेश पर हंसते हैं:-

न साहब को मारो न साहब से भागो।
मचाते रहो गुल पिटो और मांगो॥

कोई कवि कहता है:—

तहमद और धोती बहुत तङ्ग आई थी पतलून से।
लेकिन अब पतलून ढीली है इसी मज़मून से॥

किन्तु सम्भव यह है:—

अंग्रेज़ क़वी[1] भी हैं सरफ़राज़[2] भी हैं।
तदबीरो-इल्मो फ़न में मुमताज़[3] भी हैं॥
बाबू को नचा दिया जो चाबी देकर।
इससे ये खुला कि दिल्लगीबाज़ भी हैं॥

कुछ लोग असहयोग के सिद्धान्त को व्यर्थ समझते हैं:—

चश्म[4]—शाइर में बहुत दिलकश[5] है गो वो भी मगर।
आपकी आंखों के आगे ज़िक्रे—नरगिस[6] क्या करें॥
ज़ोरे—बाज़ू जब नहीं है जब नहीं तेग़ो[7]—तुफ़ङ्ग[8]।
सरनगूं[9] ख़ामे[10] से फिर काग़ज़ पै घिस क्या करें॥

१ बलवान, २ सुविख्यात, ३ ऊंचे दर्जे पर, ४ आंख, ५ चित्ताकर्षक, ६ एक फूल का नाम, ७ तलवार, ८ बन्दूक, ९ नीचे किये हुवे, १० लेखनी